

# हेमफरे के ऐतेराफात

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीएे अपने पाठको के लिये टाइप कराई गई है और इस किताब मे टाइप वगैरा की ग़लतीयो को सही किया गया है।

[Alhassanain.org/hindi](http://Alhassanain.org/hindi)

## फेहरिस्त

पेश लफज़.....	3
हुकूमते बरतानिया की फ़िक्रमन्दी .....	3
लंदन.....	25
बसरा.....	35
लंदन से खत.....	59
मेरी इराक़ की रिपोर्ट.....	72
इस्लाम की नाबूदी का मंसूबा .....	111

## पेश लफ़्ज

यह किताब एक बर्तानवी जासूस मिस्टर हमफ़रे की याद दाशतों का मजमूआ है। यह याद्दाशत जब दूसरी आलमगीर जंग के दौरान जर्मनों के हाथों लगी तो उन्हें ऐ जर्मन रिसाले स्पीगल में इसकी किस्तवार शाय़ा करके बर्तानवी इस्तेअमार को ख़ूब ख़ूब रुस्वा किया। स्पीगल के बाद जब एक फ़्रांसीसी रिसाले ने इन याद्दाशतों को शाय़ा किया और एक लेबनानी दानिश्वर ने इनका मुतालिआ किया तो उन्होंने उनको अवाम के फ़ायदे के लिये अरबी में छापा दिया और अब हम इन्हों याद्दाशतों का उर्दू से हिन्दी तर्जुमा आप तक पहुंचा रहे हैं ताकि आप बर्तानवी सामराज की तरफ़ से इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ होने वाली दो सौ साला पूरानी साज़िश से बाख़बर हो सकें।

यह वही बर्तानवी सामराज है, जिसने अपनी इस्लाम दुश्मनी की तस्कीन के लिये मशरिके वुस्ता में इस्राईल को वुजूद दिया। जिस तरह रुसी सामराज ने खलील में बहाई मस्लक की बुनियाद डाली थी, उसी तरह इस सामराज ने भी बर्रसगीर में कादयानी मज़हब की बुनियाद रखी और सूडान में महदियत का फ़ितना खड़ा किया।

**मुद्दतों हुकूमते बरतानिया अपनी अज़ीम और मुस्तहकम नौ आबादी के बारे में फ़िकमन्दी और उसकी सल्तनत के हुद्द ने इतनी वुसअत**

इख्तियार की कि अब वहाँ सूरज भी गुरुब नहीं होता था लेकिन हिन्दुस्तान चीन और मशिरकी वुस्ता के मुमालिक और दीगर बेशुमार नौ आबादियों के होते हुए भी जज़ीरए बरतानिया बहुत छोटा दिखायी देता था। हुकूमते बरतानिया की सामराजी पालिसी भी हर मुल्क में यकसाँ नौइयत की नहीं है। बाज़ मुमालिक में अनाने हुकूमत जाहिरन वहाँ के लोगों के हाथ में है लेकिन दरपरदा पूरा सामराजी निज़ाम कार फ़रमा है और अब इसमें कोई क़सर बाकी नहीं है कि वह मुमालिक अपनी जाहिरी आज़ादी खोकर बरतानिया की गोद में चले आयें। अब हम पर लाज़िम है कि हम अपने नौ आबादयाती निज़ाम पर नज़रे सानी करें और ख़ास तौर से दो बातों पर लाज़िमी तवज्जोह दें

1. ऐसी तदाबीर इख्तियार करें जो सल्तनते इंग्लिस्तान की नौ आबादियों में उसके अमल और कब्जे को मुस्तहाम करें।

2. ऐसे प्रोग्राम मुरत्तब करें जिनसे उन इलाकों पर हमारा असर रुसूख कायम हो जो अभी हमारे नौ आबादयाती निज़ाम का शिकार नहीं हुए हैं।

इंग्लिस्तान की नौ आबादियाती इलाकों की विज़ारत ने मज़कूरा प्रोग्रामों को रक्वये अमल लाने के लिये इस बात की ज़रूरत महसूस की कि वह नौ आबादियाती या नीम आबादियाती इलाकों की विज़ारत में मुलाज़िमात के शुरु ही से हुस्ने कारक़र्दगी का मुजाहिरा किया। ख़ास तौर पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अहद की जांच पड़ताल के सिलसिले में अच्छी कारक़र्दगी ने मुझे विज़ारते ख़जाना

में एक अच्छे ओहदे पर फ़ाएज़ किया। यह कम्पनी बज़ाहिर तिजारती नौइयत की थी मगर दरहकीकत जासूसी का अड्डा था और उसके क़याम का मक़सद हिन्दुस्तान में उन सूरतों या उन रास्तों की तलाश थी जिनके ज़रीए इस सरज़मीन पर मुकम्मल तौर पर मरतानिया का असरो नुफ़ूज़ क़ायम हो सके और मशरिके वुस्ता पर उसकी गिरफ़्त मज़बूत हकी जा सके।

इन दिनों इंगिस्तान की हुकुमत हिन्दुस्तान से बड़ी मुतमइन और बेफ़िक्र थी क्योंकि क़ौमी, क़बाएली, मज़हबी ओर सक़ाफ़ती इख़्तिलाफ़ात मशरिके वुस्ता के रहने वालों को इस बात की फ़ुरसत ही कहाँ देते थे कि वह इंग्लिस्तान के जाएजे असर व रुसूख के ख़िलाफ कोई शूरिश बरपा कर सकें। यही हाल चीन की सरज़मीन का भी था। बुध और कनफ़यूशस जैसे मुर्दा मज़ाहिब के पैरोकारों की तरफ से भी अंग्रेज़ी को कोई ख़तरा लाहक नहीं था और हिन्दु चीन में कसरत से बाहमी बुनयादी इख़्तिलाफ़ात के पेशे नज़र यह बात बईद अज़ क़यास थी कि वहाँ के रहने वालों को अपनी आज़ादी और इस्तिक़लाल की फ़िक्र हो। यही वह एक मौजू था जो कभी उनके लिये काबिले तवज्जोह नहीं रहा। ताहम यह सोचना भी ग़ैर दानिशमन्दी है कि आईन्दा के पेशे नज़र इन्क़िलाबात भी उन कौमों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं करेंगे। पस यह बात सामने आयी कि ऐसी तदाबीर इख़्तियार की जायें जिनसे उन कौमों में बेदारी की सलाहियत ही मफ़कूद हो जाये। यह तदाबीर तवीलुल मीआद प्रोग्रामों की सूरत में उन सरज़मीनों पर जारी हुऐ तो

तमाम इफ़्तिराक़, जिहालत, बीमारी और गुरबत की बुनियाद पर इस्तेवार थे। हमने उन इलाकों के लोगों पर उन मुसीबतों और बदबख़्तियों को वारिद करते हुए बुध तक की इस ज़र्बुल मसल को अपनाया जिसमें कहा गया है:

“बीमार को उसको अपने हाल पर छोड़ दो और सब्र का दामन हाथ से न जाने दो बिल आख़िर वह दावा को पूरी कड़वाहट के बावजूद पसन्द करने लगेगा।

हमने बावजूद उसके कि अपने दूसरे बीमार यानी सल्तनते उस्मानी से कई करारदादों पर अपने फ़ायदे में दस्तख़त करवा लिये थे ता हम नौ आबादियातदी इलाकों की विज़ारत के माहिरीन का कहना था कि एक सदी के अन्दर ही इस सल्तनत का पल्ला बैठ सकता है। हमने इसी तरह ईरान में उस्मानियों और उसी तरह ईरानियों के ज़ेरे असर सरगर्म अमल रहे और बावजूद उसके कि उन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत के मक़ासिद में नुमायाँ कामयाबियाँ हासिल की और दफ़्तरों के निज़ाम को बिगाड़ कर रिश्तत सतानी आम कर दी, बादशाहों के लिये ऐशो इशरत के सामान फ़राहम किये और इस तरह उन हुकूमतों की बुनियादों को किसी हद तक पहले से ज़्यादा मुतज़लज़ल किया तो हम उस्मानी और ईरानी सल्तनतों की कमज़ोरी को सामने रखते हुए भी ज़ैल में बयान किये जाने वाले बाज़ वुजूहात की बिना पर हम अपने हक़ में कुछ ज़्यादा मुतमइन नहीं थे और वह अहम तरीन वुजूहात यह थे:

1- लोगों में इस्लाम की हकीकी रुह का असरो नुफूज जिसने उन्हें बहादुर, बेबाक और पुरअज़्म बना दिया था और यह कहना बेजा न होगा कि एक आम मुसलमान, मज़हबी बुनियादों पर एक पादरी का हम पल्ला था। यह लोग किसी सूरत भी अपने मज़हब से दस्तबदार नहीं होते थे। मुसलमानों में शिया मज़हब के पैरोकार जिनका तअल्लुक ईरान की सरज़मीन से है, अक़ीदे और ईमान के एतेबार से ज्यादा मुहकम और ज़्यादा खतरनाक वाक़ेअ हुए हैं।

शिया हज़रात ईसाईयों को नाजिस और काफ़िर मुतलक समझते हैं। (यह इल्ज़ाम सरासर बेबुनियाद है और बेएतबार इस्लाम तमाम अहले किताब साहिबान हैं:) उनके नज़दीक एक ईसाई ऐसी मुतअफ़्फन ग़िलाज़त है की हैसियत रखता है जिसे अपने दरमियान से हटाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। एक दफा मैंने एक मुसलमान शिया से पूछा:-

“तुम लोग नसारा को हिकारत की निगाह से क्यों देखते हो हालांकि वह लोग खुदा, रसूल और रोज़े क़यामत पर ईमान रखते हैं।?”

उसने जवाब दिया:

हज़रत मौहम्मद स०अ० साहिब इल्म और साहिबे हिकमत पैग़म्बर थे और वह चाहते थे कि इस अन्दाज़ से काफ़िरों पर दबाव डालें कि वह दीने इस्लाम कुबूल करने पर मजबूर हो जायें। “ सियासी मैदान में भी जब कभी हुकुमतों को किसी फ़र्द या ग़िरोह से खटका होता है तो वह अपने हरीफ़ पर सख्तियाँ करती हैं

और उसे रास्ते से हटने पर मजबूर करती हैं ताकि बिल आखिर वह अपनी मुखालिफ़तों से बाज़ आ जाये और अपना सरे तस्लीम ख़म कर दे। ईसाईयों के नाजिस और नापाक होने से मुराद उनकी ज़ाहिरी नापाकी नहीं बल्कि बातिनी नापाकी है और यह बात सिर्फ़ ईसाईयों तक महदूद नहीं है बल्कि इस में ज़र्द तशती भी शामिल हैं जो क़ौमी एतेबार से ईरानी है, इस्लाम उन्हें भी “नापाक” समझता है।

मैंने कहा।

अच्छा मगर ईसाई तो ख़ुदा, रसूल और आखिरत पर ईमान रखते हैं।

उसने जवाब दिया:

हमारे पास उन्हें काफ़िर और नाजिस गरदान्ने के लिये दो दलीले हैं। पहली दलील तो यह है कि रसूले अकरम स०अ० को नहीं मानते और कहते हैं मोहम्मद स०अ० (नज़्ज़ोबिल्लाह) झूठे हैं। हम भी उनके जवाब में कहते हैं कि तुम लोग नापाक और नाजिस हो और यह तअल्लुक अक़ल की बुनियाद पर हैं क्योंकि जो तुम्हें दुख पहुँचाये तुम भी उसे तकलीफ़ दो।

दूसरे यह कि ईसाई अम्बिया-ए-मुरसलीन अ०स० पर झूठी तोहमतें बांधते हैं जो खुद एक बड़ा गुनाह और उनकी बे-हुरमती है, मसलन कहते हैं

हज़रते ईसा अ०स० (नज़्ज़ो बिल्लाह) शराब पीते थे, इसलिए लानते इलाही में गिरफ़्तार हुए और उन्हें सूली दी गयी।



मुझे इस बात पर बड़ा ताव आया और मैंने कहा:

“ईसाई हरगिज़ यह नहीं कहते। “

“तुम नहीं जानते” किताबे मुक़द्दस में यह तमाम तोहमतें वारिद हैं।

उसके बाद उसने कुछ नहीं कहा और मुझे यकीन था कि वह झूठ बोल रहा है। अगरचे मैंने सुना था कि बाज़ अफ़राद ने पैगम्बरे इस्लाम स०अ० पर झूठ की निसबत दी है लेकिन मैं उससे ज़्यादा बहस नहीं करना चाहता था। मुझे खौफ़ था कि कहीं मेरा भांडा न फूट जाये और लोग मेरी असलियत से वाकिफ़ न हो जायें।

2. मज़हबे इस्लाम तारीखी पसे मन्ज़रों की बुनियाद पर एक हुरियत पसन्द मज़हब है और इस्लाम के सच्चे पैरोकार आसानी के साथ गुलामी कुबूल नहीं करते। उनके पूरे वजूद में गुजश्ता अज़मतों का गुरुर समाया हुआ है यहाँ तक कि अपने इस नातवानी और पुरफुतूर दौर में भी वह उससे दस्तबरदार होने पर तैयार नहीं है। हम इस लात पर क़ादिर नहीं हैं कि तारीखे इस्लाम की मन मानी तफ़सीरे पेश करके उन्हें यह बतायें कि तुम्हारी गुजश्ता अज़मतों की कामयाबी इन हालात पर मुनहसिर थी जो इस ज़माने के तक्राज़ा था मगर अब ज़माना बदल चुका है और नये तक्राज़ों ने उनकी जगह ले ली है और अब गुजश्ता दौर में वापसी ना मुमकिन है।

3. हम ईरानी और उस्मानी हुकूमतों की दूर अन्देशों, होशियारियों और कार्यवाहियों से महफूज नहीं थे और हर आन यह खटका था कि कहीं वह हमारी सामराजी पालिसियों से बाखबर होकर हमारे किये धरे पर पानी न फेर दें। यह दोनों हुकूमतों जैसा कि पहले बयान हो चुका है बहुत कमजोर हो चुकी थीं और उनका असर व रूसूख सिर्फ अपनी सरजमीन की हद तक महदूद था। वह सिर्फ अपने ही इलाकें में हमारे खिलाफ असलाह और पैसा जमा कर सकते थे ता हम उनकी बदगुमानी हमारी आईन्दा कामयाबियों के लिये अदमे इत्मिनान का सबब थी।

4. मुसलमान ओलमा भी हमारी तशवीश की बाएस थे। जामेअहुल अज़हर के मुफ्ती और ईरान व ईराक के शिया मरोज़अ हमारे सामराजी मकासिद की राह में एक अज़ीम रुकावट थे। यह ओलामा जदीद इल्म व तमद्दुन और नये हालात से यकसर बे खबर थे और उनकी तनहा तवज्जोह उस जन्नत के लिये थी जिसका वादा कुरआन ने उन्हें दे रखा था। यह लोग इस कद्र मुतअस्सिब थे के अपने मौक्किफ से एक इंच पीछे हटने को तैयार नहीं थे। बादशाह और ओमारा समेत तमाम अफ़राद उनके आगे छोटे थे। अहले सुन्नत हज़रात शियों की निस्बत अपने ओलामा से इस क़दर खौफ़ज़दा नहीं थे और हम देखते हैं कि उस्मानी सल्तनत में बादशाह और शेखुल इस्लाम के दरमियान हमेशा खुशगवार तअल्लुकात बरकरार रहे थे और ओलामा का ज़ोर सियासी हुक्काम के ज़ोर के हम पल्ला था लेकिन

शीअी मुमालिक में लोग बादशहों से ज्यादा ओलामा का एहताराम करते थे। मज़हबी ओलामा से उनका लगाव एक हकीकी लगाव था लेकिन हुक्काम या सलातीन को वह कुछ ज़्यादा अहमियत नहीं देते थे। बहरहाल सलातीन और ओलामा की क़द्रदानी से मुतअल्लिक शिया और सुन्नी नज़रयात का यह फर्क नौ आलदियाती इलाकों की विज़ारत और अंग्रेजी हुकुमत की शोरिश में कमी का बाएस नहीं थी।

हमने कई बार उन मुमालिक के साथ आपस की पेचीदा दुश्चारियों को दूर करने के सिलसिले में गुप्तगु की लेकिन हमेशा हमारी गुप्तगु ने बदगुमानी की सूरत कारकनों की दरख्वास्तें भी साबिका मुजाकरात की तरह नाकाम रहीं लेकिन फिर हम ना उम्मीद नहीं हुए क्योंकि हम एक मज़बूत और पुरशकीबा क़ल्ब के मालिक हैं।

मुझे याद है कि एक दफ़ा नौ आबादियाती इलाकों के वज़ीर ने लंदन के एक मशहूर पादरी और 25 दीगर मज़हबी सरबराहों के साथ एक इजलास मुनक्किद किया जो पूरे तीन घंटे तक जारी रहा और जब यहाँ भी कोई खातिर ख्वाह नतीजा बरामद न हो सका तो पादरी ने हाज़रीन से मुखातिब होकर कहा:

“आप लोग अपनी हिम्मतें पस्त न करें, सब्र और हौसले से काम लें, ईसाईयत तीन सौ साल की ज़हमतों और दरबदरी के साथ हज़रते ईसा अ0स0 और उनके पारवकारों की शहादत के बाद आलमगीर हुई। मुमकीन है आईन्दा हज़रत ईसा अ0स0 की नज़रे इनायत हम पर हो और हम तीन सौ साल बाद

काफ़िरों को निकालने में कामयाब हों। पस हम पर लाज़िम है कि हम अपने आपको मोहकम ईमान और पायदार सब्र से मुजय्यन करें और उन तमाम वसाएल को बरोए कार लायें जो मुसलमान खिंतों में ईसाइयत की तरवीज का सबब हों। अगर उसमें हमें सदियों का अरसा भी गुज़र जाये तो घबराने की कोई बात नहीं, आबाओ अजदाद अपनी औलाद के लिये बीज बोते हैं। “

एक दफ़ा फिर नौ आबादयाती इलाकों की विज़ारत में रुस फ्रांस और बरतानिया के आला रुत्बा नुमाईन्दों पर मबनी कान्फ़ेन्स का इनइकाद हुआ। कान्फ़ेन्स के शुराका में सियासी वुफ़ूद, मज़हबी शख़िसयतें और दीगर मशहूर हस्तियाँ शामिल थीं। हुस्ने इतेफ़ाक से मैं भी वज़ीर से करीबी तअल्लुकात की बिना पर इस कान्फ़ेन्स में शरीक था। मौजूए गुफ़्तगू इस्लामी मुमालिक में सामराजी निज़ाम की तरवीज और उसमें पेश आने वाली दुश्चारियाँ थी।

शोरका का ग़ौरो फ़िक्र इस बात में था कि हम किस तरह मुस्लिम ताक़तों को दरहम बरहम कर सकते हैं और उनके दरमियान निफ़ाक़ का बीज बो सकते हैं। गुफ़्तगू उनके ईमान के तज़लजुल के सिलसिले में थी। बाज़ लोगों का ख़याल था कि मुसलमानों के इसी तरह राहे रास्ते पर लाया जा सकता है जिस तरह स्पेन कई सदियों के बाद ईसाईयों की आगोश में चला आया था। क्या यह वही मुल्क नहीं था जिसे वहशी मुसलमानों ने फ़तह किया था? कान्फ़ेन्स के नताएज ज़्यादा

वाज़ेह नहीं थे। मैंने उस कान्फ्रेंस में पेश आने वाले तमाम वाकिआत को अपनी किताब “अज़ीम मसीह की सिम्त एक परवाज़” में ब्यान कर दिया है।

हकीकतन मशरिक से मगरिब तक फैलाव रखने वाले अज़ीम और तनावुर दरख्त की जड़ों को काटना इतना आसान काम नहीं। फिर भी हमें हर कीमत पर उन दुश्धारियों का मुकाबला करना है क्योंकि ईसाई मज़हब उसी वक़्त कामयाब हो सकता है जब सारी दुनिया उसके कब्जे में आ जाये। हज़रते ईसा अ०स० ने अपने सच्चे पैरवकारों को इस जहाँगीरी की बशारत दी है। हज़रत मोहम्मद स०अ० की कामयाबी उन इजतिमाज़ी और तारीखी हालात से वाबस्ता थी जो उस दौर का तकाज़ा था। ईरान व रोम से वाबस्ता मशरिकों मगरिब की सल्तनतों का इन्हितात इस्ल बहुत कम अरसे में हज़रत मोहम्मद स०अ० की कामयाबी का सबब बना। मुसलमानों ने उन अज़ीम सल्तनतों को ज़ेर किया मगर अब हालात बिल्कुल मुखतलिफ़ हो चुके हैं और इस्लामी मुमालिक बड़ी तेज़ी से रुबा ज़वाल है और उसके मुकाबले में ईसाई रोज़ बरोज़ तरक्की की राह पर गामज़न हैं। अब वह वक़्त आ गया है कि ईसाई मुसलमानों से अपना बदला चुकायें और अपनी खोयी हुई अज़मत दोबारा हासिल करें। इस वक़्त सबसे बड़ी ईसाई हुकूमत अज़ीम बरतानिया के हाथ में है जो दुनिया के तूलो अर्ज़ में अपना सिक्का जमाये हुए है और अब चाहता है कि इस्लामी मुमलिकतों से नबरुद आजमायी का परचम भी उसी के हाथ में हो।

**सन् 1710 ई० में** इंग्लिस्तान की नौ आबदियाती इलाकों की विज़ारत ने मुझे मिस्र, ईरान, हिजाज़, और उस्मानी ख़िलाफत के मरकज़ इस्तम्बूल (आज का इस्तम्बूल उस वक़्त का कुस्तुनतुनिया था) की जासूसी पर मामूर किया। मुझे उन इलाकों में वह राहें तलाश करनी थीं जिनसे मुसलमानों को दरहम बरहम करके मुस्लिम मुमालिक में सामराजी निज़ाम राएज किया जा सके। मेरे साथ नौ आबदियाती इलाकों की विज़ारत के नौ और बेहतरीन तजुर्बेकार जासूस इस्लामी मुमालिक में इस काम पर मामूर थे और बड़ी तुन्दही से अंग्रेज़ी साम्राजी निज़ाम के तसल्लुत और नौ आबादियाती इलाकों में अपने असर व नुफूज़ के इस्तिहकाम के लिये सरगर्म अमल थे। उन वुफूद को वाफ़र मिक्कदार में सरमाया फ़राहम किया गया था। यह लोग बड़े मुरतब शुदा नक्शे और बिल्कुल नई और ताज़ा इत्तेलाआत से बहरामंद थे। उनको उमरा, वुजरा, हुक्मत के आला ओहदेदारों और ओलामा व रोअसा के नामों की मुकम्मल फ़हरिस्त दी गयी थी। नौ आबदियाती इलाकों के मुआवन वज़ीर ने हमें रवाना करते हुए ख़ुदा हाफिज़ी के वक़्त जो बात कही, वह आज भी मुझे अच्छी तरह याद है। उसने कहा था:

“तुम्हारी कामयाबी हमारे मुल्क के मुस्तक़बिल की आईनादार होगी लिहाज़ा अपनी तमाम कुव्वतों को बरूए कार लाओ ताकि कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमे।”

मैं खुशी खुशी बहरी जहाज़ के ज़रीए इस्तम्बूल के लिए रवाना हुआ। मेरे जिम्मे अब दो अहम काम थे। पहले तुर्की ज़बान पर उबूर हासिल करना जो उन

दिनों वहाँ की कौमी ज़बान थी मैंने लन्दन में तुर्की ज़बान के चन्द अल्फाज़ सीख लिये थे। उसके बाद मुझे अरबी ज़बान, कुरआन, उसकी तफ़सीर और फिर फ़ारसी सीखना थी। यहाँ पर यह बात भी काबिले ज़िक्र है कि किसी ज़बान का सीखना और अदबी क़वाएद, फ़साहत और महारत के एतेबार से इस पर पूरी दस्तर्स रखना दो मुखतलिफ़ चीज़ें हैं। मुझे यह ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी कि मैं उन ज़बानों में ऐसी महारत हासिल करूँ कि मुझमें और वहाँ के लोगों में ज़बान के एतेबार से कोई फर्क महसूस न हो। किसी ज़बान को एक दो साल में सिखाया जा सकता है लेकिन उस पर उबूर हासिल करने के लिये बरसों का वक़्त दरकरार होता है मैं इस बात पर मजबूर था कि उन ग़ैर मुल्की ज़बानों को इस तरह सीखूँ कि उसके क़वाएद व रुमूज़ का कोई नुक़तए फ़र्द गुजाशत न हो और कोई मेरे तुर्क ईरानी या अरब होने पर शक न करे।

उन तमाम मुशकिलात के बावजूद मैं अपनी कामयाबी के सिलसिले में हरासाँ नहीं था क्योंकि मैं मुसलमानों की तबीयत से वाकिफ़ था और जानता था कि उनकी कुशादा क़लबी, हुस्ने ज़न और मेहमान नवाज़ तबीयत जो उन्हें कुरआन व सुन्नत से विरसे में मिली थी उन्हें ईसाईयों की तरह बदगुमानी और बदबीनी पर महमूल नहीं करगी और फिर दूसरी तरफ से अस्मानी हुकूमत ग़ैर मुल्की जासूसों की कार्रवाईयों मालूम करने को कोई ज़रीआ नहीं था और ऐसा कोई इदारा

मौजूद नहीं था जो हुकूमत को उन ना मतलूब अनासिर से बा खबर कर सके। फ़रमान रवा और उसके मुसाहिबीन पूरे तौर पर कमज़ोर हो चुके थे।

कई महीने के थका देने वाले सफ़र के बाद आखिरकार हम उस्मानी दारुल ख़िलाफ़ा पहुँचे। जहाज़ से उतरने से क़ब्ल मैंने अपने लिये “मोहम्मद” का नाम तजवीज़ किया और जब मैं शहर की जामे मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वहाँ लोगों के इजतिमाआत नज़्मों ज़ब्त और सफ़ाई सुथरायी देखकर महजूज़ हुआ और दिल ही दिल में कहा: आख़िर क्यों हम उन पाक दिल अफ़राद के आज़ार के दरपे हैं? और क्यों उनसे उनकी आसाईश छीनने पर तुले हुए हैं? क्या हज़रते ईसा अ०स० ने उस किस्म के नाशाइस्ता उमूर की तजवीज़ दी है? लेकिन फ़ौरन लेकिन फ़ौरन ही मैंने उन शैतानी वसवसों और बातिल ख़यालात को ज़हन से झटक कर इस्तिग़फ़ार किया और मुझे ख़याल आया कि मैं तो बरतानिया उज़मा की नौ आबादियती विज़ारत का मुलाजिम हूँ और मुझे अपने फ़राएज़ दियानतदारी से अंजाम देने चाहिये और मुँह से लगाये हुए सागर को आख़िरी घूंट तक पी जाती है।

शहर में दाख़िला के फ़ौरन बाद ही मेरी मुलाक़ात अहले तसन्नून के एक बूढे पेशवा से हुई। उसका नाम अहमद आफ़िन्दी थी। वह एक बरजस्ता, साहिबे फ़ज़ल और नेक तीनत आलिम था। मैंने अपने पादरियों में ऐसी बुजुर्गवार हस्ती नहीं देखी थी। वह दिन रात इबादत में मशगूल रहता था और बुजुर्गों और बरतरी में



हज़रत मोहम्मद स०अ० की मानिन्द था। वह रसूले खुदा स०अ० को इन्सानियत को मज़हरे कामिल समझता था और आप स०अ० की सुन्नत को अपनी जिन्दगी का मुतमह नज़र बनाये हुए था। हज़रत मोहम्मद स०अ० का नाम आते ही उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती थी। शेख के साथ मुलाक़ात में मेरी एक खुश नसीबी यह भी थी कि उसने मुझसे एक दफ़ा ही हस्बो नस्ब और खानदान के बारे में सवाल नहीं किया ओर हमेशा मुझे मोहम्मद आफ़िन्दी के नाम से पुकारता था। जो कुछ मैं उससे पूछता था बड़े विकार और शराफ़त से जवाब देता था ओर मुझे बहुत चाहता था। खास तौर से जब उसे मालूम हुआ कि मैं ग़रीबुल वतन हूँ और उस अस्मानी सल्तनत के लिये काम कर रहा हूँ जो पैगम्बर स०अ० की जानशीन है तो मुझ पर और भी मेहरबान हो गया (यह वह झूठ था जो मैंने इस्तम्बूल में अपने क़याम की तौज़ह ब्यान करते हुए शेख के सामने बोला था)।

उसके अलावा मैंने शेख से यह भी कहा था कि मैं बिना माँ बाप का एक नौजवान हूँ। मेरे कोई बहन भाई नहीं है। मैं बिल्कुल अकेला हूँ लेकिन मेरे वालिदेन ने विरसे में मेरे लिये बहुत कुछ छोड़ा है। मैंने इरादा किया है कि कुरआन और तुरकी और अरबी ज़बान सीखने के लिये इस्लाम के मरकज़ यानी इस्तम्बूल का सफ़र इख़्तियार करूँ और फिर दीनी और मज़नवी सरमाया के हुसूल के बाद माद्री कारोबार में पैसा लगाऊँ। शेख अहमद ने मुझे मुबारकबाद दी और चंद बातें कहीं जिन्हें मैं अपनी नोट बुक से यहाँ नक़ल कर रहा हूँ:-

ऐ नौजवान मुझ पर तुम्हारी पिजीराई और एहतेराम कई वुजूहात की बिना पर लाज़िम है और वह वुजूहात यह है:

1- तुम एक मुसलमान हो और मुसलमान आपस में भाई भाई हैं। (हदीस)

2- तुम हमारे शहर में मेहमान हो और पैगम्बरे इस्लाम स०अ० का इरशाद है: मेहमान को मोहतरम जानो। (हदीस)

3- तुम तालिबे इल्म हो और इस्लाम ने तालिबे इल्म के एहतेराम का हुक्म दिया है। तुम हलाल रोज़ी कमाना चाहते हो और उस पर “कारोबार करने वाला अल्लाह का दोस्त है” की हदीस सादिक आती है। (हदीस)

इस पहली मुलाकात ही में शेख ने अपने आला खसाएल की बुनियाद पर मुझे अपना गिरवीदा बना लिया था। मैंने अपने दिल में कहा: काश ईसाइयत भी उन आशकार हकीकतों से आशना होती लेकिन दूसरी तरफ में यह देख रहा था कि इस्लामी शरीअत इतनी बलन्द निगाही और बलन्द मक़ामी के बावजूद रूबा ज़वाल हो रही थी और इस्लामी हुक्मरानों की नालायकी, जूलम ओ सितम, बद अतवारी और फिर ओलामाए दीन का तअस्सुब और दुनिया के हालात से उनकी बेखबरी उन्हें यह दिन दिखा रही थी। मैंने शेख से कहा:

“अगर आप की इजाज़त हो तो मैं आपसे अरबी ज़बान और कुरआन मजीद सीखने का ख़्वाहिशमंद हों।”

शेख ने मेरी हिम्मत अफ़जाई की और मेरी ख्वाहिश का इस्तिक्बाल कि और सूरए हम्द को मेरे लसिये पहला सबक कतरार दिया और बड़ी गरमजोशी के साथ आयतों की तफ़सीरों तावील पेश की। मेरे लिये बहुत से अरबी अल्फ़ाज़ के तलफ़फ़ुज़ दुश्वार थे और कभी यह दुश्वारी बहुत बढ जाती थी। वह बार बार मुझसे कहता था कि मैं अरबी इबारत इस तरह तुम्हें नहीं सिखाऊँगा तुम्हें हर मुशिकल लफ़ज़ को दस मर्तबा तकरार करना होगा ताकि अल्फ़ाज़ तुम्हारे ज़हन नशीन हो जायें

शेख ने मुझे हुरुफ़ को एक दूसरे से मिलाने के तरीके सिखाये। मुझे कुरआन की तजवीद ओ तफ़सीर सीखने में दो साल का अरसा लगा। दर्श शुरु करने से पहले वह खुद भी वुजू करता था और मुझे भी वुजू करने का हुक्म देता था। फिर हम क़िब्ला रुख बैठ जाते थे और दर्स का आगाज़ होता था। यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि इस्लाम में आज़ा को एक खास तरतीब से धोने का नाम वुजू है। इब्तिदा में मुंह धोया जाता है। फिर पहले सीधे हाथ को उंगलियों और बाद में उल्टे हाथ से कुहनी तक धोया जाता है। उसके बाद सर, गर्दन और कानों के पिछले हिस्से का मसह किया जाता है और आखिर में पैर धोये जाते हैं।

वुजू करते वक़्त कुल्ली करना और नाक में पाना चढ़ाना मुस्तहिब है। आदाबे वुजू से पहले एक खुशक लकड़ी से दांतों का मिसवाक जो वहाँ की रस्म थी मेरे लिये बहुत नागवार थी और मैं समझता था कि यह खुशक लकड़ी दांतों और मसूढ़ों

के लिये इन्तिहाई नुकसान देह है। कभी कभी मेरे मसूदों से खून भी जारी हो जाता था मगर मैं ऐसा करने पर मजबूर था क्योंकि वुजू से पहले मिसवाक करना सुन्नते मुवकिकदा है और उसके लिये बहुत सवाब और फज़ीलत बयान की गयी है।

मैं इस्तमबूल में क़याम के दौरान रातों को एक मस्जिद में सो रहा था और उसके इवज़ वहाँ खादिम को जिस का नाम मरवान आफिन्दी था कुछ रक़म दे देता था। वह एक बंद इख़लाक, गुस्सेवर शख्स था और अपने आपको पैगम्बरे इस्लाम स०अ० के एक सहाबी का हमनाम समझता था और उस नाम पर बड़ा मुफ़तख़र था। एक बार उसने मुझसे कहा:

“अगर कभी खुदा ने तुम्हें साहिबे औलाद किया तो”

तुम अपने बेटे का नाम मरवान रखना क्योंकि इसका शुमार इस्लाम के अज़ीम मुजाहिदों में होता है।

रात का खाना मैं खादिम के साथ खाता था और जुमे का तमाम दिन जो मुसलमानों की ईद और छुट्टी का दिन था खादिम के साथ गुज़ारता था। हफ़्ते के बाकी दिन एक बढई की शागिर्द में काम करता था और वहाँ से मुझे एक हकीर सी रक़म मिल जाया करती थी। आधा दिन काम करता था क्योंकि शाम को मुझे शेख़ दर्स लेना होता था इसलिए मेरी दिहाड़ी भी आधी होती थी उस पर बढई का नाम ख़ालिद था। दोपहर को खाने के वक़्त वह हमेशा फ़ातिहे इस्लाम “ख़ालिद

बिन वलीद” का तज़कीरा करता था और उसके फ़ज़ाएल व मनाकिब बयान करता था और उसे उन असहाबे पैग़म्बर स०अ० में गरदान्ता था जिनके हाथों मुखालिफ़ीने इस्लाम ने हज़ीमत उठायी। हर चंद हज़रते उमर से उसके तअल्लुकात कुछ ज़्यादा इस्तिवार न थे और उसे यह खटका था कि अगर खिलाफत उन्हें मिली तो वह उसे मअज़ूल कर देंगे और ऐसा ही हुआ।

लेकिन ख़ालिद बढई अच्छे किरदार का हामिल न था ता हम अपने दीगर शागिर्दों से कुछ ज़्यादा ही मुझ पर मेहरबान था जिसका सबब मुझे अब तक मालूम न हो सका। शायद इसलिए कि बग़ैर लैतो लअल के उसके हर काम को बजा लाता था और उससे मज़हबी उमूर या अपने काम के बारे में किसी किस्स का कोई बहस व मुबाहिसा नहीं करता था। कई बार दुकान ख़ाली होने पर मैंने महसूस किया कि वह मुझे अच्छी नज़रों से नहीं देख रहा है। शेख अहमद ने मुझसे कहा था कि इक़लाम (बद फेअली) इस्लाम में बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन फिर भी ख़ालिद मुझसे इस फेल के इरतिकाब पर मुसिर था।

वह दीन ओर दिनयात का ज़्यादा पाबन्द नहीं था और दरहकीकत सही अक़ीदे और सही ईमान का आदमी नहीं था। वह सिर्फ़ जुमे के जुमा नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाया करता था और बाक़ी दिनों में उसका नमाज़ पढ़ना मुझ पर साबित नहीं था बहरहाल मैंने उसकी इस बेशर्माना तरगीब को रद किया लेकिन कुछ दिनों बाद उसने यह फेल शफ़ीअ अपनी दुकान के एक और ख़बरु कारीगर के

साथ अंजाम दिया जो अभी नौ मुस्लिम था और यहूदियत से इस्लाम में वारिद हुआ था।

मैं रोज़ाना बढई की दुकान में दोपहर का खाना खाकर जोहर की नमाज़ के लिये मस्जिद में चला जाया करता था और वहाँ नमाज़े अस तक रहता था। अस की नमाज़ से फ़ारिग होकर शेख अहमद के घर जाया करता था और वह दो घंटे कुरआन ख़वानी में सर्फ़ करता था। कुरआन के अलावा अरबी और तुरकी ज़बान भी सीखता था और हर जुमे को हफ़्ते भर की दिहाड़ी ज़कात के उनवान से शेख अहमद के हवाले करता था और यह ज़कात दर हकीकत शेख से मेरी इदारत और लगाव का एक नज़राना और शेख के दर्स कुरआन का एक हकीर सा हक्कुल जहमा था। कुरआन की तालीम में शेख ता तर्ज दर्स बे नज़ीर नौइयत का था। उसके अलावा वह मुझे इस्लामी एहकाम का मुबादियात अरबी और तुर्की ज़बान में सिखाता था।

जब शेख को मालूम हुआ कि मैं ग़ैर शादी शुदा हूँ तो उसने मुझे शादी का मशवरा दिया और अपनी बेटी मेरे लिये मुन्तख़ब की लेकिन मैंने बड़े मोअद्दिबाना से माज़िरत चाही और अपने आप को शादी के नाकाबिल जाहिर किया। मैं यह मौक़िफ़ इख़्तियार करने पर मजबूर था क्योंकि शेख अहमद अपनी बात पर मुसिर था और हमारे तअल्लुकात बिगडने में कोई कसर बाकी नहीं रह गयी थी। शेख

अहमद शादी को पैगम्बरे इस्लाम स०अ० की सुन्नत समझता था और इस हदीस का हवाला देता था:

“जो कोई मेरी सुन्नत से एतेराज करे वह मुझसे नहीं है।” (हदीस)

लेहाजा इस बहाने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था। मेरे इस मसलिहत आमेज झूठ ने शेख को मुतमइन कर दिया और फिर उसने शादी से मुतअल्लिक कोई गुफ्तुगू नहीं की और हमारी दोस्ती फिर पहली मनज़िल पर आ गयी।

दो साल इंसतबूल में रहने ओर कुरआन समैत अरबी और तुरकी ज़बानों को सीखने के बाद मैंने शेख से वापस वतन जाने की इजाज़त चाही लेकिन शेख मुझे इजाज़त नहीं देता था और कहता था तुम इतनी जल्दी क्यों वापस जाना चाहते हो? यह एक बड़ा शहर है। यहाँ तुम्हारी ज़रूरत की हर चीज़ मौजूद है। हरबनाये मशयीयते इलाही इस्तम्बूल में दीन और दुनिया दोनों दस्तयाब हैं। शेख ने अपनी गुफ्तुगू के दौरान कहा:

“अब जबकि तुम अकेले हो और तुम्हारे माँ बाप ओर बहन भाई कोई नहीं तो फिर तुम इस्तम्बूल के अपना मसकन क्यों नहीं बनाते?”

बहरहाल शेख को मेरे वहाँ रहने पर बड़ा इस्सर था। उसे मुझसे उनुस हो गया था। मुझे भी इससे बहुत दिलचस्पी थी मगर अपने वतन इंग्लिस्तान के बारे में मुझ पर जो जिम्मेदारियाँ आएद थीं वह मेरे लिये सबसे ज़्यादा अहम थीं और

मुझे लंदन जाने पर मजबूर कर रही थी। मेरे लिये ज़रूरी था कि मैं लंदन जाकर नौ आबादियाती इलाकों की विज़ारत को अपनी दो साला का गुजारी की मुकम्मल रिपोर्ट करूँ और वहाँ से नये एहकामात हासिल करूँ।

इस्तम्बूल में दो साल की रिहाइश के दौरान मुझे उस्मानी हुकूमत के हालात पर हर माह एक रिपोर्ट लंदन भेजनी पड़ती थी। मैं ने अपनी एक रिपोर्ट में बदकिरदार बढ़ई के उस वाकिए को भी लिखा था जो मेरे साथ पेश आया था। नौ आबादियों इलाकों की विज़ारत ने जवाब में मुझे यह हुकम दिया अगर तुम्हारे साथ बढ़ई का यह फेल हमारे लिये मनज़िले मकसूद तक पहुंचने की राह को आसान बनाता है तो इस काम में कोई मज़ाइका नहीं। जब मैंने यह इबारत पढ़ी तो मेरा सर चकराने लगा और मैंने सोचा हमारे अफ़सरान को शर्म नहीं आती कि वह हुकूमत की मसलिहतों की खातिर मुझे इस बेशर्मी की तरगीब देते हैं। बहरहाल मेरे पास कोई चारण कार नहीं था और होठों से लगाये हुए उस कड़वे जाम को आखिरी घूंट तक पी जाता था हम मैंने इस हुकम का कोई नोटिस नहीं लिया और लंदन के आला ओहदेदारों की इस बेमहरी की किसी से शिकायत की। मुझे अलविदाअ कहते हुए शेख की आँखों में आँसू भर आये और उसने मुझे इल अल्फ़ाज़ के साथ रुख्सत किया।



“खुदा हाफ़िज़ बेटे मुझे मालूम है कि अब जब तुम लौट कर आओगे तो मुझे इस दुनिया में नहीं पाओगे। मुझे न भुलाना। इन्शाअल्लाह रोज़े महशर पैग़म्बरे इस्लाम स०अ० के हज़ूर हम ऐ दूसरे से मिलेंगे।”

दर हक़ीकत शेख़ अहमद की जुदाई से मैं एक अर्से तक आजुर्दा खातिर रहा और उसके ग़म में मेरी आँखें आँसू बहाती रहीं लेकिन क्या किया जा सकता था? फ़राएज़ की अंजाम जाते एहसासात से मावरा है।

**मेरे नौ दीगर** साथियों को भी लंदन वापस बुलाया गया था मगर बद किस्मती से उनमें से सिर्फ़ पांच वापस लौटे थे। बाक़ी मांदा चार अफ़राद में से एक मुसलमान हो चुका था और वहीं मिस्र मे रिहाइश पिज़ीर था। इस वाकिए को नौ आबादियाती इलाकों की विज़ारत के सेकेट्री ने मुझे बताया लेकिन वह इस बात से खुश था कि मज़कूरा शख़्स ने उनके किसी राज़ को अफ़शा नहीं किया था। दूसरा जासूस रुसी निज़ाद था और रुस पहुँचकर उसने वहीं बूदो बाश इख़्तियार कर ली थी। सेकेट्री उसके बारे में बड़ा फ़िक्रमंद था। उसे खटका था कि कहीं यह रुसी निज़ाद जासूस जो अब अपनी सरज़मीन में पहुँच चुका है हमारे राज़ फाश न कर दे। तीसरा शख़्स बग़दाद के करीब वाकिअ “अम्मारा” में हैज़े से हलाक हो गया था और चौथे के बारे में कोई इत्तेला मौसूलस न हो सकी थी। नौ आबादियाती इलाकों की विज़ारत को उसके बारे में उस वक़्त तक इत्तेला रही जब तक वह यमन के पायए तख़्त “सनआ” में रहते हुए सलसल एक साल तक अपनी रिपोटें

मजकूरा विज़ारत को भेजता रहा लेकिन उसके बाद जब कोई इतेला मौसूल न हुई तो हर चंद कोशिश के बावजूद नौ आबादयिती इलाकों की विज़ारत को उसका कोई निशान न मिल सका। हुकूमत एक ज़बरदस्त जासूसों की गुमशुदगी के नताएज से अच्छी तरह बाखबर थी यह हर मुलाज़िम के काम की अहमियत को बड़ी बीरकी के साथ जांचती थी और दर हकीकत इस तरह के मुलाज़िम में किसी मिलाज़िम की गुमशुदगी इस सामराजी हुकूमत के लिये तशवीशनाक थी जो इस्लामी मुमालिक में उज़्र मचाने ज़ेर करने की इस्कीमों की तैयारी में मसरुफ हो।

हमारा तअल्लुक एक ऐसी क़ौम से है जो आबादी के एतेबार से कम होने के साथ बड़ी अहम जिम्मेदारियों का बोझ सहार रही हैं और तज़ुबेकार अफ़राद की कमी यकीनन हमारे लिये शदीद नुक़सान का बाअिस थी।

सिक्रेट्री ने मेरी आखिरी रिपोर्ट के अहम हिस्सों के मुतलिए के बाद मुझे इस कान्फ्रेंस में शिरकत की हिदायत की जिसमें लंदन बुलाये गये पांच जासूसों की रिपोर्ट सुनी जाने वाली थीं। इस कान्फ्रेंस में जो वज़ीर खारजा की सदारत में हो रही थी नौ आबादियाती विज़ारत के आला ओहदेदार शिरकत कर रहे थे। मेरे तमाम साथियों ने अपने रिपोर्ट के अहम हिस्सों को पढकर सुनाया। वज़ीरे खारजा, नौआबादियाती इलाकों की विज़ारत के सिक्रेट्री और बाज़ हाज़िरीन ने मेरी रिपोर्ट को बड़ा सराहा। ताहाम में इस मुहासिबे में तीसरे नम्बर पर था। दो और जासूसों

ने मुझसे बेहतर कारकर्दगी का मुजाहिरा किया था जिनमें पहला नम्बर जी बिलकोड G BELCLOUD और दूसरा हेनरी फैन्स HENRY FANSE का था।

यह बात काबिले जिक्र है कि मैंने तुर्की अरबी तजवीदे कुरआन और इस्लामी शरीअत में सबसे ज्यादा दस्तर्स हासिल की थी लेकिन उस्मानी हुकूमत के जवाल के सिलसिले में मेरी रिपोर्ट ज्यादा कामयाब नहीं थी। जब सेक्रेट्री ने कान्फ्रेन्स के इखित्ताम पर मेरी इस कमजोरी का जिक्र किया तो मैं ने कहा:

इन दो सालों में मेरे लिये दो जबानो का सीखना, तफसीरे कुरआन और इस्लामी शरीअत से आशनाई ज्यादा अहमियत की शामिल थी और दूसरे उमूर पर तवज्जोह देने के लिये मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं था। अगर आप भरोसा करें तो मैं यह कसर आईन्दा सफ़र में पूरी कर दूंगा।

सिक्रेट्री ने कहा: इसमें कोई शक नहीं कि तुम अपने काम में कामयाब रहो हो लेकिन हम चाहते हैं कि तुम इस राह में दूसरों से बाजी ले जाओ।

उसने यह भी कहा: आईन्दा के लिये तुम्हें दो अहम बातों का ख्याल रखना है:

1. मुसलमानों की उन कमजोरियों की निशानदेही करो जो हमें उन तक पहुंचने और उनके मुखतलिफ गिरोहों के दरमियान फूट डालने में कामयाबी फ़राहम करे क्योंकि दुश्मन पर हमारी कामयाबी का राज उन मसाएल की शिनाख्त पर मुनहसिर है।

2. उनकी कमज़ोरियाँ जान लेने के बाद तुम्हारा दूसरा काम उनमें फूट डालना है। इस काम में पूरी कुव्वत सर्फ़ करने के बाद तुम्हें यह इल्मियान हो जाना चाहिये कि तुम्हारा शुमार सर्फ़ अक्वल के अंग्रेज़ जासूसों में होने लगा है और तुम एजाज़ी निशान के हक़दार हो गये हो। छः माह लन्दन में क्रयाम के बाद मैंने अपने चाचा की लड़की “मेरी शिवी” से शादी कर ली जो मुझसे एक साल बड़ी थी। उस वक़्त मैं 22 और वह 23 साल की थी। “मेरी” एक दरमियाना दर्जे की ज़हीन लड़की थी लेकिन बड़े दिलकश ख़दो ख़ाल की मालिक थी। मेरी बीवी का मुझसे मुतावाज़िन सुलूक था और मैंने अपने ज़िन्दगी के बेहतरीन दिन उसके साथ गुजारे। शादी के पहले साल ही मेरी बीवी उम्मीद से थी और मैं नये मेहमान का बेचैनी से मुनतज़िर था लेकिन ऐसे मौक़े पर मुझे विज़ारत ख़ाने से यह हतमी हुक्म मौसूल हुआ कि मैं वक़्त ज़ाया किये बग़ैर फ़ौरन ईराक़ पहुँचूँ जो बरसहा बरस से उस्मानी ख़िलाफ़त के इस्तेहसाल था।

हम मियाँ बीवी जो अपने पहले बच्चे के इन्तिज़ार में थे इस हुक्मनामे से बहुत आजुरदा हुए लेकिन मुल्क व मिल्लत से मोहब्बत एहसास जाह तलबी और अपने साथियों से रकाबत, तमाम घरेलू आसाएशात ज़ज्बात और बच्चे की मोहब्बत पर छा गयी और मैंने बग़ैर तरद्दुद के इस नई मामूरियत के कुबूल कर लिया हालांकि मेरी बीवी बार बार यह ज़ोर देती रही कि मैं अपनी रवानगी को बच्चे की पैदाइश तक मुलतवी रखूँ। जब मैं उससे रुख़सत हो रहा था तो वह और मैं बोटहाशा से

रहे थे। उस पर मुझ से ज़्यादा रिक्कत तारी थी और वह कह रही थी मुझे भूल न जाना, खत ज़रूर लिखते रहना, मैं भी अपने बच्चे के सुनहरे मुस्तकबिल के बारे में तुम्हें लिखती रहूँगी। उसकी बातों ने मेरा दिल पसीज दिया और मुझ उस मंज़िल तक पहुँचाया कि मैं अपने सफ़र को कुछ अरसे तक मुलतवी कर दूँ लेकिन फिर मैंने अपने आप पर काबू पाया और उससे रुखसत होकर नये एहकामात हासिल करने के लिये विज़ारत खाना रवाना हो गया। समन्दरों में छह माह के तवील सफ़र के बाद आखिरकार मैं बसरा पहुँचा। इस शहर में रहने वाले ज़्यादा तर वहीं अतराफ़ के क़बाएल थे जिनमें ईरानी और अरब अक़वाम के दो अहम बाजू शिया और सुन्नी एक साथ ज़िन्दगी बसर करते थे। बसरे में ईसाईयों की तादाद बहुत कम थी। अपनी ज़िन्दगी में यह पहला मौक़ा था। कि मैं अहले तशय्योअ और ईरानियों से मिल रहा था। यहाँ यह बात ना मुनासिब नहीं होगी अगर मैं अहले तशीअ और अहले तसन्नून के अक़ाएद के बारे में मुख़्तसर कुछ कहता चलूँ। शिया हज़रात, हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 के दामाद और चचाज़ाद भाई अली बिन तालिब (अ0स0) के मुहिब हैं और उनको हज़रते मोहम्मद स0अ0 का बरहक़ जानशीन समझते हैं। उनका ईमान है कि हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 ने नस्से सरीह के जरीए हज़रत अली अ0स0 को अपना जानशीन मुन्तख़ब फ़रमाया था और आपके ग्यारह फरज़न्द यके बाद दीगरे इमाम और रसूल खुदा स0अ0 के बरहक़ जानशीन हैं।

मेरी सोज के मुताबिक हज़रत अली अ०स० और आपके दो फ़रजन्द इमामे हसन अ०स० और इमाम हुसैन अ०स० की खिलाफ़त के बारे में शिया हज़रात मुकम्मल तौर पर हक़ बजानिब हैं क्योंकि अपने मुआमलात की बुनियाद पर बाज़ शवाहिद व असनाद मेरे इस दावे पर दलालत करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि हज़रते अली अ०स० ही वह हस्ती थे जो मुमताज़ सिफ़ात के हामिल थे और सही तौर पर फ़ौज और इस्लामी हुकूमत की सरबराही के अहले थे। इमाम हसन अ०स० और इमाम हुसैन अ०स० की इमामत के बारे में हज़रत मोहम्मद स०अ० की बहुत सी हदीसें दस्तायाब हैं और अहले सुन्नत को भी उनसे इन्कार नहीं हैं और दोनों फ़रीक उस पर मुतहिद हैं (हज़रत अलीअ०स० जनाबे हुसैनअ० और दीगर अइम्माअ० की इमामत के बारे में कसरत से अहादीस लक़ल हुई है। मुलाहिजा फ़राइये: किताबे तौहीद अज़ शेख सुदूक), अलबता मुझे बाकी नौ अफ़राद की जानशीनी तरद्दुद है जो हुसैन अ०स० बिन अली अ०स० की औलाद हैं और शिया हज़रात उन्हें इमामे बरहक मानते हैं (इस अंग्रेज़ जासूस का शुबह बेबुनियाद है इस कि औलादे इमाम हुसैनअ० की इमारत और हज़रतअ० की ग़ैबत के बारे में बहुत सी अहादीस मौजूद हैं। मुलाहिजा फ़रमाइये: किताबे तौहीद अज़ शेख सुदूक। मुन्तहीयुल आमाल अज़ शेख अब्बास कुम्मी वग़ैरा)

यह कैसे मुमकिन है कि पैगम्बर स०अ० उन अफ़राद की इमामत के ख़बर दें जो अभी पैदा ही न हुए हों? अगर मोहम्मद स०अ० अल्लाह के बरहक पैगम्बर

हों तो ग़ैब की ख़बर दे सकते हैं जैसा कि हज़रते ईसा अ०स० ने आईन्दा की ख़बरें दी हैं लिकिन हज़रत मोहम्मद स०अ० की नबूव्वत ईसाईयों के नज़दीक मुसल्लम नहीं है। (एक अंग्रेज़ जासूस से इस तरह के नज़रियात ख़िलाफ़ तवक्क़े नहीं हैं खास तौर पर जब उसे मुसलमानों की सरकूबी के लिये भेजा गया हो)

मुसलमानों का कहना है कि कुरआन पैग़म्बर स०अ० की नबूव्वत पर भरपूर दलील है लेकिन मैंने जितना भी कुरआन पढ़ा मुझे ऐसी कोई दलील नहीं मिली। (यह क्योकर हो सकता है कि एक क़ारी कुरान की नज़र इस आयत पर न गयी हो जिसमें हज़रत ईसाअ० की रिसालत पर सरीहन चार आयतें मौजूद हैं। सूरा आले इमरान आयत 144, सूरा अहजाब आयत 40, सूरा मोहम्मद आयत 3, सूरा फ़तह आयत 29)

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन एक बलन्द पाया किताब है और इस उसका मक़ाम तोरतै और इंजील से बढकर है। क़दीम दास्तानें, इस्लामी अहकाम व आदाब, तालीमात और दीगर बातों ने इस किताब को ज़्यादा मुमताज बना दिया है लेकिन क्या सिर्फ़ यह खुसूसी फ़ौकियत मोहम्मद स०अ० की सच्चाई पर दलील बन सकती है? मैं हैरान हूँ कि एक सेहरा नशीन जिसे लिखना और पढना भी न आता हो किस तरह एक ऐसी अरफ़़ व आला किताबे इन्सानियत के हवाले कर सकता है। यह काम तो कोई पढ़ा लिखा और साहिबे इस्तिअ़दाद आदमी भा अपनी पूरी होशमन्दी के बावजूद अंजाम नहीं दे सकता। फिर किस तरह एक सहराई अरब

बगैर तालीम के ऐसी किताब लिख सकता है? और जैसा कि मैं पहले भी अर्ज कर चुका हूँ: “क्या यह किताब की नबूवत पर दलील हो सकती है?”

मैंने इस बारे में हकीकत से आगाही के लिये बहुत मुतालिआ क्या है। लंदन में जब मैंने एक पादरी के सामने इस मौजू को पेश किया तो वह भी कोई काबिले इत्मिनान जवाब न दे सका। तुर्की में भी मैंने शेख अहमद से कई दफा इस मौजू पर बातचीत की मगर वहाँ भी मुझे इत्मिनान नहीं हुआ। यह बात काबिले जिक्र है कि मैं लन्दन के पादरी के मुकाबिल, शेख अहमद से इतनी गुफ्तगू नहीं कर सकता था इसलिए कि मुझे खतरा था कि कहीमं मेरा पोल न खुल जाये या फिर कम अज कम पैगम्बरे इस्लाम स0अ0 के बारे में इसे मेरी नियत पर शक न हो जाये। बहरहाल मैं हजरते मोहम्मद स0अ0 की कद्रो मनजिलत की अजमत और बुजुर्गी का काएल हूँ। बेशक आपका शुमार उन बा फ़जीलत अफ़राद में होता है जिनकी कोशिशें तरबियते बशर के लिये नाकाबिले इन्कार हैं और तारीख इस बात पर शाहिद है लेकिन फिर भी मुझे उनकी रिसालत में शक है। ता हम अगर उन्हें पैगम्बरे तसलीम न भी किया जाये तो भी उनकी बुजुर्गी उन अफ़राद से बढ़कर है जिन्हें हम नवाबिग समझते हैं। मोहम्मद स0अ0 तारीख के होशमन्द तरीन अफ़राद से ज़्यादा होशमन्द थे।

अहले सुन्नत कहते हैं: हजरत अबू बकर, उमर और उस्मान सलीम आरा की बुनियाद पर हजरत अली अ0स0 से ज़्यादा अम्मे खिलाफत के हकदार थे। इस



तरह उन्होंने खुलाफा इकदाम किया। इस तरह के इख्तिलाफात अक्सर अदयान बिलखुसूस ईसाईयत में पाये जाते हैं लेकिन शिया सुन्नी इख्तिलाफा का नाकाबिले फ़हम पहलू उसका इस्तिफ़रार या मुसलसल जारी रहना है जो हज़रत अली अ०स० और हज़रत उमर के गुजरने के सदियों बाद भी अब तक, इसी जोर ओ शोर से बाकी है। अगर मुसलमान हकीकतन अक़ल से काम लेते तो गुज़ारी तारीख़ और भूले ज़माने के बजाये आज के बारे में सोचते। एक दफ़ा मैंने शिया सुन्नी इख्तिलाफात के मौजू को अपनी नौ आबादियाती इलाकों की विज़ारत के सामने पेश किया और उनसे कहा:

“ मुसलमान अगर ज़िन्दगी के सही मफ़हूम को समझते हैं तो उन इख्तिलाफात को छोड़ बैठते और वहदत् व इत्तेहाद की बात करते।”

अचानक सदरे जलसा ने मेरी बात काटते हुए कहा:

“तुम्हारा काम मुसलमानों के दरमियान इख्तिलाफ़ की आग भड़काना है न यह कि तुम उन्हें इत्तेहाद और यक जहती की दावत दो।”

ईराक़ जाने स पहले सिक्रेट्री ने अपनी एक नशिस्त में मुझ से कहा:

हमफ़रे। तुम जानते हो कि जंग और झगड़े इन्सान के लिये एक फ़ितरी अम्र हैं और जब से ख़ुदा ने आदम अ०स० को ख़ल्क किया और उसके सुल्ब से हाबील और काबील पैदा हुए इख्तिलाफ़ ने सर उठाया और अब उसको हज़रते ईसा

अ0स0 की बाज़गशत तक उसी तरह जारी रहना है। हम इन्सान इख्तिलाफ़ात को पांच बातों पर तकसीम कर सकते हैंः

- 1- नस्ली इख्तिलाफ़ात
- 2- क़बाएली इख्तिलाफ़ात
- 3- अरज़ी इख्तिलाफ़ात
- 4- क़ौमी इख्तिलाफ़ात
- 5- मज़हबी इख्तिलाफ़ात

इस सफ़र में तुम्हारा अहम तरीन फ़रीज़ा मुसलमानों के दरमियान इख्तिलाफ़ात के मुखतलिफ़ पहलुवों को समझना और उन्हें हवा देने के तरीकों को सीखना है। इस सिलसिले में जितनी भी मालूमात मुहय्या हो सके तुम्हें इसकी इत्तेला लन्दन के हुक्काम तक पहुंचाना है। अगर तुम इस्लामी मुमालिक के बाज़ हिस्सों में सुन्नी शिया फ़साद बरपा करो तो गोया तुमने हुक्ूमत बरतानिया की अज़ीम ख़िदमत की है।

जब तक हम अपने नौ आबादियती इलाकों में निफ़ाक, तफ़रिका, शोरिश और इख्तिलाफ़ात की आग को हवा नहीं देंगे पुरसुकून और मुरफ़हुल हाल नहीं हो सकते। हम उस वक़्त उस्मानी सल्तनत को शिकस्त नहीं दे सकते जब तक उसके क़लमरु में शहर शहर, गली गली फ़ितना व फ़साद बरपा न कर दें। इतने बड़े

इलाके पर अंग्रेजों की मुख्तसर सी क़ौम सिवाये इस हथकण्डे के और किस तरह छा सकती है।

पस ऐ हमफ़रे तुम्हें चाहिये कि तुम पहले अपनी पूरी कुव्वत सर्फ़ करके हंगामे, शोर शराबे, फूट और इख्तिलाफ़ात की कोई राह निकालों और फिर वहाँ से अपने काम का आगाज़ करो। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि इस वक़्त उस्मानी और ईरानी हुकूमतें कमज़ोर हो चुकी हैं। तुम्हारा फर्ज़ है कि तुम लोगों के उनके हुकमरानों के खिलाफ़ भड़काव। तारीख़ी हक़ाएक की बुनियाद पर हमेशा इन्किलाबात, हुकमरानों के ख़लिफ़ अवाम की शोरिश से वुजूद में आये हैं। जब कभी किसी इलाके के अवाम में फूट और इन्तिशार पड़ जाये तो इस्तिअमार की रहा बड़ी आसानी से हमवार हो सकती है।

**बसरा** पहुँच कर मैं एक मस्जिद में दाखिल हुआ। मस्जिद के पेश इमाम अहले सुन्नत के मशहूर आलिम शेख उम्र ताई थे। मैंने उन्हें देखकर बड़े अदब से सलाम किया लेकिन शेख इब्तिदाई लमहे से ही मुझ पर मज़नून हुआ और मेरे हस्ब नस्ब और गुजश्ता जिन्दगी के बारे में मुझसे सवालात करने लगा। मेरा खयाल है कि मेरे चेहरे और लहजे ने उसे शक में डाल दिया था लेकिन मैं ने बड़ी तरकीब से अपने आप को उसकी गिरफ़्त से बचा लिया और शेख के जवाब में कहा:

मैं तुर्की में वाकिअ “आगदीर” का रहने वाला हूँ और मुझे कुसतुनतुनिया के शेख अहमद की शागिर्दी का शरफ़ हासिल है मैं ने वहाँ खालिद बढई के पास भी काम किया है।

मुख्तसर यह कि तुर्की में जो कुछ मैंने सीखा था वह सब उससे बयाह किया। मैंने देखा कि शेख हाज़िरी में से किसी को आँख के ज़रीए इशारा कर रहा है। मालूम होता था कि वह जानना चाहता है कि मुझे तुर्की आती भी नहीं। उस शख्स ने आँखों से हामी भरी। मैं दिल में बहुत खुश हुआ कि मैंने किसी हद तक शेख की दिल जीत लिया है लेकिन कुछ ही देर बाद मुझे अपनी ग़लत फहमी का एहसास हुआ और मैंने महसूस किया शेख का शुबहा अभी अपनी जगह बाकी है और वह मुझे उस्मानियों का जासूस समझता है। मशहूर था कि शेख, बसरा के गवर्नर का सख्त मुखालिफ़ था जिसे उस्मानियों ने मोअय्यन किया था।

बहरहाल मेरे पास उसके सिवा कोई चारए कार नहीं था कि मैं शेख उमर की मस्जिद से इलाके के एक ग़रीब नवाज़ मुसाफिर ख़ाने में मुनतक़िल हो जाऊँ। मैंने वहाँ एक कमरा किराया पर लिया। मुसाफ़िरख़ाने का मालिक एक अहमक आदमी था जो हर सुबह सवेरे मुसाफ़िरों को परेशान किया करता था। अज़ान के बाद अंधेरे मुँह मेरा दरवाज़ा ज़ोर ज़ोर से पीटता था और मुझे नमाज़ के लिये जगाता था

और फिर सूरज निकलने तक कुरआन पढ़ने पर मजबूर करता था। जब मैं उससे कहता कि कुरआन पढ़ना वाजिब नहीं है फिर क्यों तुम्हें इस अम्र में इतना

इसरार है? तो वह कहता कि तुलूए आफ़ताब से कबल की नींद फुक्र और बदबख़्ती लाती है और इस तरह उस मुसाफ़िर ख़ाने के तमाम मुसाफ़िर बदबख़्ती का शिकार हो जायेंगे। मुझे इसकी बात माननी पड़ी क्योंकि वह मुझे वहाँ से निलक जाने की धमकी देता था। हर रोज़ सुबह मैं नमाज़ के लिये जाने की धमकी देता था। हर रोज़ सुबह मैं नामाज़ के लिये उठता था और फिर एक घंटा या उससे भी ज़्यादा वक़्त तक कुरआन की तिलावत करता था।

मेरी मुश्किल यही ख़तम नहीं हुई। एक दिन मुसाफ़िर ख़ाने के मालिक मुरशद आफ़िन्दी ने आकर कहा: जब से तुमने इस मुसाफ़िर ख़ाने में रिहाइश इख़्तियार की है मुसीबतों ने मेरा घर देख लिया है और उसकी वजह तुम और तुम्हारी लायी हुई नहूसत है इसलिए कि तुमने अभी तक शादी नहीं की है और किसी को अपना शरीके हयात नहीं बनाया है। तुम्हें या शादी करनी होगी या फिर यहाँ से जाना होगा।

मैंने कहा: आफ़िन्दी। मैं शादी के लिये सरमाया कहाँ से लाऊँ? इस दफ़ा मैंने अपने आपको शादी के नाक़ाबिल ज़ाहिर करने से एहतेराज़ किया क्योंकि मैं जानता था कि मुरशद आफ़िन्दी टोह लगाये बग़ैर मेरी बात पर यकीन करने वाला आदमी नहीं था।

मुरशद आफ़िन्दी ने जवाब दिया: ओ नाम के ज़ईफ़ुल एतेकाद मुसलमान। क्या तुमने कुरआन का मुतालेआ नहीं किया जहाँ वह फ़रमाता है:

“वह लोग जो फ़ुक्र में मुब्तिला हैं खुदावन्दे आलम उन्हें अपनी बुजूर्गी से मालामाल कर देगा”

मैं हैरान था कि इस नासमझ इन्सान से किसी तरह पीछा छुड़ाऊँ। आखिरकार मैंने उसेसे कहा: आप का इरशाद बजा है रक़म के बग़ैर कैसे शादी कर सकता हूँ? क्या आप ज़रूरी अखराजात के लिये मुझे कुछ रक़म कर्ज़ दे सकते हैं। इस्लाम में महर अदा किया बग़ैर कोई औरत किसी के अक्द में नहीं आ सकती।

आफ़िन्दी कुछ देर सोज में पड़ गया और फिर कर्ज़ हसना की बात करने के बजाये अचानक उसने सुर बुलन्द किया और ऊँची आवाज़ में चीखी: मुझे कुछ नहीं मालूम या तुम्हे शादी करनी होगी या फिर रजब की पहली तारीख तक कमरा छोड़ना होगा।

इस दिन जमादिउस्सानी की पांचवीं तारीख थी और सिर्फ़ 25 दिन मेरे पास थे।

इस्लामी महीनों के नामों के बारे में भी यहाँ कुछ तज़क़िरा न मुनासिब न होगा:

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| 1- मोहर्रम       | 2- सफ़र         |
| 3- रबीउल अक्वल   | 4- रबीउस्सानी   |
| 5- जमादिउल अक्वल | 6- जमादिउस्सानी |
| 7- रजब           | 8- शाबान        |

9- रमज़ान

10- शव्वाल

11- ज़िकाद

12- ज़िलहिज्जा

हर महीने चांद के आगाज़ से शुरु होता है और 30 दिन से ऊपर नहीं जाता लेकिन कभी कभी चांद 29 दिन का भी होता है।

मुख्तसर यह कि मुसाफ़िर खाना के मालिक की सख्तगीरी के सबब मुझे वह जगह छोड़ना पड़ी। मैंने यहाँ भी एक तरखान की दुकान पर इस शर्त के साथ नौकरी कर ली वह मुझे रहने और खाने की सहूलत फ़राहम करेगा और उसके इवज़ मज़दूरी कम देगा। मैं रजब से पहले ही नई जगह मुनतक़िल हो गया और तरखान की दुकान पर पहुँचा। तरखान अब्दुररज़ि निहायत शरीफ़ और मोहतरम शख्स था और मुझसे अपने बेटों जैसा सुलूक करता था।

अब्दुररिज़ा ईरानी अल अस्ल शिया था और खुरासान का रहने वाला था मैंने मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए उससे फ़ारसी सीखना शुरु की। दोपहर के वक़्त उसके पास बसरे में मुक़ीम ईरानी जमा होते थे जो सब के सब शिया थे। वहाँ बैठकर इधर उधर की गुफ़्तगू होती थी। कभी सियासत और मज़ीशत उनवान कलाम होता और कभी उस्मानी हुकूमत को बुरा भला कहा जाता। खास तौर पर सल्तनते वक़्त और इस्तम्बूल में मुकरर होने वाला ख़लीफ़ए मुसलिमीन उनकी तनक़ीद का नीशाना होता लेकिन जूँ ही कोई अजनबी ग्राहक दुकान में आता वह सब के सब खामोश हो जाते और ज़ाती दिलचस्पी के मुतअल्लिक़ ग़ैर अहम बातें हो लगती।

मुझे मालूम नहीं मैं क्योंकि उनके लिये काबिले एतेमाद था और वह मेरे सामने हर किस्म की गुफ्तगू को जाएज़ समझते थे। यह बात मुझे बाद में मालूम हुई कि उन्होंने मुझे आजर बाईजान का रहने वाला ख्याल किया था क्योंकि मैं तुर्की में बातचीत करता था और आजर बाईजानियों की तरह मेरा चेहरा सुर्ख व सफेद था।

इन दिनों जब मैं तुरखान का काम करता था मेरी मुलाकात एक ऐसे शख्स से हुई जो वहाँ आता जाता रहता था और तुर्की, फ़ारसी और अरबी ज़बानों में गुफ्तगू करता था। वह दीनी तालिबे इल्मों का लिबास पहनता था। उसका नाम मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब था। वह एक ऊँचा उड़ने वाला, एक जाह तलाब और निहायत गुस्सीला इन्सान था। उसे उस्मानी हुकूमत से सख्त नफ़रत थी और वह हमेशा उसकी बुराई करता था लेकिन हुकूमते ईरान से उसको कोई सरोकार नहीं था। तुरखान अब्दुल रिज़ा से उसकी दोस्ती वजह मुशतरिक यह थी वह दोनों ही उस्मानी खलीफ़ा को अपना सख्त तरीन दुश्मन समझते थे लेकिन मेरे इल्म में यह बात न आ सकी कि उसने अब्दुर रिज़ा तुरखान से किस तरह दोस्ती बढ़ाई थी जबकि यह सुन्नी और वह शिया था। मुझे यह भी नहीं मालूम हो सका उसने कि उसने फ़ारसी कहाँ से सीखी थी? अलबत्ता बसरे में शिया सुन्नी मुसलमान एक साथ ज़िन्दगी बसर करते थे और एक दूसरे के साथ उनके रवाबित भी दोस्ताना थे



और वहाँ औ फ़ारसी और अरबी दोनों ज़बानों बोली जाती थीं ताहम तुरकी समझने वालों की तादाद भी वहाँ कुछ कम न थी।

मोहम्मद अब्दुल वहाब एक आज़ाद आदमी था। उसका ज़हन शिया सुन्नी तासियात से बिल्कुल पाक था हालांकि वहाँ के बेशतर सुन्नी हज़रत शियों के खिलाफ़ थे और बाज़ सुन्नी मुफ़्ती शियों की तकफ़ीर भी करते थे। शेख मोहम्मद के नज़दीक हनफ़ी, शाफ़िअी, हम्बली और मालिकी मकातीब फ़िक्र में से किसी मकतबे फ़िक्री की कोई ख़ास अहमियत नहीं थी। वह कहता था कि खुदा ने जो कुछ कुरआन में कह दिया है बस वही हमारे लिये काफी है।

इन चार मकातीब फ़िक्र की दास्तान भी कुछ यूँ है कि हज़रते पैगम्बरे स०अ० की वफ़ात से सौ साल बाद आलमे इस्लाम में बलन्द पाए ओलामा का जूहर अमल में आया जिनमे चार अफ़राद अबू हनीफ़ अहमद बिन हम्बल, मालिक बिन अनस और मोहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई अहले सुन्नत की पेशवाई के मक़ाम तक पहुँचे। अब्बासी खोलफ़ा का ज़माना था और इन अब्बासी खोलफ़ा ने मुसलमानों पर दबाव डाल रखा था कि वह मज़क़ूर चार अफ़राद के अलावा किसी की तक़लीद न करें अगरचे कोई कुरआन व सुन्नत में उनसे बढकर दस्तारिस क्योँ न रखता हो। अब्बासी खोलफ़ा ने उनके अलावा किसी मुतज़िज़र और आला पाया आलिम को उनके मुक़ाबिल में उभरने नहीं दिया और इस तरह दरहकीक़त उन्होंने इल्म के दरवाज़े को बन्द कर दिया और यह बात अहले सुन्नत वल जमाअत के

फिक्री जमूद का बाइस बनी। इसके बरअक्स शिया हज़रात ने अहले सुन्नत की इस पाबन्दी और जमूदी कैफ़ियत से फ़ायदा उठाते हुए अपने अक्रायद व नज़रियात को वसीअ पैमाने पर मुन्तशिर करना शुरू किया और दूसरी सदी हिजरी के मुक़ाबिल में दस फ़ीसद थी उनकी तादाद में मुसलसल इज़ाफ़ा होने लगा और वह अहले सुन्नत के हम पाया हो गये और यह एक फ़ितरी अम्र था क्योंकि शिया हज़रात के पास इज्तेहाद का दरवाज़ा खुला हुआ था और यह बात मुसलमानों की ताज़गीये फ़िक्र, इस्लामी फ़िक्रहा की पेशरफ़्त और नई रौशनी में कुरआन व सुन्नत के फ़हम का बाइस बनी और उसने इस्लाम को नये ज़मानो के तक्राज़ों से हमआहंग किया। इज्तेहाद ही वह बड़ा वसीला था जो फ़िक्री जमूद से नबर्दआज़मा रहा और उसके ज़रिये इस्लाम ने जिला पाई और फ़िक्रों में इंकेलाब रुनुमा हुआ। इस्लाम को चार मकातीबे फ़िक्र में मुक़य्यिद करना, मुसलमानों के लिये जुस्तजू और तलाश के रास्तों को बंद करना और नई बात से उनकी समाअत को रोकना और वक़्त के तक्राज़ों से उन्हें बेतवज्जो रखना दरअसल वह पोशीदा असलाह था जिसने मुसलमानो की पोशरफ़्त रोक दी। ज़ाहिर है कि जब दुश्मन के हाथ में नया असलाह हो और आप अपने पुराने जंगजदा असलेह से इसका मुक़ाबिला करेंगे तो यकीनन जल्द या बा देर आपको हज़ीमत उठाना पड़ेगी मैं पेशीनगोई से काम लेते हुए यह कहूँगा कि अहले सुन्नत के साहिबाने अक़ल अफ़राद बहुत जल्द ही मुसलमानों पर इज्तेहाद का दरवाज़ा खोल देंगे और यह काम मेरे अंदाजे के

मुताबिक अकली सदी तक रुबा अमल आयेगी और सो साल बाद मुसलमानों में इज्तेहाद के हामी शियों की अक्सरियत होगी और अहले तसन्नून अकलियत में रह जायेंगे।

अब मैं शेख मोहम्मद अब्दुल वहाब के बारे में अर्ज करूँ कि यह शख्स कुरआन व हदीस का अच्छा मुतालिआ रखता था और अपने उफ़कार की हिमायत में बुजुर्गाने इस्लाम के अक़वाल व आरा को बतौर सनद पेश करता था, लेकिन कभी कभी इसकी फ़िक्र मशाहिरे ओलमा के ख़िलाफ़ होती थी। वह बात पर कहता:

पैगम्बरे खुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने सिर्फ़ किताब व सुन्नत को नाकाबिले तग्युर उसूल बना कर हमारे लिये पेश किया और कभी यह नहीं कहा कि सहाब-ए-कराम और अइम्मा-ए-दीन के फ़रमूदात अटल और वहीये मुन्ज़िल हैं। पस हम पर वाजिब है कि हम सिर्फ़ किताब व सुन्नत की पैरवी करें। ओलामा, अइम्मा अरबा हत्ता कि सहाबा की राय ख्वाह कुछ भी क्यों न हो, हमें उनके इतिफ़ाक़ व इख़्तिलाफ़ पर अपने दीन को उस्तवार नहीं करना चाहिये।

एक दिन उसकी ईरान से आने वाले एक आलिम से खाने के दस्तरख्वान पर झड़प हो गयी। उस आलिम का नाम शेख जवाद कुम्मी था और उसे अब्दुल रिजा तर खाने ने अपने पास मेहमान बुलाया था। शेख जवाद कुम्मी के मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब से उसूली इख़्तिलाफ़ात थे और उनकी गुफ़्तगू ने जल्द ही तलख़ी और तरशीर का रंग इख़्तियार कर लिया।

मुझे उनके दरमियान होने वाली तमाम गुफ्तगू तो याद नहीं अलबत्ता जो जो हिस्से मुझे याद हैं, मैं उनको यहाँ पेश करना चाहता हूँ।

शेख कुम्मी ने इन जुमलों से अपने गुफ्तगु का आगाज़ किया और मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब से कहा:

“अगर तुम एक आज़ाद ख्याल इंसान हो और अपने दावे के मुताबक़ इस्लाम का काफ़ी मुतालिआ कर चुके हो तो फिर क्या वजह है कि तुम हज़रत अलीअ०स० को वह फ़ज़ीलत नहीं देते जो शिया देते हैं?”

मोहम्मद ने जवाब दिया इस लिये कि हज़रत उमर और दीगर अफ़राद की तरह उनकी बातें भी मेरे लिये हुज्जत नहीं है। सिर्फ़ किताब व सुन्नत को मानता हूँ।

कुम्मी: अच्छा अगर तुम सुन्नत के आमिल हो तो क्या पैग़म्बरे अकरमस० ने यह नहीं कहा था: “मैं शहरे इल्म हूँ और अली उसका दरवाज़ा है” (अना मदीनतुल इल्म व अलीयुन बाबोहा) और क्या यह कह कर पैग़म्बरस० ने अलीअ० और सहाबा दरमियान फ़र्क़ कायम नहीं किया?

मोहम्मद: अगर ऐसा ही है तो फिर पैग़म्बरस० को यह कहना चाहिये था कि: “मैं तुम्हारे दरमियान दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ एक किताब और एक अलीअ० बिन अबीतालिबअ०”।

कुम्मी: बेशक यह बात भी पैग़म्बरस० ने अपने मक़ाम पर कही है कि: मैंने तुम्हारे दरमियान किताब और अहलेबैतअ० को छोड़ा है।” (इन्नी तारेकुम

फ्रीकोमुस सकलैन केताबल्लाहे व इतरती व अहलाबैती) बेशक अलीअ० अहलेबैतअ० के सरबआवरदा अफ़राद में से है।

मोहम्मद ने इस हदीस को झुठलाया लेकिन शेख कुम्मी ने उसूले काफ़ी के असनाद की बुनियाद पर पैग़म्बरस० से इस हदीस को साबित किया और मोहम्मद को खामोश होना पड़ा। अब उसके पास कोई जवाब नहीं था। अचानक उसने शेख पर एतराज ठोंका: पैग़म्बरस० ने हमारे लिये सिर्फ़ किताब और अपने अहलेबैतअ० को बाकी रखा है तो फिर सुन्नत कहां गयी?

कुम्मी ने जवाब दिया: सुन्नत उसी किताब की तफ़सीर व तशरीह का नाम है, और इसके अलावा कुछ भी नहीं। पैग़म्बरे खुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह की किताब और मेरे अहलेबैतअ० यानि किताबे खुदा इस तशरीह व तफ़सीर के साथ जो सुन्नत कहलाती है और उसके बाद सुन्नत की तकरार की ज़रूरत बाकी नहीं रहती।

मोहम्मद ने कहा: अगर आप के दावे के मुताबिक़ इतरत या अहलेबैतअ० ही कलामे इलाही की तफ़सीर हैं तो फिर क्यों मतने हदीस में इसका इजाफ़ा हुआ है?

कुम्मी ने जवाब दिया: “जनाबे रिसालतमाब (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम)” ने अपनी ग़ैबी इल्म की बुनियाद पर किताबे इलाही को अस्ले साबित और इतरत मुफ़स्सिर व शारेअ किताब बना कर उम्मत के हवाले किया।

हैरानी के साथ साथ मुझे उनकी गुफ्तगु से बड़ा मज़ा रहा था। मैंने देखा कि मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब उस जईफुल उम्र शेख जवाद कुम्मी कि आगे एक ऐसी चिड़िया की मानिन्द फड़फड़ा रहा था जैसे क़फ़स में बन्द कर दिया गया हो और उसके परवाज़ की राह मसदूद हो गयी हो।

मोहम्मद अब्दुल वहाब से मेल जोल और मुलाकातों के एक सिलसिले के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि बर्तानवी हुकूमत के मक़ासिद को अमली जामा पहनाने के लिये यह शख्स बहुत मुनासिब दिखाई देता है। इसकी ऊँचा उड़ने की खुवाहिश, जाह तलबी, गुरुर, ओलमा व मशाएखे इस्लाम से उसकी दुश्मनी, इस हद तक खुदसरी कि खोलफ़ा-ए-राशेदीन भी इसकी तंकीद का निशाना बनें और हकीकत के सरासर ख़िलाफ़ कुरआन व हदीस से इस्तेफ़ादा उसकी कमज़ोरियाँ थीं जिससे बड़ी आसानी से फ़ायदा उठाया जा सकता था।

मैंने सोचा कहां यह मगरूर नौजवान और कहां इस्तनबोल का वह तुर्क बूढ़ा आदमी (अहमद आफ़न्दी) जिसके उफ़कार व किरदार गोया हज़ार साल पहले के अफ़राद की तस्वीरकशी करते थे। उसने अपने अन्दर ज़रा भी तब्दीली पैदा नहीं की थीं हनफ़ी मज़हब से तअल्लुक रखने लाला वह बूढ़ा शख्स अबूहनीफ़ा का नाम ज़बान पर लाने से पहले उठ कर वजू करता था या मसलन सहीह बुखारी बिल्कुल बचर और बेहूदा है।

बहर सूरत मैंने मोहम्मद से बहुत गहरे मरासिम कायम कर लिये और हमारी दोस्ती में नाकाबिले इस्तेहकाम पैदा हो गाय। मैं बार बार उसके कानों में यह रस घोलता था कि खुदा तुम्हें हज़रतअ० और हज़रत उमर से कहीं ज़्यादा साहिबे इस्तेदाद बनाया है और तुम्हें बड़ी फ़ज़ीलत और बुजूर्गी बख़्शी है। अगर तुम जनाबे रिसालतमाबस० के ज़माने में होते तो यकीनन उनकी जानशीन का शरफ़ तुम्हें मिलता। मैं हमेशा पुरउम्मीद लहजे में उससे कहता:

“मैं चाहता हूँ कि इस्लाम में जिस इन्केलाब को रुनुमा होना है तुम्हारे ही मुबारक हाथों से अंजाम पज़ीर हो इसलिये कि सिर्फ़ तुम ही वह शख़्सियत हो जो इस्लाम को ज़वाल से बचा सकते हो और इस सिलसिले में रुब की उम्मीदें तुम से वाबस्ता हैं।”

मैंने मोहम्मद के साथ तय किया कि हम दोनों बैठ कर ओलमा, मुफ़स्सेरीन, पेशवायाने दीन व मज़हब और सहाब-ए-कराम से हट कर नये उफ़कार की बुनियाद पर कुरआन मजीद पर गुफ़्तगू करें। हम कुरआन पढ़ते और आयत के बारे में इज़हारे ख़्याल करते। मेरा लाएहा अमल यह था कि मैं किसी तरह उसे अंग्रेज़ नौआबादियती इलाकों की वज़रात के दाम में फंसा दूँ।

मैंने आहिस्ता आहिस्ता इस ऊँची उड़ान वाले खुदपरस्त इंसान को अपनी गुफ़्तगू की लपेट में लेना शुरू किया यहां तक कि उसने हकीकत से कुछ ज़्यादा ही आज़ाद ख़्याल बनने की कोशिश की।

एक दिन मैंने उससे पूछा: “क्या जेहाद वाजिब है?” उसने कहा: क्यों नहीं।  
खुदा वन्दे आलम फ़रमाता है “काफ़िरो से जंग करो।”

मैंने कहा: खुदा वन्दे आलम फ़रमाता है: काफ़िरो और मुनाफ़िकों दोनों से  
जंग करो और अगर काफ़िरो और मुनाफ़िकों से जंग वाजिब है तो फिर पैगम्बर  
(सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने मुनाफ़िकों से क्यों जंग नहीं की?”

मोहम्मद ने जवाब दिया: “जेहाद सिर्फ़ मैदाने जंग ही में नहीं होता। पैगम्बर  
खुदास० ने अपनी रफ़्तार व गुफ़्तार ज़रिये मुनाफ़िकों से जंग की है।”

मैंने कहा: “फिर इस सूरत में कुफ़फ़ार के साथ जंग भी रफ़्तार व गुफ़्तार के  
साथ वाजिब है।”

उसने जवाब दिया: नहीं, इसलिये कि पैगम्बरस० ने जंग के मैदान में उनके  
साथ जेहाद किया है।”

मैंने कहा: “कुफ़फ़ार के साथ रसूले खुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि  
वसल्लम) की जंग अपने दिफ़ाअ के लिये थी क्योंकि वह उनकी जान के दुश्मन  
थे।”

मोहम्मद ने इस्बात में अपना सर हिलाया और मैंने महसूस किया कि मैं  
अपने काम में कामयाब हो गया हूँ।

एक और दिन मैंने उससे कहा: “क्या औरतों के साथ मुतअ जाएज़ है?”

उसने कहा: “हरगिज़ नहीं।”



मैंने कहा: “फिर क्यों कुरआन ने इसे जाएज़ करार देते हुए कहा है: और जब तुम उनसे मुताअ करो तो उनका मेहर अदा करो।” (सूर-ए-निसा आयत 24)

उस ने कहा: हाँ, आयत तो अपनी जगह ठीक है मगर हज़रत उमर ने इसे यह कहकर हराम करार दिया कि: मुताअ पैग़म्बरस० के ज़माने में हलाल था, मैं इसे हराम करार देता हूँ और अब जो इसका मुताअ होगा मैं उसे सज़ा दूँगा।

मैंने कहा: बड़ी अजीब बात है। तुम तो हज़रत उमर की पैरवी करते हो और फिर आपको उससे ज़्यादा साहिबे अक़ल भी कहते हो। हज़रत उमर को क्या हक़ पहुँचता है कि वह हलाले मोहम्मदस० को हराम करे। तुमने कुरान को भुला कर हज़रत उमर की राय को तस्लीम कर लिया?

मोहम्मद ने चुप साध ली और खामोशी उसकी रिज़ामन्दी की दलील थी। इस मौज़ू पर उसके ख्यालात दुरुस्त करके मैंने उसके जिन्सी ग़रीज़ा को उभारना शुरू किया। वह एक ग़ैर मुताहिल शख्स था। मैंने उससे पूछा: “क्या तुम मुताअ के जरिये अपनी जिन्दगी को पुरमसरत बनाना चाहते हो?”

मोहम्मद ने रिज़ा व रग़बत की अलामात से अपना सर झुका लिया।

मैं अपने फ़राएज़ के इन्तेहाई अहम मोड़ पर पहुँच चुका था। मैंने उससे वादा किया कि मैं बहरहाल तुम्हारे लिये इसका इन्तेज़ाम करूँगा। मुझे सिर्फ़ इस बात का खदशा था कि कहीं मोहम्मद बसरा के उन सुन्नियों से खौफ़ज़दा न हो जाये जो इस बात के मुखालिफ़ थे। मैंने उसे इत्मिनान दिलाया कि हमारा प्रोग्राम

बिल्कुल मखफ़ी रहेगा यहां तक की औरत को भी तुम्हारा नाम नहीं बताया जायेगा। इस गुफ़्तगू के फ़ौरन बाद मैं इस बदकिमाश नसरानी औरत के पास गया जो इंग्लिस्तान के नो आबादयाती इलाकों की वज़ारत की तरफ़ से बसरे में इस्मत फ़रोशी पर मामूर थी और मुसलिम नौजवानों को बेराहेरवी पर उभारती थी। मैंने उससे तमाम वाकिआत ब्यान किये। जब राज़ी हो गया तो मैंने उसका आरज़ी नाम “सफ़िया” रखा और कहा कि मैं शेख को ले कर उसके पास आऊंगा।

मुकर्ररा दिन में शेख मोहम्मद को ले कर सफ़िया के घर पहुँचा। हम दोनों के सिवा वहाँ और कोई नहीं था। मोहम्मद ने एक अशफ़ी मेहर पर एक हफ़्ते के लिये सीगे से अक्द किया। मुख्तसर यह कि मैं बाहर और सफ़िया अन्दर से मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने आईन्दा के प्रोग्रामों के लिये तैयार कर रहे थे। सफ़िया ने अहकामे दीन की पामाली और आज़ादिये राय का पुरकैफ़ मज़ा मोहम्मद को चखा दिया था।

मैं इस तकरीब के तीसरे दिन फिर मोहम्मद से मिला और हमने एक बार फिर अपनी गुफ़्तगू शराब की हुमत के मुतअल्लिक थी। मेरी कोशिश थी कि मैं इन आयात के रद्द करूं जो मोहम्मद के नज़दीक हुमतते शराब पर दलील थी। मैंने उससे कहा: “अगर माविया, यज़ीद, खोलफ़ा-ए-बनु उमय्या और बनी अब्बास की शराब नोशी हमारे नज़दीक मुसल्लम हो तो क्योकर हो सकता है कि यह तमाम पेशवायाने दीन व मज़हब गुमराही की जिन्दगी बसर करते हों और तन्हा तुम

सच्चे रास्ते पर हो? बेशक वह लोग किताबे इलाही और सुन्नते रसूलसOअO को हम से ज़्यादा बेहतर जानते थे। पस यह बात सामने आती है कि इरशादाते खुदा और (रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) से उन बुजूर्गों ने जो इस्तेनाबात किया था वह शराब की हु्रमत नहीं बल्कि उसकी कराहत थी। इसके अलावा यहूद व नुसारा की मुकद्दस किताबों में सराहत से शराब पीने की इजाज़त है हालांकि यह भी इलाही अदयान हैं और इस्लाम उन अदयान के पैगम्बरों को मोअतकिद है। यह कैसे मुम्किन है कि शराब अल्लाह के भेजे हुए एक दीन में हलाल और दूसरे में हराम हो? क्या यह सब अदयान बरहक या खुदाये यकता के भेजे हुए नहीं है? हमारे पास तो यह भी रिवायत है कि हज़रत उमर उस वक़्त तक शराब पीते रहे जब तक यह आयत नाज़िल नहीं हुई: “क्या तुम शराब और जूए से दस्तबरदार नहीं हो गये।” (सूर-ए-मायदा आयत 91) अगर शराब हराम होती तो रसूल खुदारसO हज़रत उमर की शराब नोशी पर हद जारी फ़रमाते मगर आप का उन पर हद जारी न करना इत बात की दलील है कि शराब हराम नहीं है।

मोहम्मद जो बड़े गौर से मेरी गुफ्तुगू सुन रहा था अचानक संभला और कहा: “रिवायत में है कि हज़रत उमर शराब में पानी मिला कर पीते थे ताकि उसकी वलह कैफ़ियत दूँस हो जाये जो नशा पैदा करती है। वह कहते थे शराब की

मस्ती हराम है न कि खुद शराब। वह शराब जिससे नशा तारी न हो हराम नहीं है।”

मोहम्मद, हज़रत उमर के इस नजरिये को इस आयत की रोशनी में दुरुस्त जानता था, जिसमें इरशाद होता है।

“शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए के जरिये अदावत और दुश्मनी पैदा करे और तुम्हें यादे खुदा और नमाज़ से बाज़ रखे।” (सूर-ए-मायदा आयत 91)

आगर शराब में मस्ती और नशा न हो तो पीने वाले पर इसके असरात मुरतब नहीं होंगे और इसी लिये वह शराब जिसमें मस्ती नहीं हराम नहीं है।

मैंने मोहम्मद के साथ शराब से मुतअल्लिक गुफ्तुगू को सफ़िया के गोशगुजार किया और उसे ताकीद की कि मौका मिलते ही मोहम्मद को नशो में चूर कर दिया और जितना हो सके शराब पिलाओ।

दूसरे दिन सफ़िया ने मुझे इत्तिला दि कि उसने शेख के साथ जी खोल कर शराब नोशी की यहां तक कि वह आपे से बाहर हो गया ओर चीखने चिल्लाने लगे। रात की आखरी घड़ी में कई मर्तबा मैंने उससे मुकारिबत की और अब उस पर नकाहत का आलम तारी है और चेहरे की आब व ताब खत्म हो चुकी है। खुलासा कलाम यह कि मैं और सफ़िया पूरी तरह मोहम्मद पर छा चुके थे। इस

मंज़िल पर मुझे नो आबादयाती इलाकों के वज़ीर की दो सुनहरी बात याद आई जो उसने मुझे अलविदा कहते वक़्त कही थी। उसने कहा था:

“हमने स्पेन को कुफ़फ़ार (मुराद अहले इस्लाम हैं) से शराब और जुए के जरिये दोबारा हासिल किया। अब उन्हें दो ताक़तचों के जरिये दूसरे इलाकों को भी पामर्दी के साथ वापस लेना है।”

मोहम्मद के साथ मज़हबी गुफ़्तगू के दौरान एक दिन मैंने रोज़े के मसअले को हवा दी और कहा: “कुरआन कहता है: “रोज़ा तुम्हारे लिये बेहतर है।” (सूर-ए-अलबकरा आयत 184) उसने यह नहीं कहा कि तुम पर वाजिब है।” लेहाज़ा इस्लाम में रोज़ा वाजिब नहीं मुस्तहब है।”

इस मौके पर मोहम्मद को गुस्सा आया और उसने कहा: “तुम मुझे दीन से खारिज करना चाहते हो”

मैंने कहा: “ऐ मोहम्मद दीन क़ल्ब की पाक़ी, जान की सलामती और एतदाल का नाम है। यह कैफ़ियत इन्सान को दूसरों पर जुल्म व ज़ियादती से रोकती है। क्या हज़रत ईसाअ0 ने यह नहीं कहा कि मज़हब इश्क़ व वारफ़तगी का नाम है।” क्या कुरआन यह नहीं कहता: “यक़ीन हासिल करने तक अल्लाह की इबातदत करो” (सूर-ए-हजर आयत 99) अब अगर इंसान यक़ीने कामिल की मंज़िल पर पहुंच जाये, खुदा और रोज़े क़यामत उसके दिल में रासिख हो जायें, ईमान से उसका दिल लबरेज़ हो जाये और वह अच्छे सुलूक का हामिल हो तो

फिर रोज़े की क्या ज़रूरत बाकी रह जाती है? इस मंज़िल में वह आला तरीन इंसानी मरातिब से वाबस्ता हो जाता है।”

मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने इस मर्तबा मेरी शदीद मुखालिफत की और अपनी नाराज़गी का इज़हार किया। फिर एक दफ़ा मैंने उससे कहा: नमाज़ वाजिब नहीं।”

उसने पूछा: “क्यों?”

मैंने कहा: इस लिये कि खुदा वन्दे आलम ने कुरआन में कहा है कि “मुझे याद करने के लिये नमाज़ कायम करो।” सूर-ए-ताहा आयत 14) पस नमाज़ का मकसद ज़क्रे इलाही और तुम्हें चाहिये कि तुम उसका नाम अपनी ज़बान पर जारी रखो।”

मोहम्मद ने कहा: “हाँ मैंने सुना है कि बाज़ औलमा-ए-दीन नमाज़ के वक़्त अल्लाह के नाम की तकरार शुरु करते हैं और नमाज़ अदा नहीं करते।”

मैं मोहम्मद के इस एतराफ़ से बहुत ज़्यादा खुश हुआ पर एहतियातन कछ देर मैंने उसे नमाज़ पढ़ने की तलकीन भी की जिसका नतीजा यह निकला कि उससे नमाज़ की पाबन्दी छूट गयी। अब वह कभी नमाज़ पढ़ता और कभी न पढ़ता। खास तौर से सुबह की नमाज़ ग़ालबन उसने तर्क ही कर दी थी। हम लोग रात को देर तक जिसकी वजह से सुबह उठने और वजू करने की उसमें हिम्मत बाकी न रहती थी।

किस्सा मुख्तसर, आहिस्ता में मोहम्मद के बदन से ईमान का लबादा उतारने में कामयाब हो गया। मैंने हर रोज उससे अपनी मीठी गुफ्तगू का सिलसिला जारी रखता। अंजामकार एक दनी मैंने गुफ्तगू की हद्द को जनाबे रसूल खुदा (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) की जात (अक़दस) तक आगे बढ़ाया। अचानक उसके चेहरे पर तब्दीली आयी और वह इस मौजू पर गुफ्तगू के लिये तैयार नहीं हुआ। उसने मुझसे कहा: “अगर तुमने रसूले खुदा (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) की शान में गुस्ताखी की तो हमारी तुम्हारी दोस्ती के दरवाज़े यहीं से हमेशा के लिये बन्द हो जायेंगे।” मैंने अपनी मेहनतों पर पानी फिरते देखा तो फ़ौरन् अपना मौजू-ए-गुफ्तगु बदल लिया और फिर इस मौजू पर गुफ्तगू नहीं की।

उस दिन के बाद से मेरा मक़सद मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को रहबरी और पेशवाई की फ़िक्र देना हो गया। मुझे उसके क़ल्ब व रूप में उतर शिया सुन्नी फ़िरकों के अलावा इस्लाम में एक तीसरे फ़िर्के की सरबराही की पेशकश को उसके लिये क़िबिले अमल बनाना था। इस मक़सद के हुसूल के लिये ज़रूरी था कि पहले मैं उसके ज़ेहन को बेज़ा मजन्नून और अन्धे तअसुबात से पाक कर दूँ इस उन्वान से इसकी आज़ाद ख़्याली और बुलन्द परवाज़ी को तकवियत पहुँचाऊँ। इस काम में सफिया भी मेरी मददगार थी क्योंकि मोहम्मद उसे दीवानों की तरह चाहता था

और हर हफ्ते मुतअ की मुद्दत को बढ़ाता जाता था। मुख्तसर यह कि सफ़िया ने मोहम्मद से सब्र व करार और उसके तमाम इख्तियार छीन लिये थे।

मैंने अपनी एक मुलाक़ात में मोहम्मद से कहा: “क्या यह दुरुस्त है कि जनाबे रसूले खुदा (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) की तमाम असहाब से दोस्ती थी?”

उसने जवाब दिया: “हाँ”

मैंने पूछा: “इस्लाम के क़वानीन दायमी हैं या वक्ती?”

उसने कहा: “बेशक दायमी हैं” इसलिये कि रसूले खुदास० फ़रमाते हैं कि: “हलाले मोहम्मदस०” क़यामत तक हलाल और हलाले मोहम्मदस० क़यामत तक हराम है।”

मैंने बिला ताखीर कहा: “पस हमें भी उनकी सुन्नत पर अमल करते हुए एक दूसरे का दोस्त और भाई बनना चाहिये।”

उसने मेरी पेशकश को कुबूल किया और उस दिन के बाद से तमाम सफ़र व हज़र में हम एक दूसरे के साथ रहने लगे।

मैं इस कोशिश में था कि जिस पौदे को सींचने में मैंने अपनी जवानी के दिन सर्फ़ किये हैं अब जितनी जल्द हो सके उसके फलों से इस्तेफ़ादा करूं।

हिस्बे मामूल में अपने हर महीने की रिपोर्ट इंग्लिस्ताम में मो आबादयाती इलाकों की वज़ारत को भेजता रहा। रिपोर्ट लिखना अब मेरी आदत में शामिल हो



गया था जिसमें कभी मैं कोताही नहीं करता था। वहां से जवाबात लिखे जाते थे वह तमाम के तमाम बड़े हौसला औफ़जा और पुरउम्मीद हुआ करते थे और मोहम्मद ने जिस रास्ते का तअय्युन किया था हम उसे बड़ी तेज़ी से तय कर रहे थे। मैं सफ़र और हज़र में कभी उसको तन्हा नहीं छोड़ता था। मेरी कोशिश यही थी कि मैं आज़ाद ख्याली और मज़हबी अक़एद में जिदत पसन्दी की रुह को उसके वजूद में इस्तेहकाम बख़शो में हमेशा उसेको यह साथ दिलाता रहता था, कि एक ताबनाक मुस्कबिल तुम्हारे इन्तेज़ार में है।

एक दिन मैंने उससे अपना एक झूठा ख़्वाब बयान किया और कहा: रात मैंने जनाबे ख़त्मी मरतबतस० को बिल्कुल उसी सरापा के साथ कुर्सी पर बैठे देखा जैसे जाकेरीन और वाएज़ीन मिम्बरों पर बयान करते रहते हैं। बड़े बड़े ओलमा और बुजुर्गाने दीन ने जिनसे मेरी कोई वाक़फ़ियत नहीं थी चारों तरफ़ से उनको घेरे रखा था। ऐसे में, मैंने देखा कि अचानक तुम उस मजमे में दाख़िल हो गये। तुम्हारे चेहरे ते नूर की शुआयें फूट रही थी जब तुम रिसालतमाब (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) के सामने पहुँचे तो उन्होंने खड़े होकर तुम्हारी ताज़ीम की और माथा घूमा और कहा: “ऐ मेरे हमनाम मोहम्मद तुम मेरे इल्म के वारिस और मुसलमानों के दीनी और दुनियावी उमूर को संवारने में मेरे जानशीन हो”

यह सुन कर तुमने कहा: “या रसूल अल्लाह। (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम)” लोगों पर अपने इल्म को ज़ाहिर करते हुए मुझे खौफ़ महसूस होता है।”

जनाबे रिसालतमाबस0 ने फ़रमाया: खौफ़ को अपने दिल में जगह न दो क्योंकि जो कुछ तुम अपने बारे में सोचते हो, उससे कहीं ज़्यादा साहिबे मर्तबा हो।

मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मेरे इस मनगढ़ंत ख़्वाब को सुना तो खुशी से फूला नहीं समाया। वह बार-बार मुझसे पूछता था क्या तुम्हारे ख़्वाब सच्चे होते हैं? और मैं उसे मुसलसल इत्मिनान दिलाता रहा। मैंने महसूस किया कि ख़्वाब के तज़किरे के साथ ही उसने अपने दिल में नये मज़हब के एलान का मुसम्मम इरादा कर लिया है।

**इसी दौरान लंदन से मुझे खत** पहुँचा कि मैं फौरन करबला और नजफ़ के

उन मुक़द्दस शहरों की तरफ़ रवाना हो जाऊँ जो शियों के लिये क़िबल-ए-आरजू और इल्म व रुहानियत के मराकज़ हैं। अब सबसे पहले मैं मुक़द्दमे के तौर पर उन दोनों मुक़द्दस शहरों का एक निहायत मुख़्तसर तारीखी पसमंज़र पेश करना चाहता हूँ।

अहले तशीअ के पहले इमाम और आम्मतुल मुस्लेमीन के चौथे खलीफ़ा हज़रत अलीअ० की तदफ़ीन शहरे नजफ़ की अहमियत का सरनौहा-ए-आगाज़ है और यहीं से इस बस्ती की वुजूद अमल में आता है और यह रोज़ बरोज़ फैलती चली जाती है और यह सिलसिला आज तक जारी है। हज़रत अलीअ० की शहादत के वक़्त मरक़जे ख़िलाफ़त यानि कूफे से नजफ़ का फ़सिला छः किलो मीटर था, जिसे पैदल एक घण्टे में तय किया जा सकता था। आप की शहादत के बाद जनाबे हसनैनअ० आप के ज़नाजे को पोशीदा तौर पर उस दूर उफ़तादा इलाके में लाये जिसे आज नजफ़ कहा जाता है और रात की तारीकी में आप को दफ़न कर दिया। अब यह शहर बैनुल नहरैन का सबसे बड़ा इलाका कहलाता है और उसकी आबादी कूफ़ा से कहीं ज़्यादा है। इस जगही अहले तशीअ का हौज़ा-ए-इल्मिया कायम है और दुनिया भर के ओलमा ने इस शहर में इख़्तियार किया है। हर साल इसके बाज़ारों, मदरसों और घरों में इज़ाफ़ा होता चला जा रहा है। शिया ओलमा खुसूसी

एहतेराम के हामिल हैं। इस्तनबोल में मुक्रीम उस्मानी खलीफा मुन्दर्जा ज़ैल वुजूहात की बिना पर उनका बड़ा एहतेराम करता था।

1. एहतेराम ईरान और तुर्की के दोस्ताना रवाबित में इस्तेहकाम का बाइस था और इस तरह दोनों मुमालिक में जंग का खटका खत्म हो जाता था।

2. नजफ़ के ईतराफ़ व अकनाफ़ में बहुत से क़बाएल आबाद थे जो सबके सब मुसल्लह और सख़्ती से शिया मराजे के पैरुकार थे। उनके पास फ़ौज़ी असलहा और फ़ौज़ी तरबियत नहीं थी। यह लोग क़बाएली ज़िन्दगी के आदी थे, लेकिन ओलमा की तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। लेहाज़ा अगर उस्मानियों की तरफ़ से ओलमा की बेएहतेरामी अमल में आती तो वह सब के सब उस्मानियों के खिलाफ़ मुत्तहिद हो जाते और यह कोई अक़लमन्दी की बात न थी कि इस्तनबोल की खिलाफ़त ऐसा खतरा अपने लिये मोल लेती।

3. सारी दुनिया-ए-तशय्यो में शिया ओलमा की मरजइयत कायम थी लेहाज़ा अगर उस्मानियों की तरफ़ से ज़र्ज़ा बराबर भी उनकी एहानत होती तो ईरान, हिन्दुस्तान, अफ़्रीका और दुनिया के तमाम मुमालिक के शिया बरफ़रोख़्ता होता और यह बात तुर्क हुकूमत के हक़ में न थी।

अहले तशय्यों का दूसरा मुक़द्दस शहर कर्बला ए मोअल्ला है। यह शहर भी हज़रत अलीअ० और हज़रत फ़ातेमास० मोअल्ला है। यह शहर भी हज़रत अलीअ० और हज़रत फ़ातेमास० के फ़रज़न्द हज़रत इमाम हुसैनअ० की शहादतद के बाद

आज तक मुसलसल फैल रहा है। इराक के लोगों ने इमाम हुसैनअ० की शहादत के बाद आज तक मुसलसल फैल रहा है। इराक के लोगों ने इमाम हुसैनअ० के दात दी कि आप मुसलमानों के अम्मे खिलाफत को संभालने के लिये हिजाज से कूफ़ा तशरीफ़ लायें, लेकिन ज्योंहि आपअ० अपने खानदान के साथ कर्बला पहुंचे जो कूफ़े से तकरीबन 72 किलो मीटर के फ़ासले पर है। इराक के लोगों का मिजाज बदल गया और वह यज़ीद के हुक्म पर इमामअ० के खिलाफ़ लड़ने पर आमादा हा गये।

यज़ीद बिन माविया अमवी खलीफ़ा था, जिसकी शाम पर हुक्मत थी। अमवी लशकर, हुसैनअ० और उनके घराने से बरसरे पैकार हुआ और आखिरकार उन सब को क़त्ल कर दिया। इराकियों की वह बुजदिली और वज़ीदी लशकर की पलीदी और संगदिली इस्लामी तारीख़ की सबसे ज़्यादा शर्मनाक दास्तान है। इस वाक़िये के बाद से आज तक दुनिया के तमाम शिया कर्बला को ज़ियारत इबादत रुहानी लगाओ और तवज्जो का मरकज़ बनाये हुए हैं और हर तरफ़ से जोक़ दर जोक़ वहाँ पहुँचते हैं। कभी तो इतना मजमा होता है कि तारीख़ मसीहियत में कभी ऐसा इज्तेआम देखने में नहीं आया। कर्बला के शहर में भी शिया ओलमा और मराजे दीने इस्लाम की तालीम व तरवीज़ में हमेशा मसरूफ़ नज़र आते हैं यहां के दीनी मदरसे तालिब इल्मों से भरे रहते हैं। कर्बला और नजफ़ बिल्कुल एक दूसरे के मुमासिल हैं। दजल व फुरात इराक के दो बड़े दरिया हैं जिनका तरचश्मा तुर्की का

एक कोहिस्तानी इलाका है। बैनुल नहरैन की खेतियां इसी के दम से आबाद हैं और यहां के लोगों की खुशहाली इन्हीं दरियाओं की मरहूने मिन्नत हैं।

जब मैं लंदन वापस गया तो मैंने नो आबादयाती इलाकों की वज़ारत को यह पेशकश की कि वह हुकूमते इराक को अपना फ़रमांबरदार बनाने के लिये दजला व फुरात के संगम को कन्ट्रोल करे और शोरिश और बगावत के मौकों पर उसके रास्ते को तब्दील करे ताकि वहां के लोग अंग्रेजों के इस्तेमारी मकासिद को मानने पर मजबूर हो जायें।

मैं एक बरबरी सौदागर के भेंस में नजफ़ पहुँचा और वहाँ के शिया ओलमा से रस्म व राह बढ़ाने के लिये उनकी दर्सी मजलिसों और मुबाहिसे की महफिलों में शिरकत करने लगा। महफिलें बेशतर औकात मुझे अपने अन्दर जज़ब कर लेती थइं क्योंकि उनमें क़ल्ब व ज़मीर की पाकी हुकम फ़रमा थ। मैंने शिया ओलमा को इन्तेहाई पाक दामन और परहेजगार पाया लेकिन अफ़सोस कि उनमें ज़माने की तब्दीली के असरात का फुकदान था और दुनिया के इन्क़ेलाबात ने उनकी फ़िक्र में कोई तब्दीली पैदा नहीं की थी।

1. नजफ़ के ओलमा मराज़े उस्मानी हुक्काम के शदीद मुखालिफ़ थे। इस लिये नहीं कि वह सुन्नु थे बल्कि इस लिये कि वह ज़ालिम थे और अवाम उनसे नाख़ुश थे और अपनी निजात के लिये उनके पास कोई रास्ता नहीं था।

2. वह लोग अपना तमाम वक्त दर्स व तदरीस और दीनी उलूम व मुबाहिस पर सर्फ करते और कुरुने वुस्ता के पादरियों की तरह उन्हें जदीद उलूम से दिलचस्पी नहीं थी और अगर कुछ जानते भी थे तो वह उनके लिये न जानने के बराबर था।

3. उन्हें दुनिया के सियासी वाक़िआत का क़तअन इल्म न था और इस क्रिस्म के मसाएल पर सोचना उनके नज़दीक बिल्कुल आबस और बेहूदा था। उन्हें देख कर मैं आप ही आप कहता था: वाक़ई यह लोग कितने बदबख़्त हैं। दुनिया जाग चुकी हैं मगर यह अभी ख़्वाबे ख़रगोश ही में पड़े हैं। शायद कोई तबाहकुन मौज ही उनको इस ख़्वाबे गरां से बेदार करे। मैंने बाज़ ओलमा से खिलाफते उस्मानिया के खिलाफ तहरीक चलाने पर गुफ़्तगू की, लेकिन उन्होंने अपनी तरफ़ से कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं किया और ऐसा मालूम होता था कि वह लोग इस क्रिस्म के मसाएल से दिलचस्पी नहीं रखते। बाज़ लोग मेरा मज़ाक उड़ाते थे, और मेरी बात का यह मफ़हूम निकालते थे कि मैं दुनिया के हालात को दिगरगों और नज़मे आलम को बरहम करना चाहता हूँ। इन ओलमा की नज़र में खिलाफत मक़दूर व महतूम थी। उनका अक़ीदा था कि उन्हें ज़हूरे महदी मोऊदअ० (अज्जल्लाहा फ़राजा) से पहले आले उस्मान के खिलाफ कोई इक़दाम नहीं करना चाहिये। महदी मोऊदअ० शियों के बारहवें इमामअ० हैं जो बचपन ही से पर्दा-ए-ग़ैब में चले गये हैं और अभी तक ज़िन्दा हैं। आख़री ज़माने में उनका ज़हूर होगं और वह उस वक्त

दुनिया को अदल व इंसाफ़ से भर देंगे जब वह मुकम्मल तौर पर जुल्म व ज़ियादती से भर चुकी होगी।

मैं इसी तरह का अक़ीदा रखने वाले इस्लामी दानिशमन्द के बारे में सख्त हैरान था। उनका अक़ीदा बईयेना क़शरी ईसाईयों का अक़ीदा था जो क़यामे अदल के लिये हज़रत ईसाअ० की बाज़ग़शत के काएल थे। मैंने एक आलिम से पूछा: क्या आप का यह अक़ीदा नहीं है कि अभी से जुल्म व ज़ियादती के खिलाफ़ रिज़्म आरा हो कर दुनिया में इस्लाम का बोल बाला किया जाये? बिल्कुल उसी तरह जैसे पैग़म्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने ज़ालिमों के खिलाफ़ जेहाद किया था?

उन्होंने फ़रमाया: पैग़म्बरे अकरम (सल्लल्लाहू अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने इसी काम के लिये मामूर किया था और इसी लिये उनमें इस काम को अंजाम देने की तवनाई थी।

मैंने कहा: क्या कुरआन यह नहीं कहता: “अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह भी तुम्हारा मददगार होगा।” (सूर-ए-मोहम्मदस० आयत 7) लेहाज़ा तुम भी अल्लाह की तरफ़ से ज़ालिमों के खिलाफ़ तलवार उठाने पर मामूर हो।



आखिरकार जच होकर उसने कहा: “तुम एक तिजारत पेशा आदमी हो और उन मौजूआत पर गुफ्तगू के लिये एक सिलसिलए इल्म की जरूरत है जिसके लिये तुम मुनासिब नहीं हो।”

अब जरा नजफ़ की तरफ़ जायें और हज़रत अलीअ0स0 के रोज़े के बारे में गुफ्तगू करें। बड़ी पुरशिकोह और बाअज़मत आरामगाह है। पूरी इमारत सनाई, नक्काशी, आईनाकारी और मुख्तलिफ़ सजावटों का बेमिसाल शाहकार है। इतराफ़े मज़ार बड़े बड़े पुरशिकोह कमरे, तिलाई नाप का अज़ीम गुम्बद ओर सोने के दो मीनारे एक अजीब मंज़र पेश करती हैं। शिया हज़रात हर रोज़ गिरोह दर गिरोह रोज़े की ज़ियारत के लिये हाज़िर होते हैं और वहां की नमाज़े जमाअत में शिरकत करते हैं। वह लोग बड़े वलिहाना अन्दाज़ में इखलास व इरादत का मुजस्सिम बन कर ज़रीह को बोसा देते हैं दाखिले से पहले आशिकाने इमाम दरवाजे की चौखट पर अपने आप को गिरा देते हैं और बड़े एहतेराम से बाहरगाह की ज़मीन को चूमते हैं। फिर इमाम अलीअ0 पर दुरुद भेजते हैं और इज़्ने दखूल पढ कर हरम में दाखिल होते हैं। हरम के चारों तरफ़ एक अज़ीमुशान सहन है जिसमें बहुत से कमरे बने हुए हैं जो ओलमा-ए-दीन और ज़ायरीने हरम की इक़ामतगाह है।

करबला-ए-मोअल्ला में दो मशहूर आरामगाहें हैं जो थोड़े से इख्तिलाफ़ के साथ नजफ़ में वाक़े हज़रत अलीअ0 की आरामगाह के तर्ज़ पर बनाई गयी है। पहली आरामगाह इमाम हुसैनअ0 की और दूसरी हज़रतअ0 की है। कर्बला के

जायरीन भी नजफ़ की तरह रोज़ाना हरम में हाज़री देते हैं और इमामअ० की ज़ियारत करते हैं। कर्बला मजमूई तौर पर नजफ़ से ज़्यादा दरमियान दरिया के बहते पानी ने उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा दिये हैं।

इन शहरों की वीरानी और आशफ़ताहाली ने हमारी कामयाबी के मवाक़े फ़राहम कर रखे थे। लोगों की हालतेज़ार को देख कर यह अन्दाज़ा लगाया जा सकता था कि उस्मानी हुक्काम ने इन शहरों के रहने वालों के साथ किन-किन ज़राएम का इस्तेकाब किया और कैसी कैसी ज़ियादतियाँ कीं। यह लोग बड़े नादान, लालची और खुदसर थे और जो चाहते थे कर गुज़रते थे। ऐसा मालूम होता था कि इराक़ के लोग उनके ज़र ख़रीद गुलाम हैं पूरी क़ौम हुक्मत से नालां थी और जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ शिया हज़रत अपनी आज़ादी के छिन जाने के बावजूद हुक्काम के जुल्म व सितम को सब्र व सुकून से सह रहे थे और कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं कर रहे थे। अहले सुन्नत हज़रात का भी यही हाल था। वह लोग अपनी सरज़मीन पर तुर्क गवर्नर के तसल्लुत से बहुत नाखुश थे। ख़ास तौर पर जबकि उनकी रगों में अरब अशराफ़ियत का खून दौड़ रहा था। उधर खानदाने रिसालतस० से वाबस्तगी रखने वाले अफ़राद हुक्मती इन्तेज़ामात में अपने आप को उस्मानी गवर्नर से ज़्यादा हक़दार समझते थे।

तमाम बस्तियाँ वीरान थीं। गर्दों गुबार बस्ती वालों का मुक़द्दर बन चुका था। हर तरफ़ बदनज़मी का दूर दौरा था। रास्तों पर लुटेरे काबिज़ थे और इस ताक में

बैठे रहते थे कि हुकूमत की सरपरस्ती से आजाद कोई काफ़िला वहां से गुजरे और वह उन्हें लूटना शुरू कर दें लेहाजा बड़े बड़े काफ़िले सिर्फ़ उसी वक़्त मंजिले मक़सूद तक पहुंच सकते थे जब उन्हें मुसल्लेह आदमियों के ज़रिये हुकूमत की हिमायत हासिल हो।

दूसरी तरफ़ क़बाएली झड़पों में भी इज़ाफ़ा हो गया था। कोई दिन ऐसा न ता जिसमें एक क़बीला दूसरे क़बीले पर हमला आवर न हो और क़त्ल व गारतगरी का बाज़ार गर्म न होता हो। रोज़ाना कई अफ़राद मौत के घाट उतर जाते थे। नादानी और बेइल्मी ने पूरे इराक़ को अजीब तरह अपनी लपेट में ले रखा था। यह वाकिआत कुरुने वुस्ता में पादरियों के दौर की याद ताज़ा कर रहे थे। सिर्फ़ नजफ़ और कर्बला के ओलमा इससे मुस्तसना थे या फिर किसी क़दर तालिबे इल्म या वह लोग जिनका उन ओलमा से मेल जोल था वगर न सबके सब जाहिल थे। मुल्की इक़तेसाद का पहिया जाम हो गया था और बीमारी, बेरोज़गारी, ज़ेहालत और बदबख़्तियों ने शिद्दत से मुतवस्सित लोगों का घर देख लिया था। ममतलिकात का शीराज़ा बिखर चुका था। हर तरफ़ एक हंगामा बपा था। हुकूमत और अवाम के दरमियान मुफ़ाहिमत की कमी थी और वह एक दूसरे को अपना दुश्मन समझते थे। उनका एक दूसरे के साथ तआवुन नहीं था। ओलमा-ए-दीन, इलाही मसाएल में इस तरह गर्क थे कि दुनिया की ज़िन्दगी की नज़रों से ओझल हो गयी थी।

जमीन खुशक और खेतियाँ उजाड़ थीं। दजला व फुरात के दोनों दरिया खेतों को सेराब करने के बजाये एक आशाफ़ता सर मेहमान की तरह प्यासी ज़मीन के बीच से बसरअत गुजर रहे थे। मुल्क की यह आशाफ़ता हाली यकीनन एक इन्केलाब का पेश खेमा थी।ँ

मुख्तसर यह कि मैंने कर्बला और नजफ़ में चार महीने गुजारे। नजफ़ में, मैं ऐसी बीमारी में मुब्तिला हुआ कि जीने की औस दूट गयी। तीन हफ़ते तक मेरी बुरी हालत थी। आखिरकार मुझे शहर के एक डाक्टर से रूजू करना पड़ा। उसने मेरे लिये कुछ दवायें तजवीज़ की जिनके इस्तेमाल से मैं बतदरीज, बेहतर होता चला गया। उस साल गर्मी भी बड़ी शदीद और नाकबिले बर्दाशत थी और मैंने अपनी बीमारी का तमाम वक़्त एक तहख़ाने में गुजारा जो किसी क़दर पुरसुकून और ठण्डा था। मेरा मालिके मकान मेरे दिये हुए मुख्तसर पैसे से मेरे लिये दवा दारु और खाने पीने की इन्तेज़ाम करता था। वह हज़रत अलीअ0 के ज़व्वारों की खिदमत को तकरुबे इलाही का ज़रिया समझता था। बीमारी के इब्तिदाई दोनों में मेरी ग़िज़ा मुर्ग़ का सूप था लेकिन बाद में डाक्टर की इजाज़त से मैंने गोशत और चावल भी इस्तेमाल करना शुरू किया।

बीमारी से किसी कद्र इफ़ाक़े के बाद मैं बग़दाद रवाना हुआ और वहां जा कर मैंने कर्बला, नजफ़, हिल्ला और बग़दाद से मुतअल्लिक अपने मुशाहिदात के तकरीबन सो सफ़हात पर मुशतमिल एक रिपोर्ट में नो आबादयाती इलाकों की

विज़ारत के लिये रकम किया और लंदन भेजने के लिये उसे बगदाद में मजकूरा विज़ारत के नुमाइन्दा के सुपुर्द किया और अपने रुकने या लंदन वापस जाने से मुअल्लिक नये एहकामात के इन्तेज़ार में बैठा रहा।

यहां यह बीत भी बताता चलूं कि मैं वापसी के लिये बहुत बेकरार था, क्योंकि अपने देश, खानदान और अज़ीज व अकारिब से छूटे मुझे एक अरसा हो चुका था। खास तौर पर रह रह कर रास्पोटीन का ख्याल आ रहा था जो मेरी इराक़ रवानगी के कुछ अर्से बाद ही इस दुनिया में वारिद होआ था। इस नो मौलूद की याद मुझे बहुत बेचैन कर रही थी। इसी बाएस मैंने दरख्वास्त में एक मुख्तसर अर्से के लिये वापस लंदन आने के लिये इजाज़त चाही थी। मुझे इराक़ में तीन साल का अर्सा हो चुका था। बगदाद में नो आबादयाती इलाकों की विज़ारत के नुमाइन्दे का इसरार था कि मैं बार बार उसके पास न जाऊँ क्योंकि इस तरह मुम्किन है लोग मुझे शक की निगाह से देखने लगे और इसी बात को मद्दे नज़र रखते हुए मैंने दजला के करीब एक मुसाफ़िर खाने को अपना ठिकाना बनाया। लो आबादयाती इलाके के नुमाइन्दा ने कहा था कि लंदन से जवाब आते ही मुझे बाखबर कर दिया जायेगा।

बगदाद में अक़ामत के दौरान मैंने उसे शहर का आम हालतों में उस्मानी हुकूमत के पाया-ए-तख्त “कुस्तुनतुनिया” से मवाज़ना किया तो मुझे उन दिनों में नुमायां फ़र्क़ महसूस हुआ जो अरबों की निस्बत उस्मानियों की दुश्मनी और

बदनियती का गम्माज़ था। उन्होंने इराकी शहरों और इराकी आबादियों को हिफ़ाज़ाने सेहत के तमाम उसूलों के बरख़िलाफ़ ग़िलाज़त और गन्दगी का मिस्किन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

बसरा से कर्बला और नजफ़ पहुँचने के चन्द माह बाद मुज़ मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब का ख्याल आया। मैं उसकी तरफ़ से बड़ा फ़क्रमन्द था। मैंने उस पर बड़ी मेहनत की थी, लेकिन मुझे उस पर भरोसा नहीं था, क्योंकि वह मतलूने मिज़ाज वाक़ै हुआ था। इसके अलावा वह गुस्से का भी बड़ा तेज़ था और ज़रा ज़रा सी बात पर आपे से बाहर हो जाया करता था। इन खुसुसियात के पेशे नज़र मुझे धड़का था कि कहीं मेरी मेहनत अकारत न जाये और जिस ख्वाहिश को मैं एक अर्से से अपने सीने में लिये फिर रहा था उस पर पानी न फिर जाये।

जिस दिन मैं बसरा कि सिम्त रवाना हो रहा था वह तुर्की जाने पर बज़िद था कि वहां जाकर उस शहर के बारे में मालूमात हासिल कर। मैंने बड़ी सख़्ती से उसे उस सफ़र से बाज़ रखा और कहा मुझे डर है कि तुम वहाँ जा कर कोई ऐसी उलटी सीधी बात न कर बैठो जिससे तुम पर कुफ़्र व इलहाम का इलज़ाम आयद हो और तुम्हार खून रायगां जाये लेकिन सच्ची बात यह थी कि मैं नहीं चाहता था कि वहां जा कर वह बाज़ ओलमा-ए-अहले सुन्नत से कोई राबता कायम करे क्योंकि इसमें इस बात का खतरा था कि कहीं वह लोग अपनी मोहकम दलीलों के

जरिये दोबारा उसे अपने जाल में न फांस लें और मेरे तमाम मन्सूबे धरे के धरे रह जायें।

जब मैंने देखा कि मोहम्मद बसरा से जाने पर मुसिर है तो मजबूरन मैंने उसे ईरान जाने पर उभारा कि वहां जा कर वह शीराज और इस्फ़ेहान की सैर करे।

यहाँ इस बात की वजहात भी जरूरी है कि उन दिनों शहरों के रहने वाले शिया मजहब के पैरुकार हैं और यह बात बईद अज कयास थी कि शेख उनके अक्राएद से मुतस्सिर हो। मुझे इस बारे में पूरा इत्मिनान था, क्योंकि मैं शेख को अच्छी तरह जानता था।

रुखसत होते हुए मैंने उससे पूछा: “तकय्या के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ” ?

उसने कहा: “दुरुस्त हैं क्योंकि पैगम्बरे अकरमस० के एक सहाबी अम्माररजि० उन मुशरेकीन के डर से जिन्होंने उनके माँ बाप को क़त्ल कर दिया था अपने आपको मुशरिक जाहिर करते रहे और खत्म मरतबतस० ने जनाबे अम्मार यासिररजि० की इस रविश की तरफ़ इशारा भी किया है।”

मैंने उससे कहा: “पस तुम पर भी वाजिब है कि ईरान जा कर तकय्ये को न भूलो और अपने आपको ख़ालिस शिया जाहिर करो ताकि एतराजात से बचे रहो और ओलमा की सोहबत भी तुम्हें हासिल रहे और साथ ही साथ ईरानियों के आदाब व रुसूम भी तुम पर खुल जायें क्योंकि आईन्दा चल कर यह मालूमात

तुम्हारे बहुत काम आयेगी और तुम्हें अपने मक़ासिद में बड़ी कामयाबी अता करेगी ” ।

इस गुफ़्तगू के बाद मैंने उसे कुछ रक़म “ज़कात” के उन्वान से दी। ज़कात एक तरह का इस्लामी टैक्स है जिसे सरमायादारों से वसूल किया जाता है ताकि उस आमदनी को उम्मत के फ़लाह व बहबूद पर खर्च किया जाये। जाते हुए मैंने रास्ते ही में उसे एक घोड़ा खरीद कर दिया क्योंकि उसे उसकी सख़्त ज़रूरत थी और फिर मैं उससे अलग हो गया और उस दिन से अब तक उसकी कोई ख़बर नहीं है और नहीं मालूम उस पर क्या बीती होगी। मुझे ज़्यादा तशवीश इस लिये भी थी कि हमने बसरे से निकलते वक़्त यह तय किया था कि हमें वापस असरा ही पहुंचना है और अगर हममें से कोई वहां न पहुँच सके तो अपनी कैफ़ियत “अब्दुर रज़ा तुरखान” को लिख भेजे ताकि दूसरा उससे बाख़बर हो मगर अब तक उसकी तरफ़ से कोई इतिला नहीं मिली थी।

**कुछ अर्स इन्तेज़ार के बाद** बिलआख़िर नौआबादयाती इलाकों की विज़ारत से ज़रूरी ऐहकामात बग़दाद पहुंचे और मेरी हुकूमत ने मुझे फ़ौरी तौर पर तलब किया। लंदन पहुंचते ही नौआबादयाती इलाकों की विज़ारत के सेक्रेट्री और आला ओहदादारों के साथ हमने एक कमीशन तशकील दिया। मैंने इस जलसे में अपने फराएज़, इक़दामात और मुतालिआत पर मब्नी रिपोर्ट को लंदन हुक्काम के सामने पेश किया और उन्हें बैनुल नहरैन की कैफ़ियत से भी आगाह किया।



इराक़ से मुतअल्लिक़ मेरी फ़राहमकर्दा मालूमात और मेरी कारगुजारियों ने सबके दिल जीत लिये थे। पहले भी इराक़ से मैंने कई रिपोर्ट उनके लिये रवाना की थी और उन सबसे वह मुतईन थे। उधर सफ़िया ने भी एक रिपोर्ट भेजी थी जो पूरी तरह मेरी रिपोर्ट की ताईद करती थी। इसके अलावा मुझे यह बात भी मालूम हुई कि विज़ारतख़ाना ने मेरी निगरानी के लिये कुछ मख़सूस अफ़राद को मेरे पीछे लगा रखा था जो सफ़र व हज़र में मुझ पर निगाह रखते थे। उन अफ़राद ने भी अपनी रिपोर्टों में मेरे तर्ज़ अमल और दिलचस्पी से रिज़ाइयत की इज़हार किया था और उन रिपोर्टों की तस्दीक व ताईद की थी जिन्हें मैंने लंदन मालूम हुई कि विज़ारतख़ाना ने मेरी निगरानी के लिये कुछ मख़सूस अफ़राद को मेरे पीछे लगा रखा था जो सफ़र व हज़र में मुझ पर निगाह रखते थे। उन अफ़राद ने भी अपनी रिपोर्टों में मेरे तर्ज़ अमल और दिलचस्पी से रिज़ाइयत की इज़हार किया था और उन रिपोर्टों की तस्दीक व ताईद की थी जिन्हें मैंने लंदन भेजा था। इस मर्तबा कुल्ली तौर पर मैदान मेरे हाथ और सब मुझसे खुश थी यहाँ तक कि उस दौर के सेक्रेट्री ने वज़ीर से मेरी मुलाकात के लिये वक़्त लिया और मैं उसके साथ वज़ीर से मिलने गया। मुझे देखते ही वज़ीर के चेहरे पर एक गोना शगुफ़्तगी आ गयी और बड़े पुरतपाक अन्दाज़ में खुश आमदीद कहते हुए उसने मुझसे हाथ मिलाया। यह मुलाकात गुज़िशता की बेजान और मुख़्तसर करती थी कि मैंने उसके दिल में अपने लिये जगह पैदा कर ली है।

वज़ीर खास तौर से मेरी महारत का मोअतरिफ़ था जिसकी बुनियाद पर मैंने शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने कब्जे मे कर लिया था। मुझे याद है कि उसने अपनी गुफ्तगू के दौरान मुझसे कहा था: “मोहम्मद पर तसल्लुत नोआबादयाती विज़ारत का सबसे अहम मसअला था” उसने बड़ी शिद्दत से यह ताकीद की थी कि मैं मोहम्मद को एक मुनज़्जम मनसूबे के तहत उन उमूर से आगाह करूं जिन्हें आईन्दा चल कर उसे हमारे लिये, अंजाम देना है। वह बार-बार इस बात का एतराफ़ कर रहा था कि अज़ीम बर्तानिया के लिये मेरी तमाम खिदमात शे मोहम्मद जैसे शख्स की जुस्तजू और उस पर अपना असर व नुफूज़ करने के मुकाबिले में पासिंग भी नहीं। नोआबादयाती इलाकों के वज़ीर को जब इस बात का इल्म हुआ कि मैं शेख की गुमशुदकी के बारे में बहुत परेशाह हूँ तो उसने निहायत इत्मिना से जवाब दिया: “परेशान होने की ज़रूरत नहीं। तुमने जो कुछ शेख को पढाया था वह अभी तक उसे याद है और हमारे आदमी इस्फ़ेहान में उससे राबता कायम रखे हुए हैं। उनकी रिपोर्टों से मालूम होता है कि शेख अभी तक अपनी डगर पर कायम है। मैंने आप ही आप कहा शेख ने अपने इस गुरुर व नख़ूत के साथ अंग्रेज़ जासूस को क्योंकि इजाज़त दी होगी कि वह उसके बारे में मालूमात फ़राहम कर सके। इस मौजू पर वज़ीर से बात चीत करते हुए मुझे खौफ़ महसूस हुआ कि कहीं वह बुरा न मान जाये। बाद में शेख से दोबारा मुलाकात पर मुझे सब कुछ इल्म हो गया और उसने तमाम माजरा कह सुनाया। उसने बताया

कि इस्फ़ेहान में उसकी दोस्ती अब्दुल करीम नामी एक शख्स से हुई जो अपने आपको अहले कलम जाहिर करता था और उसी ने शेख पर अपना सिक्का बिठा कर उसके तमाम राज़ मालूम किये थे। इसके साथ ही सफ़िया भी कुछ अर्से बाद इस्फ़ेहान आई और उसने मज़ीद दो महीने के लिये थी बल्कि अब्दुल करीम ने उसे अपने साथ रखा हुआ था। शीराज़ में अब्दुल करीम ने शेख के लिये सफ़िया से भी ज़्यादा खूबसूरत लड़की का इन्तेजाम किया था और वह शीराज़ के एक यहूदी खानदान की हसीन व जमील लड़की थी जिसका नाम आसिया था। अब्दुल करीम इस्फ़ेहान के एक मादर पिदर आज़ाद ईसाई का फ़र्ज़ी नाम था और वह भा आसिया का तरह ईरान में बर्तानिया के नौआबादयाती इलाकों की विज़ारत का एक कदीम मुलाजिम था।

मुख्तसर यह कि अब्दुल करीम, सफ़िया, आसिया और राकिमुल हुरुफ़ ने मिल कर अपनी रात दिन की कोशिशों से शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को नौआबादयाती इलाकों की विज़ारत की ख्वाहिशात के ऐन मुताबिक़ ढाला और आईन्दा की प्लानिंग को रु बा अमल लाने की ज़िम्मेदारी उठाने पर आमादा किया। यहां यह नुकता भी काबिले ज़िक़ है कि वज़ीर से मुलाक़ात के मौक़े पर सेक्रेट्री के अलावा विज़ारत के दो और आला ओहदादार भी वहां मौजूद थे जिन्हें उस वक़्त तक मैं नहीं जानता था। वज़ीर ने इजलास के इख़िताम पर मुझसे कहा: “अब तुम इंग्लिस्तान की नौआबादयाती विज़ारत के दो और आला ओहदादार

भी वहां मौजूद थे जिन्हें उस वक़्त तक मैं नहीं जानता था। वज़ीर ने इजलास के इख़्तियाम पर मुझसे कहा: “अब तुम इंग्लिस्तान की नोआबादयाती विज़ारत के सबसे बड़े इफ़्तख़ारी निशान के हक़दार हो और यह वह एजाज़ा है जिसे हमारी हुकूमत सफ़े अक्वल के जासूस को दिया करती है।” खुदा हाफ़ज़ी के मौक़े पर उसने क़तई अन्दाज़ में कहा” : मैंने सेक्रेट्री से कह दिया है कि वह तुम्हें हुकूमत के बाज़ “पोशीदा” और “राज़दराना” मसाएल आगाह करे ताकि तुम अपनी जिम्मेदारियों को ज़्यादा बेहतर तरीक़े से अंजाम दे सको।”

वज़ीरे की खुशनुदी के सबब मेरी दस दिन की छुट्टी मंज़ूर हुई और मुझे अपनी बीवी और एक अदद बच्चे से मिलने का मौक़ा हाथ आया। मेरा लड़का जो अब तीन साल का हो चुका था, बिल्कुल मेरा हसमशकल था और बाज़ अल्फ़ाज़ बड़े मीठे अंदाज़ में बोलने लगा था। उसने चलना भी सीख लिया था। मैं हकीक़तन अपने दिल के टुकड़े को ज़मीन पर चलता फिरता महसूस कर रहा था। अफ़सोस कि खुश के यह लम्हात बड़ी तेज़ी से गुज़र रहे थे। बीवी और बच्चे के साथ गुज़रने वाले यह पुरमुसरत लम्हात वाक़ई नाक़ाबिले बयान हैं और ज़िन्दगी की तमाम लज्ज़तें उसे आगे हैज हैं मेरी एक उम्र रसीदा चची थी जिसकी मुझ पर बचपन ही से नवाज़िशत और मेहरबानियां रही हैं। मैं उससे मिल कर किस क़द्र खुश हुआ, इसका अंदाज़ा किसी को नहीं हो सकता। मेरी उससे यह आख़री मुलाकात थी इस लिये कि दस दिन की छुट्टियों के बाद जब मैं तीसरी मर्तबा

अपने सफ़र पर रवाना हुआ तो निहायत अफ़सोस के साथ मुझे उसकी मौत की इत्तिला मिली।

मेरी दस दिन की यह छुट्टियाँ पलक झपकते गुजर गयीं। यह एक तल्ख़ हकीकत है कि जिन्दगी के पुरमसत लम्हात हमेशा बड़े तेज़ी से गुजरते हैं और मुसीबत की घड़ियाँ अपने दामन में सालों का फ़ासिला रखती हैं। लंदन के पुरमसर्त लम्हात में मैंने अपनी नजफ़ की बीमारी को याद किया जिसका हर लम्हा मेरे लिये एक सदी बन गया था। मैं किसी तरह भी मुसीबत के उन अय्याम को भुला नहीं सकता। खुशी के लम्हात को इतना दवाम नहीं कि वह मीबतों के दिनों की कोफ़्त को यादों के दरीचों में न आने दें।

दस दिनों की छुट्टियां मनाने के बाद आइन्दा के लाएहा अमल से बाख़र होने के लिये मैं बादिले ना ख़्वास्ता वज़ारत खज़ाना गया। सेक्रेट्री से मुलाक़ात के मौक़े पर मैंने उसे हमेशा की तरह खुश व ख़ुरम पाया। उसने मुझसे बड़ी गर्मजोशी के साथ हाश मिलाया और दोस्ताना लहजे में कहा:

नोआबादयाती उमूर के खुसूसी कमीशन की मर्जी के मुताबिक़ वज़ीर ने खुद मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें दो अहम रुमूज से आशना करूं। इन रुमूज से वाक़फ़ियत आइन्दा के प्रोग्रामों में तुम्हारे लिये बहुत मुफ़ीद साबित होगी और इन दो बातों से नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत के सिर्फ़ चन्द एक मिम्बरान ही बाख़बर हैं। यह कहकर उसने मेरा हाथ थामा और अपने साथ विज़ारतख़ाने के एक

कमरे में ले गाय जहाँ कुछ लोग एक गोल मेज़ इतराफ़ बैठे हुए थे। उन्हें देख कर तअज्जुब से मेरी चीख़ निकलते रह गयी क्योंकि उस इजलास के आदमियों की कैफ़ियत कुछ यूँ थी।

1. हू बहू सलतनते उस्मानी का जलालत अफ़रोज़ पैकर जो तुर्की और अंग्रेज़ी ज़बानों पर पड़ी महारत से मुसल्लत था।

2. कुस्तुनतुनिया के शेख़ुल इस्लाम की दूसरी हकीकत से करीब तस्वीर।

3. शहंशाहे ईरान के शिया आलिम की मुकम्मल शबीह।

4. नजफ़ में शियों के मराजे तकलीद का बेमिस्ल सरापा

यह आखरी तीन अफ़राद फ़ारसी और अंग्रेज़ी ज़बानों में गुफ़्तगू कर रहे थे। सबके नज़दीक उनके प्राईवेट सेक्रेट्री बिराजमान थे जो उनकी बातों का नोट बना कर हाज़ेरीन के लिये उसका तर्जुमा पेश कर रहे थे। ज़ाहिर है कि इन तमाम प्राईवेट सेक्रेट्रियों का किसी ज़माने में मज़कूरा पाच शख़िसयतों से बहुत करीब का राबता कर चुका था और उनकी मुकम्मल रिपोर्ट के तहत उन पांच हमशबीह अफ़राद कतो बईनहे तमाम आदत व ख़साएल के साथ ज़ाहिरी और बातिनी एतबार से असली अफ़राद की मुकम्मल तस्वीर बनाया गया था। यह पाँचों सवांगी अपने फ़राएज़ और मक़ाम व मंसब से बख़ूबी आशना थे। सेक्रेट्री ने आगाज़े सुखन करते हुए कहा: उन पाच अफ़राद ने असली शख़िसयतो का बहरूप भर रखा है और यह बताना चाहते हैं कि वह किसी तरह की सोच रखते हैं और आईन्दा के बारे में

उनका क्या ख्याल है। हमने इस्तनबोल, तेहरान और नजफ़ की मुकम्मल इतिलाआत उन्हें फ़राहम कर दी है। अब वह अपनी हैइयत कज़ाई को हकीकत पर महमूल किये बैठे हैं और इसी अहसास के साथ अपनी हासिलकर्दा मालूमात से हमारे सवालों का जवाब फ़राहम करते हैं। हमारी जांच पड़ताल के मुताबिक उनके सत्तर फ़ीसद जवाबात हकीकत के ऐन मुताबिक या यूँ कहिये कि असली शख़िसयतों के उफ़कार से हम आहंग होते हैं। सेक्रेट्री में अपनी गुफ़्तुगू के दौरान मुझे मुखातिब ले सकते हो। मिसाल के तौर पर नजफ़ के शिया मरजा तकलीद से जो चाहो पूछ सकते हो।” मैंने कहा: “बहुत अच्छा” और फ़ौरन ही कुछ सवालात पूछ डाले।

मेरा पहला सवाल था: “किब्ला व काबा।” क्या आप अपने मुकल्लेदीन को इस बात की इजाज़त देते हैं कि वह सुन्नी और मुतअस्सुब उस्मानी हुकूमत की मुखालिफ़त पर कमरबस्ता हों और उनके खिलाफ़ एलाने जंग करें?”

नक़ली या सवांगी मराजा तकलीद ने कुछ देर सोचा और कहा। “मैं मुतलिक़ जंग की इजाज़त नहीं देता क्योंकि वह सुन्नी मुसलमान हैं ओर कुरआन की आयत कहती है कि “तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं।” सिर्फ़ उस सूरत में जंग जाएज़ है जब उस्मानी हुकमरान जुल्म व सितम पर उतर आये। ऐसी हालत में अम्र बिल मारुफ़ और नेहि अनिल मुन्कर के तहत उनसे जंग लड़ी जा सकती है।

वह भी उस वक्त तक जब आसारे जुल्म जाएल न हो जायें और ज़ालिम जुल्म से बाज़ न आ जाये।”

मैंने फिर दूसरा सवाल पूछा: “हुजुरे वाला।” यहूदियों और ईसाईयों की निजासत के बारे में आप का क्या ख़्याल है क्या यह लोग वाकई नापाक है?”

उसने कहा: “हाँ यह दोनों फ़िर्के मसलन नाजिस हैं और मुसलमानों को उनसे दूर रहना चाहिये।”

मैंने पूछा: “इसकी वजह क्या है” ?

उसने जवाब दिया: “यह दरअसल मसावियाना सुलूक का मसअला है कि क्योंकि वह लोग भी हमें काफ़िर गर्दान्ते हैं और हमारे पैगम्बरअ० की तकज़ीब करते हैं।”

उसके बाद मैंने पूछा: “पैगम्बरे अकरम (सल्ललल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) की सफ़ाई से मुतअल्लिक इतनी ताकीदात के बाद कि सफ़ाई ईमान की अलामत है, फिर क्यों हज़रत अलीअ० के सहने मुतहर और तमाम बाज़ारों में इस कद्र गन्दगी फैली रहती है?”

मरज-ए-तक़लीद ने जवाब दिया: “बेशक इस्लाम ने सफ़ाई और सुथराई को ईमान की दलील जाना है मगर उसको क्या किया जाये कि उस्मानी हुकूमत के आमाल की बेतवज्जेही और पानी की किल्लत ने यह सूरत पैदा की है। “

दिलचस्प बात यह थी कि इस बनावटी मरजा तक़लीद की आमादगी और हाज़िर जवाबी नजफ़ के हकीकी मरजा तक़लीद के ऐन मुताबिक़ थी। फ़क़त उस्मानी



हुकूमत के आमाल की बेतवज्जेही की बात उसने अपनी तरफ से उसमें मिलाई थी क्योंकि नजफ़ के आलिम की ज़बान से यह जुमला नहीं सुनाया गया था। बहरहाल मैं इस हमआहंगी और मुशाबिहत पर सख्त मुतहय्यर था, क्योंकि तमाम जवाबात बईयेहनही अस्ल मरजा तकलीद के बयानात थे जिसे उसने फ़ारसी में पेश किया था और अकली मरजा भी फ़ारसी ही में गुफ्तगू कर रहा था।

सेक्रेट्री ने मुझसे कहा: “दीगर चार अफ़राद से भी चाहो तो सवाल कर सकते हो। यह चारों अफ़राद भी तुम्हें असली शख़िसयतों की तरह जवाब देंगे।”

मैंने कहा कि मैं इस्तनबोल के शेखुल इस्लाम अहमद आफ़न्दी के उफ़कार और बयानात से बखूबी वाकिफ़ हों और उसकी बातें मेरे हाफ़िज़े में महफूज़ हैं। आपकी इजाज़त से मैं उसके हमशक़ल से गुफ्तगू करूंगा। उसके बाद मैंने पूछा “आफ़न्दी साहब।” क्या उस्मानी खलीफ़ा की इताअत वाजिब है?”

उसने कहा: “हाँ मेरे बेटे। उसकी इजाज़त खुदा, और उसके रसूलअ० की इताअत की तरह वाजिब है। “

मैंने पूछा: “किस दलील की बुनियाद पर?”

उसने जवाब दिया: “क्या तुमने यह आयते करीमा नहीं सुनी है कि: खुदा, उसके रसूल (सल्ललल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) और उलुल उम्र की इताअत करो।” (सूर-ए-निसा आयत 59)

मैंने कहा: “अगर हर खलीफ़ा उलुल अम्र है तो गोया खुदा ने हमें यज़ीद की इताअत की भु हुक्म दिया है क्योंकि वह उस वक़्त का खलीफ़ा था दरआंहालिया कि उसने मदीने की ताराजी का हुक्म दिया था और सिब्ते रसूलअ० हज़रत इमाम हुसैनअ० को क़त्ल किया था। खुदा वन्दे अलीम किस तरह वलीद की इताअत का हुक्म देगा जबकि वह शराबख़ोर था।”

नक़ली शेखुल इस्लाम ने जवाब दिया: “मेरे बच्चे।” यज़ीद अल्लाह की तरफ़ से मोमिनों का अमीर था, लेकिन क़त्ले हुसैनअ० में उससे ख़ता हो गयी थी जिसके लिये बाद में उसने तौबा कर ली थी। मदीने में क़त्ल व ग़ारतगरी का सबब वहां के लोगों की सरकशी और यज़ीद की इताअत से इन्हेराफ़ था जिसमें यज़ीद का कोई कसूर नहीं था। अब रह गया वलीद तो इसमें शक नहीं कि शराब पीता था, लेकिन शराब में पानी मिला कर पीता था ताकि उसकी मस्ती ख़त्म हो जाये और यह इस्लाम में जाएज़ है।” (शराबख़ोरी इस्लाम में मुतलक़म ह़राम है और यह हुरमत किसी शर्त से नहीं टूटती)

मैंने कुछ अर्से क़ब्ल इस्तनबोल में हुरमते शराब से मुतअल्लिक मसअले को वहां के शेखुल इस्लाम शेख अहमद से दरियाफ़्त कर लिया था। इसका जवाब थोड़े से इख़्तिलाफ़ के साथ लंदन के उस नक़ली शेखुल इस्लाम के जवाब से मिलता जुलता था। मैंने अस्ल से नक़ल की ऐसी शबाहत तैयार करने की कोशिशों को सराहते हुए सेक्रेट्री से पूछा: “आखिर इस काम से क्या फ़ायदा हो सकता है?”

उसने जवाब दिया: “इस तरह हम बादशहों और सुन्नी ओलमा के उफ़कार और उनके मीलाने तबअ से आशनाई हासिल करते हैं। फिर इन मकालमात को परखा जाता है और उनसे नताएज अखज़ किये जाते हैं और फिर हम इलाके के दीनी और सियासी मसाएल में दखल अन्दाज़ी करते हैं मसलन अगर हमें यह मालूम हो जाये कि फलां आलिम या फ़लां बादशाह इलाके की मशरकी सरहदों में हमसे मुखासिमत पर उतर आया है तो हम उसके अमल को नाकारा बनाने के लिये हर तरफ़ से अपनी तवानाईयों को उस सिमत में मरकूज कर देते हैं, लेकिन अगर हमें न मालूम हो कि हमारा हकीकी दुश्मन किस मक़ाम पर सरगरमे अमल है तो फिर हमें अपनी तवानाईयों को इलाके के चप्पे चप्पे में फैलाना पड़ता है। मजकूरा अमल हमें इस बात में भी मदद देता है कि हम इस्लाम के अहकाम व फ़रामीन से एक फ़र्द मदद देता है कि हम इस्लाम के अहकाम व फ़रामीन से एक फ़र्द मुस्लिम के तर्ज इस्तेनबात को समझें और उसके ज़ेहन में शक और तज़बज़ुब पैदा करने के लिये ज़्यादा वाजेह और ज़्यादा मिन्तकी मतालिब फ़राहम करें और उसके अक्राएद को बातिल करार दें। इख़्तिलाफ़ात, तफ़रिके, गड़बड़ और मुसलमानों के अक्राएद में तज़लजुल पैदा करने के लिये इस तरह के इक्रदामात बेइन्तेहा मोसिर पाये जाते हैं। इसके बाद सेक्रेट्री ने मुझे एक हज़ार सफ़हों पर मुश्तमिल एक ज़खीम किताब मुतलिये के लिये दी। उस किताब में असली और नकली अफ़राद की गुफ़्तगू और मुनाकिशात के तजज़िये और मुक़ाबिलों के नताएज से

मुतअल्लिक आदाद व शुमार दर्ज थे और मुझे हासिल शुदा नताएज की बुनियाद पर इस्लामी दुनिया में फौजी, माली, तालीमी और मज़हबी मसाएल से मुतअल्लिक हुकूमते बरतानिया के मुरतब शुदा प्रोग्रामों से वाकफ़ियत हासिल करना थी। बहरहाल मैं किताब घर ले गया और तीन हफ़्ते के अर्से में बड़ी तवज्जो के साथ शुरु से आखिर तक उसका मुतालिआ किया और मुकरर्रा मुद्दत में नोआबदयाती इलाकों की विज़रत को वापस दे आया। किताब वाकई बड़ी मेहनत से तैयार की गयी थी। उसमें साहिबाने इल्म, साहिबाने सियासत और इस्लाम की दीनी शख़ियतों के अक्राएद व नज़रियात के बारे में इस ख़ूबी से बहस की गयी थी और नतीजा अख़ज़ किया गया था, कि पढ़ने वाला दंग रह जाता था। सत्तर फ़ीसद मुबाहिसे हकीकत पर मिन्तकी थे जबकि 30 फ़ीसद में इख़्तिलाफ़ था। किताब के मुतालिये के बाद मुझे इत्मिनान हो गया कि मेरी हुकूमत यकीनन् अपने अमल में कामयाब होगी और मज़कूरा किताब की पेशगोई के मुताबिक़ सल्तनते उस्मानी एक सदी से कम अर्से में बहरहाल ख़त्म हो जायेगी।

सेक्रेट्री से मिलने के बाद मुझे यह बात मालूम हो गयी कि नोआबादयती इलाकों की विज़रत में दुनिया के तमाम मुमालिक के लिये ख्वाह वह इस्तेमारी हों या नीम इस्तेमारी इस तरह की शबीहसाज़ी या नक़ली रूप का अमल बरुयेकार लाया गया है और इन तमाम मुमालिक को पूरी तरह इस्तेमार के शिकंजे में जकड़ने के इन्तेज़ाम मुकम्मल किये गये हैं।

सेक्रेट्री ने अपनी गुफ्तगू के दौरान मुझसे कहा था कि यह वह पहला राज है जिसे उसने वज़ीर के हुक्म के मुताबक मुझे बताया है मगर दूसरे राज को वह मज़कूरा किताब कू दूसरी जिल्द के मुतालिये पर एक माह बाद मुझे बतायेगा।

मैंने दूसरी किताब लेकर उसका मुतालिआ शुरु किया।

मैंने दूसरी किताब लेकर उसका मुतालिआ शुरु किया। यह किताब पहली किताब को मुकम्मल करती थी। इसमें इस्लामी मुमालिक से मतअल्लिक नई इत्तिलाआत जिन्दगी के मुख्तलिफ़ मसाएल में शिया सुन्नी अकाएद व उफ़कार जो हुक्मत की मसाएल में शिया सुन्नी अकाएद व उफ़कार जो हुक्मत की कमज़ोरी या तवानाई को ज़ाहिर करते थे और मुसलमानों की पसमान्दगी के असबाब व अलल वगैरा पर गुफ्तगू थी। इस किताब में उन मौजूआत पर बड़ी सेर हासिले बहत की गयी थी और मुसलमानों के कमज़ोर पहलुओं या ताक़त के ज़राए को नुमायां किया गया था और उनसे अपने हक़ में फ़ायदा उठाने की तदाबीर समझाई गय थी। इस किताब में मुसलमानों की जिन कमज़ोरियों की तरफ़ इशारा किया गया था वह यह थी।

1. (अ) शिया सुन्नी इख़्तिलाफ़

(ब) हुक्मरानों के साथ कौमों के इख़्तिलाफ़ात।

(स) ईरानी और उस्मानी हुक्मतों के इख़्तिलाफ़ात।

(द) कबाएली इख़्तिलाफ़ात।

- (ज) ओलमा और हुकूमत के ओहदादारों के दरमियान ग़लत फ़हमियां।
2. तक़रीबन तमाम मुसलमान मुल्कों में जेहालत और नादानी की फ़रावनी।
  3. फ़िक्री जमूद और तअस्सुब, रोज़ाना के हालात से बेख़बरी, काम और मेहनत की कमी।
  4. माद़ी जिन्दगी से बेतवज्जेही, जन्नत की उम्मीद में हद से ज़्यादा इबादत जो इस दुनिया में बेहतर जिन्दगी के रास्तों को बन्द कर देती थी।
  5. खुदसर फ़रमांवाओं के जुल्म व इस्तेबदाद।
  6. अम्न व अमान का फुक़दान, शहरों के दरमियान सड़कों और रास्तों का फुक़दान, इलाज मुआलिजे की सहूलतों और हिफ़ाज़ाने सेहत के उसूलों का फुक़दान जिसकी बिना पर ताऊन या इस जैसी मुतअद्वी बीमारियों से हर साल आबादी का एक हिस्सा मौत की नज़र हो जाता।
  7. शहरों की वीरानी, आबपशी के निज़ाम का फुक़दान, ज़राअत और खेती बाड़ी की कमी।
  8. हुकमती दफ़तरों में बदइन्तेज़ामी और कायदे क़वानीन का फुक़दान, कुरआन और अहकामे शरीअत के एहतेराम के बावजूद अमली तौर पर उससे बेतवज्जेही।
  9. पसमान्दा और ग़ैर सेहतमन्दाना इक़तिसाद। पूरे इलाके में आम गुरबत और बीमारी का दूर दौरा।

10. सही तरबियत याफ़्ता फ़ौजों का फुक़दान, असलहा और दिफ़ाई साज़ो सामान की कमी और मौजूदा असलहों की फ़रसूदगी।

11. औरतों की तहक़ीर और उनके हकूक़ की पामली।

12. शहरों और देहातों की गन्दगी, हर तरफ़ कूड़े करकट के अम्बार, सड़कों, शाहेराहों और बाज़ारों में अशियाए फ़रोख़्त के बेहंगम ढेर वगैरा।

मुसलमानों के इन कमज़ोर पहलुओं को गिनवाने के बाद किताब ने इस हकीक़त की तरफ़ भी इशारा किया था कि शरीयते इस्लाम का क़ानून मुसलमानों की इस तर्ज़ ज़िन्दगी से रती बराबर मेल नहीं खाता, लेकिन यह बात ज़रूरी है कि मुसलमानों को इस्लाम की हकीकी रुह से बेख़बर रखा जाये और हक़ाएक़े दीन तक न पहुँचने दिया जाये। इस के बाद किताब ने बसूरते फ़ेहरिस्त उन अवामिर व अहक़ामात की तरफ़ भी इशारा किया था जो दीने इस्लाम के उसूल व मबानी को जाहिर करते थे और उनकी सूरत यह थी।

1. वहदत, दोस्ती और भाई चारा की ताकीद और तफ़रिक्के से दूरी। (सूर-ए-आले इमरान आयत 103)

2. तालीम व तरबियत की ताकीद। (हदीस)

3. जुसत्जू और इब्तेकारी की ताकीद (सूर-ए-आल इमरान आयत 201)

4. माद़ी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने की ताकीद (सूर-ए-बकरा आयत 201)

5. जिन्दगी के मसाएल में लोग से राय मशविरे की ताकीद। (सूर-ए-शूरा आयत 38)
6. शाहेराहें बनाने की ताकीद (सूर-ए-मुल्क आयत 15)
7. हदीसे नबवीस0 की बुनियाद पर तन्दरुस्ती मुआलिजे की ताकीद।
- (अ) इल्मे फिकह, दीन की हिफ़ाज़त के लिये।
- (ब) इल्मे तिब, बदन की हिफ़ाज़त के लिये।
- (स) इल्मे नहो, ज़बान की हिफ़ाज़त के लिये
- (द) इल्मे नुज़ूम, ज़माने की पहचान के लिये (हदीस)
8. आबादकारी की ताकीद । (सर-ए-बकरा आयत 29)
9. अपने कामों में नज़म व तरबियत। (हदीस)
10. मुआशी इस्तेहकाम की ताकीद। (हदीस)
11. जदीद तरीन असलहा और जंगी साज़ो सामान से लैस फ़ौज़ी तंज़ीम की ताकीद। (सूर-ए- इन्फ़ाल आयत 60)
- 12- जदीद तरीन असलहा और जंगी साज़ों सामान से लैस फ़ौज़ी तंज़ीम की ताकीद। (सूर-ए-इन्फ़ाल आयत 60)
12. औरतों के हुक्क की हिफ़ाज़त और उसके एहतेराम की ताकीद (सूर-ए-बकरा आयत 228)



इन अवामिर के तज़किरे के बाद किताब अपने दूसरे बाब में इस्लाम के ताक़त व कुव्वत के सरजशमों और मुसलमानों की पेशरफ्त के असबाब पर रौशनी डालती है और उन्हें तबाही से दो चार करने के लिये तरक्की व तकामुल की राहों के खिलाफ़ इक़दामात को नोआबादयाती इलाक़ों की विज़रात का नुक्ता आगाज़ की करार देती है और वह तरक्की व तकामुल की राहें यह थी:

1. रंग व नस्ल, ज़बान, तहज़ीब व तमद्दुन और क़ौमी तअस्सुबात को खातिर में न लाना।
2. सूद, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी, अदअमली, शराब और सूअर के गोशत वग़ैरा की मुमानिअत।
3. ईमान व अक़ीदा की बुनियाद पर ओलमा-ए-दीन से शदीद मोहब्बत और वाबस्तगी।
4. मौजूदा ख़लीफ़ा की निस्बते आम्मतुल मुस्लेमीन का एहतेराम मोहब्बत और यह अक़ीदा कि वह पैग़म्बरस० का जानशीन और उलुल अम्र है जिसकी बिना पर उसके अहकामात की बजाआवरी ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) के अहकामात की बजाआवरी है।
5. कुफ़्फ़ार के खिलाफ़ वजूबे जेहाद।
6. ग़ैर मुस्लिमों की नापाकी पर मब्नी अहले तशय्यो का अक़ीदा।

7. तमाम अदयान और मज़ाहिब पर इस्लाम की बालादस्ती का एतकाद (हदीस)
8. इस्लामी सरज़मीन पर यहूदी और नसरानी इबादताहों की तामीर के बारे में शिया हज़रात की मुमानिअत।
9. जज़ीरतुल अरब से तमाम यहूदियों और नसरानियों के इनखेला पर अकसर मुसलमानों का इतिफाक।
10. इश्तियाक के साथ नमाज़, रोज़ा और हज के फ़राएज़ की अंजामदेही मदावमत।
11. खुम्स की अदायगी के बारे में अहले तशय्यो का अकीदा और ओलमा की तरफ से मुस्तहकीन को उस रक़म की तकसीम।
12. ईमान व इखलास के साथ इस्लाम के दीनी अक्राएद से दिलचस्पी।
13. घरेलू इस्तेहकाम के बुनियादी मक़सद के साथ बच्चों और नौजवानों की रवायती तालीम व तरबियत और बच्चों के साथ वालदैन के दायमी इरतेबात की ज़रूरत व अहमियत का रुजहान।
14. औरतों को परदा की ताकीद जो उन्हें ग़ैर शरई रवाबित और बदअमलियों से रोकती है।
15. नमाज़े जमाअत का इस्तेहबाब और हर जगह के लोगों का दिन में कई मर्तबा एक मस्जिद में इकट्ठा होना।

16. पैगम्बरे अकरमस0, अहलेबैतअ0 और सुलहा की ज़ियारतगाहों की ताज़मी और उन मक़ामात को मुलाक़ात और इज्तेमाअ के मराकज़ करार देना।

17. सादात का एहतेराम और रसूले अकरमस0 का इस तरह तज़क़िरा करना गया वह अभी ज़िन्दा हैं और दुरुद व सलाम के मुस्तहक हैं।

18. शियों की तरफ़ से अज़ादारी का इंफ़ेकाद खास तौर पर मोहर्रम और सफ़र को अज़ीम इज्तेमाआत और उनमें ओलमा व जाकेरीन कु मुन्तज़िम तक़रीरें जो यकीनन मुसलमानों के ईमानी इस्तेहकाम में एक नाक़बिले इन्कार असर छोड़ जाती है और उन्हें नेक चाल चलन पर उभीरती है।

19. इस्लाम अहम उसूलों को उन्वान से अम्र बिलमारुफ़ और नेही अनिल मुन्कर का वुजूब।

20. शादी ब्याह, कसरते औलाद और ताअद्दे अज़वाजव का मुस्तहब होना।

21. काफ़िरों की हिदायत पर इतना ज़ोर कि अगर कोई किसी काफ़िर को मुसलमान करे तो यह काम उसके लिये तमाम दुनिया की दौलत से मुफ़ीद होगा।

22. नेक अमल अंजाम देने की अहमियत: “जो कोई किसी नेक अमल की पैरवी करेगी उसके लिये दो जज़ायें मख़सूस हैं। एक खुद उस नेक अमल की अपनी जज़ा और दूसरे नेक अमल को अंजाम देने की जज़ा।” (हदीस)

23. कुरआन व हदीस का बेइन्तहा पास व एहतेराम और सवाबे आख़रत के लिये उन पर अमल पैरा होने की शदीद ज़रूरत।

इस्लाम के उन सरचश्मे हाये कुच्चत के तजकिरे के बाद किताब के अगबे अबवाव में दियानत के उन मोहकम सुतूनों को कमजोर बनाने के अमली रास्तों पर मोहकम दलीलों के साथ गुप्तगू की गयी थी। उसके बाद बसूरते फ़ेहरिस्त इन इक़दामात की ताक़ीद थी जिनके ज़रिये इस्लामी दुनिया को कमजोर बनाया जा सकता था और वह यह थी:

1. बदगुमानी और सूए तफ़ाहुम के ज़रिये शिया और सुन्नी मुसलमानों में मज़हबी इख़्तिलाफ़ात पैदा करना और दोनों गिरोहों की तरफ़ से एक दूसरे के खिलाफ़ एहानत आमेज़ और तोहमत अंगेज़ बातें लिखना और निफ़ाक़ व तफ़रिक्के के इस सूदमन्द प्रोग्राम को रु बा अमल लाने के लिये भारी अख़राजात की हरगिज़ परवा न करना।

2. मुसलमानों को जेहालत और लाइल्मी के आलम में रखना। किसी तालीमी मरकज़ के क़याम की कोशिश को कमयाब न होने देना। तबाअत और नश्र व अशाअत पर पाबन्दी आयद करना और ज़रूरत पड़े तो अवामी किताब ख़ानों को नज़रे आतिश करना। बच्चों को दीनी मदारिस में जाने से रोकने के लिये ओलमा और मराजे दीनी पर तोहमतें लगाना।

3. काहिली फैलाने और ज़िन्दगी की जुस्तजू से मुसलमानों को महरुम करने के लिये मौत के बात की दुनिया में रंग आमेज़ी और जन्नत की ऐसी तौसीफ़ बयान करना कि वह मुजस्सम बन कर लोगों के ज़ेहन पर क़ल्ब पर छा जाये और वह

उसको हासिल करने के लिये अपनी मआशी तग व दो से दस्तबरदार हो जायें और मलकुल मौत के इन्तेज़ार में बैठे रहें।

4. हर तरफ़ दरवेशों की खांक्राहों का फैलाओ और ऐसी कितबों और रिसालों की तबाअत जो लोगों को दुनिया व माफ़िहा से बरगशता करके उन्हें मरदुम बेज़ारी और गोशा नशीनी की तरफ़ माएल करें जैसे गज़ाली की अहयाउल उलूम, मौलाना रोम की तसनवी और महियुद्दीन अरबी की किताबें वगैरा

5. मुस्तबिद और खुदख्वाह हुक्मरानों की हक्कानियत के सुबूत में मुख्तलिफ़ अहादीस की अशाअत मसलन: “बादशाह ज़मीन पर अल्लाह का साया है।” या फिर यह दावा कि हज़रत अबूबकर, उमर, उस्मान और अलीअ0, बनी उमय्या और बनी अब्बास सब के सब बिलजहर तलवार के ज़ोर से हुक्मत के मनसब पर फ़ाएज़ हुए और बज़ोरे शमशीर हुक्मरानी या सक्रीफ़ा की कार्रवाई को एक तमाशे की सूरत में पेश करना दलाएल क़ायम करना जैसे हज़रत अली (अलैहिस्सलाम) के तरफ़दारों खास तौर पर आप की जौजा हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (अलैहिमुस्सलाम) का घर जलाना नेज़ यह साबित करना कि:

(1) हज़रत उमर कि खिलाफ़त, ज़ाहेरन हज़रत अबूबकर की वसीयत और बातेनन मुखालेफ़ीन को डरा धमका कर अमल में आई।

(2) हज़रत अली (अलैहिस्सलाम) की मुखालिफ़त की बुनियाद पर हज़रत उस्मान के इन्तेखाब में एक ड्रामाई शुरा की तश्कील, जो बिलआख़िर मुखालिफ़त, शोरिश, खलीफ़ा सोम के क़त्ल और हज़रत अलीअO की ख़िलाफ़त पर मुन्तिही हुई।

(3) मक्रों हीला और शमशीर के ज़रिये माविया का बरसरे इक़्तिदार आना और इसी सूरत में उसके जानशीनों का इस्तेकरार।

(4) अबू मुस्लिम की क़यादत में सफ़्फ़ाह की मुसल्लह शोरिश और बज़ोरे शमशीर ख़िलाफ़ते बनी अब्बास का क़याम।

(5) हज़रत अबूबकर से लेकर उस्मानियों की हुक्मरानी के इस दौर तक तमाम खोलफ़ाए इस्लाम आमिर थे और यह कि

(6) निज़ामे इस्लाम में हमेशा आमरियत का दौर दौरा रहा है।

6. रास्तों में अदअम्नी के असबाब फ़राहम में फ़ितना व फ़साद बरपा करना और गुण्डों फ़सादियों और झकूओं की पुश्तपनाही करना और उन्हें असलहा और रक़म फ़राहम करके उनकी तश्वीक़ करना।

7. हिफ़ज़ाने सेहत की कोशिशों के आड़े आना और जबरी और कुदरती उफ़कार को तरजीह देना और यह बताना कि हर चीज़ अल्लाह की तरफ़ से है। बीमारी भी अल्लाह की देन है और इसका इलाज बेसूद है। इस सिलसिले में यह आयत पेश करना: "वही है जो मुझे खाना देता है और प्यास की हालत में सेराब करता है और जब मैं बीमार होता हूँ तो मुझे तन्दुरुस्ती अता करता है" (सूर-ए-शोअरा

आयत 81) शिफ़ा अल्लाह के हाथ में है। मौत और हयात भी उसके क़बज़-ए-कुदरत में है। बीमारी से शिफ़ायाबी और मौत से रेहाई उसकी मशीयत और उसके इरादे के बग़ैर क़तई नामुम्किन है और यह तमाम रुनुमा होने वाले वाक़िआत क़ज़ाए इलाही है।

8. इस्लामी मुमालिक को फ़क़रो फ़लाकत में बाक़ी रखना और उनमें से किसी किस्म का तग़य्युर व तबद्दुल या इस्लाह अमल को जारी न होने देना।

9. फ़ितना व फ़साद और हंगामा आराईयों को हवा देना और इस अक़ीदा को लोगों में राख़िस कना कि इस्लाम महज़ इबादत और परहेज़गारी का नाम है और दुनिया और उसके उमूर से उसको कोई वास्ता नहीं। हज़रत ख़तमी मरतब (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) और उनके जानशीनों ने कभी इन मसाएल में पड़ने की कोशिश नहीं की और सियासी और इक़तिसादी तंज़ीम से कोई सरोकार नहीं रखा।

10. ऊपर दिये हुए उमूर पर तवज्जो इक़तिसादी बदहाली और ग़ुरबत व बेकारी में इज़ाफ़ा का बाइस होग मगर इसके साथ साथ पासमान्दगी में इज़ाफ़ा करने के लिये ज़रूरी है कि किसानों के ग़ल्ले के ढेरों को नज़रे आतिश किया जाये, तिजारती कश्तियां डिबो दी जायें. तिजारती ज़हाज़ और सनअती मराक़ज में बड़े पैमाने पर आग भड़काई जाये। दरियाओं के बन्द तोड़ कर बस्तियां वीरान की जायें

और पीने के पानी को ज़हर आलूद बनाया जाये ताकि इस लिहाज़ से इलाके वालों की पसमान्दगी और फ़क्र व फ़लाकत का सामान फ़राहम किया जा सके।

11. इस्लामी हुक्मरानों के मिज़ाज को बदला जाये और उनमें शराब नोशी, जूए बाज़ी और दीगर अखलाकी बुराईयाँ पैदा की जायें। क़ौमी ख़जाने में ख़ुर्द बुर्द और लूट घसोट की ऐसी सूरत पैदा की जाये कि उनके पास अपने दिफ़ा, मुलकी मईशत और तरक्कियाती उमूर के लिये कोई रक़म बाकी न रहे।

12. “मर्द औरतों पर हाकिम हैं।” (सूर-ए-निसा आयत 34) की आयत या “औरतें बदी का पुतला हैं।” की हदीस के सहारे औरतों की तौहीन व तहक़ीर और कनीज़ी का प्रचार किया जाये।

13. इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमानों की शहरी और गन्दगी का सबसे बड़ा सबब उन इलाकों में पानी की कमी है और हमें चाहिये कि हम हर मुम्किन तरीके से गंजान आबाद इलाकों में पानी की फ़रावानी रोक दें ताकि उन इलाकों में ज़्यादा कसरत से गन्दगी में इजाफा हो।

किताब के एक और बाब में मुसलमानों की कुव्वत व ताक़त को तोड़ने और उन्हे कमज़ोर बनाने के दीगर उसूलों पर भी गुफ़्तगू की गई थी जो दिलचस्पी से खाली नहींः

1. ऐसे उफ़कार की तरवीज जो क़ौमी, क़बाएली और नसली असबियतों को हवा दें और लोगों को गुज़िश्ता क़ौमों की तारीख़ ज़बान और सक़ाफ़ात की तरफ़ शिद्दत



से माएल करें और वह मा कब्ल इस्लाम की तारखी शख्सियतों पर फ़रीफ़ता हो जायें और उनका एहताराम करें। मिस्र में फ़िरऔनियत का अहिया, ईरान में दीन ज़रोतशत और बैनुल नहरैन में बाबुल की बुत परस्ती इन ही की मिसालें हैं। किताब के इस हिस्से में एक बड़े नक़शे का भी इज़ाफ़ा किया गया था जिसमें उन मराक़ज की निशानदेही की गयी थी जिनमें साबिकुज़ ज़िक्र खुतूत पर अमल दरामद हो रहा था।

2. शराब खोरी, जुए बाजी, बदफ़ेली और शहवतरानी की तरवीज, सूअर के गोशत के इस्तेमाल की तरगीब, इन कारगुज़ारियों में यहूदी, नसरानी, ज़रोतशी और साबई अक्लियतों को एक दूसरे के साथ हाथ बटाना चाहिये और इन बुराईयों को मुसल्लम मुआशिरे में ज़्यादा से ज़्यादा फ़रोग देना चाहिये जिनके एवज़ नोआबादयाती इलाक़ों की विज़ारत उन्हें इनाम व इकराम ने नवाज़ेगी। इस काम के लिये मुतअद्दिद अफ़राद की ज़रूरत है जो किसी भी मौक़े को हाथ से न जाने दें और शराब, जुआ, फ़ोहश और सूअर के गोशत को जहाँ तक हो सके लोगों में मक़बूल बनायें। इस्लामी दुनिया में अंग्रेज़ी हुकूमत के कारिन्दों का यह फ़रीज़ा था कि वह माल व दौलत, इनाम व इकराम और हर मुनासिब तरीके से इन बुराईयों की पुशतपनाही करें और इन पर आमिल अफ़राद को किसी तरह का गुज़िन्द न पहुँचने दें और मुसलमानों को इस्लामी अहकामात और उसके अवामिर व नवाही से रुगरदानी की तरगीब दें क्योंकि अहकामे शरअ से बेतवज्जेही मुआशिरे में

बदनज़मी और अफ़रा तफ़री का सबब होती है। मिसाल के तौर पर कुरआन मजीद में सूद की शिद्दत से मज़म्मत की गयी है कि और उसका शुमार गुनाहाने कबीरा में होता है। पर लाज़िम है कि हर हाल में सूद और हराम सौदे बाज़ी को आम करने की कोशिश की जाये और इक्तिसादी बदहाली को मुकम्मल तौर पर मुजमहिल बनाया जाये। इस काम के लिये ज़रूरी है कि सूद की तहरीम से मुतअल्लिक आयात की ग़लत तफ़सीर की जाये और इस उसूल को पेशेनज़र रखा जाये कि कुरआन के एक हुक्म से सरताबी इस्लाम के तमाम अहकाम से रुग़र्दानी की जरूअत का आईनादार होती है। मुसलमानों को यह समझाने की ज़रूरत है कि कुरआन ने जिस सूद को मना किया है वह सूद मरकब (या सूद दर सूद) है वगर न आम सूद में कोई क़बाहत नहीं है। कुरआन कहता है “अपने माल को कई गुना करने की खातिर सूद न खाओ।” (सूर-ए-आले इमरान आयत 130) इस बिना पर आम हालत में सूद हराम नहीं है।

3. 4. ओलमा-ए-दीन और अवाम के दरमियान दोस्ती और एहतेराम की फ़िज़ा हर मुलाज़िम को याद रखना चाहिये। इस काम के लिये दो बातों पर इल्ज़ाम तराशी करना।

अ. ओलमा व मराजे पर इल्ज़ाम तराशी करना।

ब. नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत से मुन्सलिक बाज़ अफ़राद को ओलमा-ए-दीन की सूरत में देना और उन्हें अल अज़हर यूनिवर्सिटी, नजफ़, कर्बला और

इस्तनबोल के इल्मी और दीनी मराकज़ में उतारना, ओलमा-ए-दीन से लोगों का रिश्ता तोड़ने के लिये एक रास्ता यह भी है कि बच्चों को नोआबादयती इलाकों की विज़ारत के प्रोग्रामों के मुमताबिक़ तरबियत दी जाये। इस काम के लिये ऐसे असातज़ा की ज़रूरत है जो हमारे तंख्वाहदार हों ताकि वह जदीद उलूम की तदरीस के ज़िम्न में नौजवानों को ओलमा-ए-दीन और उस्मानी खलीफ़ा से मुतनफ़र करें और उनकी अखलाकी बुराईयों और जुल्म व ज़ियातियों को बड़ी आब व ताब के साथ बयान करें और यह बतायें कि वह किस तरह क़ौमी सरमाये को अपनी अय्याशियों की नज़र करते हैं और उनमें से किसी पहलू से इस्लामी झलक नहीं पाई जाती।

5. वुजूबे जेहाद के अक़ीदे में तज़लजुल पैदा करना और यह साबित करना कि जेहाद सिर्फ़ सदरे इस्लाम के लिये था ताकि मुखालेफ़ीन की सरकूबी की जाये मगर आज इसकी क़तअन ज़रूरत नहीं है।

6. काफ़िरों की पलीदी और निजासत से मुमतअल्लिक़ मौजूअ जो ख़ास तौर पर शिया हज़रात का अक़ीदा है, इन मसाएल में से है जिसे मुसलमानों के ज़ेहन से खारिज होना चाहिये और उसके लिये कुरआन और हदीस से मदद लेने की ज़रूरत है। मिसाल के तौर पर यह आयत जिसमें कहा गया है कि “अहले किताब जो खाना खाते हैं वह तुम पर हलाल है और जो तुम खाते हो वह उन पर हलाल है और पाक़ दामन मोमिन औरतें और पाक़दामन अहले किताब (यहूद व नसारा)

औरतें तुम पर हलाल हैं।” (सूर-ए-मायदा आयत 5) क्या रसूले खुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) ने सफिया और मारिया नामी यहूदी और मसीही औरतों से शादी नहीं की थी? और क्या यह कहा जा सकता है कि (नऊजोबिल्लाह) रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) की बीवियाँ नाजिस थीं?

7. मुसलमानों को यह बात समझनी चाहिये कि दीन से हज़रत खत्मी मरतबत (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) की मुराद सिर्फ़ इस्लाम नहीं बल्कि जैसा कि कुराने हकीम से भी साबित है दीन में अहले किताब यानि यहूद व नसारा भी शामिल है. और तमाम अदयान के पैरोकार को मुसलमान कहा जायेगा। कुरआन मजीद में हज़रत युसुफ़ (अलैहिस्सलाम) खुदा से दुआ करते हैं कि इस दुनिया से मुसलमान जायें। (सूर-ए-युसुफ़ आयत 12) हज़रत इब्राहीम व इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की भी यही तमन्ना है कि “परवर दिगार हम दोनों को मुसलमानों के ज़मरे में और हमारे खानदान को उम्मत मुस्लिमा करार दे।” (सूर-ए-अलबकरा आयत 128) हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) अपने फ़रज़न्दों से कहते हैं “न मरना मगर हालते इस्लाम में।” (सूर-ए-आले इमरान आयत 102)

8. दूसरा अहम मौज़ू कलिसाओं और कनीसाओं की तामीरात के असबाब से मुतअल्लिक है। कुरआन, हदीस और तारीखे इस्लाम की रोशनी में लोगों को यह बावर कराया जाये कि अहले किताब की इबादतगाहें मोहतरम हैं। कुरआन का इरशाद है: “अगर खुदा वन्दे आलम लोगों को मना न फ़रमाता तो लोग नसारा के

कलियाओं, यहूदियों के कनीसाओं और ज़दतशियों के आतिशकदों को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। (सूर-ए-हज आयत 40) इस आयत से यह हकीकत सामने आती है कि इस्लाम में इबादतगाहें मोहतरम हैं और इन्हें हरगिज़ नुकसान नहीं पहुँचाया जा सकता।

9. दीने यहूद से इन्कार पर मब्नी चन्द हदीसे जनाबे रिसालतमाब (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) से नक़ल की गयी है मसलन यहूदियों को ज़जीरतुल अरब से बाहर निकाल दो या ज़जीरतुल अरब में दो मुतफ़ादत अदयान की गुंजाइश नहीं। “हमें हर हाल में इन अहादीस की तरदीद करनी चाहिये और यह बताना चाहिये कि अगर यह अहादिस सही होती तो हज़रत ख़तमी मरतबतस० कभी यहूदी औरत से शादी न करते।”

10. लाज़िम है कि मुसलमानों को इबादत से रोका जाये और इसके वजूब के बारे में इनके दिलों में शुक्क पैदा किये जाये, खास तौर से इस नुके पर जोर दिया जाये कि खुदा वन्दे आलम बन्दों की इबादत से बेनियाज़ है। हज को एक बेहूदा अमल करार दिया जाये और मुसलमानों को शिद्धत के साथ मक्के जाने से रोका जाये। इस तरह मजालिस और इस सिलसिले के तमाम इज्तेमाआत पर पाबन्दी लगाई जाये। यह इज्तेमाआत हमारे लिये ख़तरे की घण्टी हैं और इन्हें शिद्धत के साथ रोकना ज़रूरी है। मसाजिद, आइम्म-ए-दीन (अलैहिमुस्सलाम) के मज़ारात, इमाम बारगाहों और मदरसों की तामीरात पर भी बन्दिश आयद की जाये।

11. खुम्स और गनाएम जंगी की तकसीम भी इस्लाम की तकवियत का एक सबब है। खुमस का तअल्लुक लेन देन, तिजारती और कारोबारी मुनाफे से नहीं है। मुसलमानों को इस बात से आगाह करने की ज़रूरत है कि इस मद में रकम की अदायगी पैगम्बर अकरम (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) और इमामों (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में वाजिब थी, लेकिन अब ओलमा-ए-दीन को इसका इख्तियार नहीं है कि वह लोगों से इस रकम को हासिल करे, खास तौर पर जब कि यह लोग इस रकम से ज़ाती फ़ायदे हासिल करते हैं और अपने लिये भेड़, बकरियाँ, गाये, घोड़े, बागात और महलात खरीदते हैं। इस एतबार से शरअन खुम्स की रकम उनके लिये जाएज़ नहीं है।

12. लोगों को बरगश्ता करने के लिये यह ज़ाहिर करने की ज़रूरत है कि इस्लाम फ़ितना व फ़साद और अबतरी और इख्तिलाफ़ात का दैन है और उसके सुबूत में इस्लामी मुमालिक में रुनुमा होने वाले वाक़िआत को पेश करना चाहिये।

13. अपने आपको तमाम घरानों में पहुँचा कर बाप, बेटों के तअल्लुकात इस हद तक बिगाड़ा जाये कि बुजुर्गों की नसीहत बेअसर हो जाये और लोग आमरियत की तहज़ीब व तमाद्दुन का शिकार हो जायें। इस सूरत में हम नौजवानों को उनके दीनी अक्वाएद से मुन्हरिफ़ करके उन्हें ओलमा से दूर रख सकते हैं।

14. औरतों की बेपरदगी के बारे में हमें सज़ी बलीग की ज़रूरत है ताकि मुसलमान औरतें खुद पर्दा छोड़ने की आरजू करने लगे। इस सिलसिले में हमें

तारीखी दलाएल व शवाहिद का सहारा लेकर यह साबित करना होगा कि पर्दा का रिवाज बनी अब्बास के दौर से हुआ और यह हरगिज़ इस्लाम की सुन्नत नहीं है। लोग रसूले अकरमस० की बीवियों को बगैर पर्दा देखते रहे हैं। सदरे इस्लाम की औरतें जिन्दगी के तमाम शोअबों में मर्दों के शाना बशाना रही हैं। इन कोशिशों के बारआवर होने के बाद हमारे साथियों का यह फर्ज है कि वह नौजवान नस्ल को मशरू रवाबित और अय्याशियों की तरगीब दें और इस तरह बुराईयों को इस्लामी मुआशिरे में रिवाज दें। ज़रूरी है कि गैर मुस्लिम मुआशिरे में पेश करें ताकि मुसलमान औरतें उन्हें देख कर उनकी तकलीद करें।

15. जमाअत का नमाज़ से लोगों को रोकने के लिये ज़रूरी है कि अइम्मा व जमाअत पर इल्ज़ाम तराशियां की जायें और उनके फ़सक़ फ़जूर पर मब्नी दलाएल पेश किये जायें ताकि लोग मुतनफ़र होकर उनसे अपना राबता तोड़ लें।

16. हमारी दुश्चारियों में से एक बड़ी दुश्चारी बुजुर्गाने दीन के मज़ारों पर मुसलमानों की हाज़री है। ज़रूरी है कि मुख्तलिफ़ दलाएल से यह साबित किया जाये कि क़ब्रों को अहमियत देना और उनकी अराइशात पर तवज्जो देना बिदअत और ख़िलाफ़े शरअ है और ख़तमी मरतबत (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) के ज़माने में मुर्दा परस्ती और इस किस्म की बातें राएज नहीं थी। आहिस्ता आहिस्ता उन क़ब्रों को मिस्मार करके लोगों उनकी ज़ियारत से रोका जाये। इस सिलसिले में एक मुफ़ीद प्रोग्राम यह भी है कि उन मराक़ज़ की

असलियत के बारे में लोगों को मुश्तबा किया जाये। मसलन यह कहा जाये कि हज़रत खतमी मरतब (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) मस्जिदे नबवी में मदफून नहीं है बल्कि अपनी वालिदा गिरामी की क़ब्र में सो रहे हैं और इसी तरह तमाम बुजूगाने दीन के बारे में कहा जाये कि वह उन मक़ामात पर नहीं है जिन मक़ामात को उनसे मंसूब किया गया है। हज़रत अबूबकर व उमर दोनों जन्नतुल बक़ी में मदफून हैं। हज़रत उस्मान की क़ब्र का कहीं पता नहीं है। हज़रत अली अलैहिस्सलाम की आरामगाह बसरा में है और वह क़ब्र जो नजफ़े अशरफ़ में मुसलमानों की ज़ियारतगाह हैं। दरअसल उसमें मगीरा बिन शोअबा दफ़न हैं। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का सरे अक़दस मस्जिदे “हन्नाना” में दफ़न है और आप के जिस्मे अक़दस की तदफ़ीन के बारे में सही इत्तिला नहीं है। काज़मैन की मशहूर ज़ियारतगाह में इमाम मूसा काज़िम (अलैहिस्सलाम) और इमाम मोहम्मद तकी (अलैहिस्सलाम) के बजाये दो अब्बासी ख़लीफ़ा दफ़न हैं। मशहद में इमाम रिज़ा (अलैहिस्सलाम) नहीं बल्कि हारुन रशीद दफ़न हैं। सामरा में भी इमाम अली नक़ी (अलैहिस्सलाम) और इमाम हसन असकरी (अलैहिस्सलाम) के बजाये अब्बासी ख़ोलफ़ा दफ़न हैं। हमें बक़ी के क़ब्रिस्तान के सिलसिले में कोशिश करनी चाहिये कि वह खाक के यकसां हो जाये और तमाम इस्लामी मुमालिक की ज़ियारतगाहें वीरानियों में बदल दी जायें।



17. खानदाने रिसालत से अहले तशय्यों की अक्रीदत व एहतेराम खत्म करने के लिये झूठे और बनावटी सादात पैदा किये जायें और इस काम के लिये हमें चन्द तंख्वाहदार अफ़राद की ज़रूरत है जो स्याह और सब्ज अमारियों के साथ लोगों में जाहिर हों और अपने आप को औलादे रसूल से निस्बत दें। इस तरह वह लोग जो उनकी हकीकत से वाकिफ़ हैं आहिस्ता आहिस्ता हकीकी सादात से बरगश्ता हो जायेंगे और औलादे रसूल पर शक करने लगेंगे। दूसरा काम हमें यह करना होगा कि हम हकीकी सादात और ओलमा-ए-दीन के सरों से उनके आमामे उतरवायें ताकि पैगम्बरे खुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) से वाबस्तगी का सिलसिला खत्म हो और लोग ओलमा का एहतेराम छोड़ दें।

18. इमाम हुसैन (अलैहिस्साल) की आज़ादरी के मराकज़ की गुमराही की राह रोकने और दीन को बदबख्ती और नाबूदी से बचाने के उन्वान से होना चाहिये। अपनी तमाम कोशिशों को बरुएकार लाकर लोगों को मजालिसे अज़ा में जाने से रोकने की कोशिश की जाये और अज़ादारी को बतदरीज खत्म किया जाये। इस काम के लिये इमाम बारगाहों की तामीर और ओलमा व ज़ाकेरीन के इन्तेखाब की शराएत को सख्त बनाया जाये।

19. आज़ाद ख्याली और चून व चरा वाली कैफ़ियत को मुसलमानों के इज़हान में रासिख करना चाहिये ताकि हर आदमी आज़ादाना तौर पर सोचने के काबिल हो और हर काम अपनी मर्जी से अंजाम दे। अम्र बिल मारुफ़ और नेहि अनिल मुन्कर

वाजिब नहीं। अहकामे शरीयत की तरवीज का अमल मतरुक होना चाहिये। अगर अम बिल मारुफ़ और नेहि अनिल मुन्कर को वाजिब समझा जाये तो यह काम बादशाहों का है। अवामुन्नास को इसमें कोई दखल नहीं।

20. नस्ल को कन्ट्रोल किया जाये और मर्दों को एक से ज़्यादा बीवी इख्तियार करने की इज़ाज़त न दी जाये। नये क़वानीन वज़अ करके शदी के मसअले को दुश्वार बनाये जाये मसलन किसी अरब मर्द को ईरानी औरत और ईरानी मर्द को अरब औरत से शादी की इज़ाज़त न दी जाये। इस तरह तुर्क, ईरानियों से शादी नहीं कर सकेंगे।

21. इस्लामी तालीम की आफ़कियत के मसअले को मोहकम दलाएल से रद किया जाये और यह बताया जाये कि इस्लाम उसूलन दीन हिदायत नहीं है बल्कि उसका तअल्लुक सिर्फ़ एक क़बीले और एक क़ौम से है जैसा कि कुरान ने इक़्रार किया है: “यह दीन तुम्हारी और तुम्हारे क़बीले की हिदायत के लिये है।” (सूर-ए-जखरिफ़ आयत 44)

22. मसाजिद, मदारिस, तरबियती मराकज़ और अच्छी बुनियादों पर कायम होने वाली तामीरात से मुतअल्लिक़ इस्लाम की तमाम सुन्नतों को कालइद्ग़ या कम अज़ कम महदूद कर दिया जाये। इस किस्म के उमूर का तअल्लुक ओलमा से नहीं बल्कि सरबराहाने ममलिकत से है और जब हुक्मतें इस किस्म का काम अंजाम देंगी तो अज़ खुद उनकी दीनी क़द्रों कीमत जाती रहेगी।

23. जरूरी है कि मुसलमानों के हाथों में मौजूद कुरआन में कमी बेशी करके लोगों को शक में मुब्तिला किया जाये। खास तौर पर कुफ़ार और यहूद व नसारा के बारे में तौहीन आमेज़ आयात नेज़ अम्र बिल मारुफ़ और जेहाद से मुतअल्लिक आयतों को कुरआन से हज़फ़ किया जाये और उन कुरानों को तुर्की और फ़ारसी ज़बानों में तर्जुमा करके बाज़ारों में लाया जाये। ग़ैर अरब मुस्लिम हुकूमतों को तरगीब दी जाये कि वह अपने अपने इलाकों में कुरान, अज़ान और नमाज़ को अरबी ज़बान में पढ़ने से परहेज़ करें। दूसरा मसअला अहादीस व रिवायत में तशकीक पैदा करना है और कुरान की तरह इसमें भी तहरीफ़ व तर्जुमे से काम लेना है।

मुख्तसर यह कि इसदूसरी किताब में भी मुझे बड़ी कारआमद चीज़ें दिखाई दी। इस किताब का नाम “इस्लाम को क्योंकिर सफ़हे हस्ती से मिटा जाये” रखा गया था। इस में वह बेहतरीन अमली प्रोग्राम मुस्तब थे जिन पर मुझे और मेर दीगर साथियों को काम करना था। इस किताब ने मुझ पर बड़ा असर कायम किया था। किताब के मुतलिये के बाद मैं इसे वापस करने नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत पहुँचा जहाँ दूसरी मर्तबा सेक्रेट्री से मेरी मुलाक़ात हुई। उसने मुझे मुखातिब करके कहा:

“जिन उमूर को तुम्हें अंजाम देना है इसमें तुम अकेले नहीं हो बल्कि तकरीबन पांच हज़ार सच्चे और खरे अफ़राद मुख्तलिफ़ गिरोहों की सूरत में तमाम

इस्लामी मुमालिक में तुम्हारी मदद के लिये आमदा है। नोआबदयाती इलाकों की विज़ारत का ख़्याल है कि वह काम की पेशरफ़्त के साथ साथ उन अफ़राद की तादाद में इज़ाफ़ा करके उन्हें एक लाख तक पहुंचा दे। जब भी हमें उस अज़ीम गिरोह की तशकील में कामयाबी हुई यक़ीनन हम तमाम आलमे इस्लाम पर छा जायेंगे और इस्लामी आसार को मुकम्मल तौर पर मिटा देंगे।”

इसके बाद सेक्रेट्री ने अपनी गुफ़्तगू जारी रखते हुए कहा:

“मैं तुम्हें यह खुशख़बरी देता हूँ कि हम आईन्दा एक सदी में अपनी मुराद को पहुंच जायेंगे और अगर आज हमारी नस्ल इस कामयाबी को न देख सके तो हमारी औलादें ज़रूर यह अच्छे दिन देखेंगी और यह ईरानी ज़रबुल मिस्ल कितनी मानी खेज़ है जिसमें कहा गया है: “कल दूसरो ने बोया हमने खाया। आज हम बो रहे हैं कल दूसरे खायेंगे।” जिस दिन भी अज़ीम बर्तानिया या (समन्दरों की मलका) को इस्लामी मुमालिक पर फ़तहमन्दी नसीब हुई दुनियाए मसीहत उन तमाम तकालीफ़ से निजात पा जायेगी जिसे वह बारह सदियों से बर्दाश्त कर रही है। मुसलमानों ने इस अर्से में हम पर बड़ी जंगें मुसल्लत की जिनमें सलीबी जंगें बतौर मिसाल हैं। यह जंगे बिल्कुल मुग़लों की यलगार की तरह बेमकसद थी कि जहाँ सिवाये क़त्ल व ग़ारतगरी, वीरानी व तबाही और लूट मार के कोई मक़स नहीं था लेकिन इस्लाम के खिलाफ हमारी जंग मुग़लों की तरह फ़ौज़ी कार्रवाईयों ओर क़त्ल व ग़ारतगरी पर मुन्हसिर नहीं है। हमें इस काम में जल्दी भी नहीं है।

अजीम बर्तानिया की हुकूमत इस्लाम को मिटाने के लिये पूरे मुतालिये के साथ आगे बढ़ेगी और बड़े सब्र व तहम्मुल के साथ अपने अजीम कामों को बरुएकार लायेगी और अपने मक़सद में कामयाब होगी अलबता हम ज़रूरी मवाक़े पर फ़ौजी कार्रवाईयों से भी दरेग नहीं करेंगे मगर यह इस सूरत में होगा जब हम इस्लाम हुकूमतों पर पूरी तरह छा जायेंगे और कुछ अनासिर हमारी मुखालिफ़त पर कमरबस्ता होकर मैदान में उतर आयेंगे। इस में कोई शक नहीं कि इस्तन्बोल के हुकमरान बड़ी होशमन्दी और फ़तानत के मालिक हैं और इतनी जल्द हमें अपने प्रोग्रामों में कामयाब नहीं होने देंगे लेकिन हमें अभी से मुतवस्सित तबक़े के बच्चों को उन स्कूलों में तरबियत देना है, जो हमने उनके लिये कायम किये हैं। हमें उन इलाक़ों में मुतअद्दिद चर्च भी बनाने हैं, शराब, जुआ और शहवतरानी को इस तरह फैलाना है कि नौजवान नस्ल दीन व मज़हब को भूल जायें। हमें इस्लामी मुमालिक के हुकमरानों के दरमियान इख़्तिलाफ़ात की आग भी हवा देना है। हर तरफ़ हरज मरज और फ़ितना व फ़साद का बाज़ार गर्म करना है। अरकाने हुकूमत और साहिबाने ईसाई औरतों के दाम में फंसाना है और उनकी महफ़िलों को उन परीवशों से रौनक बख़शना है ताकि वह आहिस्ता आहिस्ता अपने दीनी और सियासी इक़्तदार से हाथ धो बैठे। लोग उनसे बदज़न हो जायें और इस्लाम के बारे में उनका ईमान कमज़ोर हो जाये जिसके नतीजे में ओलमा, हुकूमत और

अवाम का इतिहाद टूट जाये और ऐसे हालात में जंग की आग भड़का कर हम उन मुमालिक में इस्लाम की जड़ बुनियाद उखाड़ फेंकेंगे।”

## आखिरकार नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत के सेक्रेट्री ने इस दूसरे

राज से भी पर्दा उठाया जिसका उसने मुझे वादा किया था और मैं शिदत से जिसके इन्तेज़ार में था और यह वह करारदाद थी जो हुकूमते बर्तानिया के आला ओहदेदारों ने मंजूर की थी। पचास सफ़हात पर मुश्तमिल यह करारदाद नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत की इस सियासत की आईनादार थी। जिसके ज़रिये इस्लाम और अहले इस्लाम को एक सदी के अन्दर अन्दर नाबूद करना था। इस रिसले की पेशीनगोई के मुताबिक़ इस अर्से के बाद इस्लाम सारी दुनिया से रुखसत हो जायेगी और सिर्फ़ तारीख़ में इसका नाम बाक़ी रह जायेगी। इस बात की सख़्ती से ताकीद की गयी थी कि 14 नुकाती करारदाद के मज़मून को सीग़-ए-राज में रखा जाये और यह किसी उन्वान से ज़ाहिर न होने पाये क्योंकि इस बात का ख़तरा था मुसलमानों को उसकी ख़बर हो जाये और वह इस की चाराजोई में उठ खड़े हों। ताहम मुख़्तसर तौर पर इसका मवाद कुछ यूँ था।

1. तजाकिस्तान, बुखारा, इरमिन्सतान, शुमाली खुरासान और मादरा अलनहर और रुस के जुनूब में वाक़ै मुस्लिम आबादियों पर इख़्तियार हासिल करने के लिये सल्तनत रुस से वसीअ पैमाने पर इश्तेराके अमल, इसके अलावा ईरान के सरहदी शहरों तुर्कीस्तान और आजर बायजान पर तसल्लुत हिसाल करने के लिये रुस के साथ इश्तेराके अमल।

2. इस्लामी हुकूमतों को अन्दरूनी और बैरूनी एकबार से पूरी तरह तबाह करने के लिये एक मुनज्जम प्रोग्राम की तश्कील मेरुस और फ्रांस के सलातीन के साथ इश्तेराके अमल।

3. उस्मानी और ईरानी हुकूमतों के दरीना तनाजेआत को हवा देना और उनके दरमियान क्रौमी और नस्ली इख्तिलाफात की आग भड़काना इराक और ईरान के इतराफ में आबाद कबीलों में कबाएली जंगें और शोरिशें पैदा करना। माकब्ल इस्लाम मजाहिब की तब्लीग हता कि ईरान, मिस्र और बैनुल नहरैन के मतरुक और मुर्दा अयान का अहया और उनके पैरूकार को इस्लाम से फिराना।

4. इस्लामी मुमालिक के शहरों और देहातों के बाज हिस्सों को गैर मुस्लिम अकवाम के हवाले करना मसलन मदीना यहूदियों को, इस्कन्दरिया ईसाईयों को, बुज्द पारसियों को अमारा साबेईयों को, करमान शपाह अली अल्लाहियों को, मूसल यजीदियों को और बोशहर समेत खलीज फ़ारस के कुर्ब व जवार के इलाके हिन्दुओं को सौंपने। इन दो आखेरुज इलाकों में पहले अहले हिन्द को बसाना ज़रूरी है। इसी तरह लेबनान में वाके तराबिलिस द्रोज़ियों, के कारिज उलूवियों के और मुस्तकित ख्वरिज के हवाले करना। यही नहीं बल्कि माद्दी इमदाद, जंगी साज व समान और फौजी और सियासी माहेरनीन के जरिये उन्हें मज़बूत बनाना भी ज़रूरी है ताकि कुछ अर्से बाद यह अकलीयते अहले इस्लाम की आंखों में खटकने लगीं और इस्लाम का पैकर आजुरदा हो जाये और इलाके में बदतरीज इनका असर व नुफूज



मुस्लिम हुकूमतों की तबाही का सबब बन जाये और इस्लाम की तरक्की पजीर में रखना पड़ जाये।

5. हिन्दुस्तान की तरह ईरानी और उस्मानी हुकूमतों में भी छोटी छोटी रियासतों का क़याम अमल में आये और फिर फूट डालो और हुकूमत करो या बेहतर अल्फ़ाज़ में “फूट डालो और मिटा दो” के कानून पर अमल करते हुए उन्हें एक दूसरे से भिड़ा दिया जाये। इस सूरत में एक तरफ़ वह आपस में दस्त व गिरेबां होंगे और दूसरी तरफ़ मरकज़ी हुकूमत से भी उनके तनाज़ेआ का सामान फ़राहम रहेगा।

6. एक सोचे समझे मुनज़ज़म मंसूबे के तहत इस्लामी दुनिया में लोगों के उफ़कार से हम आहंगी रखने वाले मनघडत अक्राएद व मज़ाहिब तब्लीग़ मसलन अम्मा अहलेबैत (अलैहिस्सलाम) से बेइन्तहा अक्रीदत व एहतेराम रखने वाले शियों के लिये हुसैन इलाही मज़हब इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ज़ात से मुतअल्लिक़ शख़िसयत परस्ती, इमाम अली रिज़ा (अलैहिस्सलाम) और इमाम गाएब (हज़रत महदी मऊद अज्जल्लाह तआला फ़रजहुल शरीफ़) के बारे में मुबालिग़ आराई और हशत इमामी फ़रिका की तरवीज। हर हर मज़हब के लिये उसके मुनासिब तरीन मक़ाम की यह सूरत होगी: हुसैनअ० अल्लाह फ़िरका (कर्बला) इमाम जाफ़रे सादिक़अ० की परस्तिश (इस्फ़ेहान) इमाम मेहदी (अलैहिस्सलाम) की परस्तिश (सामरा) और हशत इमामी मज़हब (मशहद)। इन

जाली मज़ाहिब की तब्लीग व तरवीज का दायरा सिर्फ़ शिया मज़हब की तक महदूद नहीं होना चाहिये बल्कि अहले तसन्नून के तमाम फिरकों में भी इस किस्म के मज़ाहिब को तरवीज दिया जाना चाहिये और फिर उनमें इख्तिलाफ़ात को हवा देकर नफ़रत का वह बीज बोना चाहिये कि उनमें का हर फिरका अपने आपको सच्चा मुसलमान और दूसरे को काफ़िर, मुरत्तिद और वाजिबुल क़त्ल समझे।

7. जिना, लवाता, शराब नोशी और जुआ वह अहम उमूर हैं जिन्हें मुसलमानों के दरमियान राएज करने की ज़रूरत है। इन बुरी आदतों को मुसलमानों में फैलाने के लिये इलाके के उन लोगों से ज़्यादा मदद लेनी चाहिये जो माक़बल इस्लाम मज़ाहिब से वाबस्ता हैं और खुश किस्मती से उनकी तादाद कुछ कम नहीं है।

8. अहम और हस्सास ओहदों पर ग़लतकार और नापाक अफ़राद का तक्रूर और उस बात पर तवज्जो कि रियासतों की सरबराही नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत से वाबस्ता रहनी चाहिये ताकि वह इंग्लिस्तान की हुकूमत के लिये काम करें और उनसे अहकामात वुसूल करें। फिर इन बाअसर अफ़राद के ज़रिये हमारे मक़ासिद पोशिदा तौर पर कुव्वत के सहारे रुबअमल आयें अलबत्ता उनके चुनावों में मुस्लिम बादशाहों का हाथ होगा।

9. ग़ैर अरब मुस्लिम मुमालिक में अरबी सक़ाफ़त और ज़बान के फैलाओ की राह रोकना और उसके बजाये संस्कृत, फ़ारसी, कुर्दी, पुश्तो, उर्दू और क़ौमी ज़बानों

को उन सरज़मीनों पर राएज करना ताकि इलाकाई ज़बानें, रिवाज पाकर अरबी ज़बान बोलने वाले क़बाएल में उतर आयें और फ़सीह अरबी ज़बान की जगह इख्तियार करें। इस तरह अहले अरब का कुरआन और सुन्नत की ज़बान से रिश्ता टूट जायेगा।

10. हुकूमती दफ़ातिर में मुशीरों और माहिरों की हैसियत से बर्तानवी अमाल और जासूसों की तैनाती में इज़ाफ़ा, इस तरह इस्लामी मुमालिक के वोज़रा और उमरा के फ़ैसलों में हमारा बेहतर रास्ता यह होगा कि पहले ज़हीन और मोअतमिद गुलामों और क़नीज़ों को तालीम व तरबियत दें और फिर उन्हें हुक्मरानों, शाहज़ादों, वज़ारों, अमीरों और अहम दरबारी औहदों पर फाएज़ बाअसर अफ़राद के हाथों बेच दें। यह गुलाम अपनी सलाहियतों और फ़हम व फ़रास्त की बुनियाद पर उनके नज़दीक अपना मक़ाम पैदा करेंगे और आहिस्ता आहिस्ता उन्हें मुशाविर का मक़ाम हासिल हो जायेगा। इस तरह मुस्लिम रिवाज में उनका एक उमनट नक़श कायम हो जायेगा।

11. मुसलमानों के मुख्तलिफ़ तबकों ख़ास तौर पर डाक्टरों, इंजीनियरों, हुकूमत के माली उमूर से वाबस्ता ओहदेदारों और उन जैसे दीगर रौशन फ़िक्र अफ़राद में मसीहियत की तब्लीग़ व तरवीज, कलिसाओं, खुसूसी स्कूलों और कलिसा से वाबस्ता शिफ़ाखानों की तादाद में इज़ाफ़ा, तब्लीगाती कुतुब व रसाएल की नश्रों इशाअत और मुतवस्सित तबक़े के लोगों में उनकी मुफ़्त तक़सीम, तारीख़े इस्लाम

के मुक़ाबिले पर तारीखे मसीहियत की निगारिश का एहतेमाम, मुसलमानों के उम्माल और जसूसों का तक्रर अलबता उनका दायरा अमले इस्लामी मुमालिक में वाक्रे दैर व कलीसा ही होंगे। इन आलिमनुमा ईसाईयों में बाज़ का कास यह होगा कि वह मुश्तशरिक और इस्लाम शिनास बन कर तारीखी हक़ाएक में तहरीफ़ करें और उन्हें बरअक्स दिखाने की कोशिश करें और फिर दलाएल की फ़र्राहमी और इस्लामी मुमालिक से ज़रूरी इत्तिलाआत हासिल करने के बाद ऐसे मक़ाले तैयार करें जो इस्लाम में नुक़सान और ईसाईयत के फ़ायदे में हों।

12. मुसलमान लड़कों और लड़कियों में खुदसरी और मज़हबे बेज़ारी की तरवजी और उन्हें इस्लाम के उसूल काम मिशनरी स्कूलों, मुखरिबे अखलाक़ और इस्लाम दुश्मनी पर मब्नी किताबों, ऐश व नोश और खुशबाशी का सामान फ़रहाम करने वाले कल्बों और ग़लत बुनियादों पर उस्तवार मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम नौजवानों की दोस्ती के ज़रिये अंजाम पा सकता है। मुस्लि नौजवानों को फांसने के लिये यहूदी और मसीही नौजवानों की शराकत से खुफ़िया अंजुमनों की तासीस।

13. इस्लाम को कमज़ोर करने, मुसलमानों के इत्तिहाद को तोड़ने और उन्हें ज़िन्दगी के मसाएल के बारे में सोचने और तरक्की की राह में आगे बढ़ने से रोकने के लिये इस्लामी मुमालिक में अन्दरूनी और बैरूनी तौर पर शोशिरें पैदा करना और मुसलमानों को एक दूसरे या फिर दीगर अदयान के पैरुकारों से भिडाये रखना। क़ौमी दौलत, माली ज़खाएर और फ़िक्रो फ़हम की कुच्चतों को तबाही से दो

चार करना, मुसलमानों में रुहें अमल और वलवला अंग्रेजी को खत्म करना और उनमें इन्तेशार पैदा करना।

14. इस्लामी मुमालिक के इक्तिसादी निजाम को दरहम बरहम करना जिसमें जराअत और आमदनी के तमाम ज़राए शामिल हैं। इस मक़सद को पूरान करने के लिये बन्दों में शिगाफ़ पैदा करना, दरियायों में रेत की सतह ऊँची करना, लोगों में सुस्ती, सहल अंगारी और तने आसानी को फ़रोग देना, पैदावर और तौलादी उमूर की तरफ़ से लोगों की बेतवज्जेही को तक़वियत देना और अवाम को मंशियत का आदी बनाना ज़रूरी है।

इस बारे में यह वज़हात ज़रूरी है कि मज़कूरा 14 नुकात इन्तेहाई शरह बेअसत के साथ ज़ब्त तहरीर में लाये गये थे और उनके साथ नक़शे, अलामतें और तस्वीरें भी थीं। मैंने यहां इशारतन उनकी निशानदेही की है।

मुख्तसर यह कि नोआबादयाती इलाक़ों की विज़ारत के सेक्रेट्री से उस भरोसे की बुनियाद पर जो उसने मेरी ज़ात से वाबस्ता कर रखी थी और जिसके ज़ेरे असर उसने मुझे इतनी अहम और ख़ुफ़िया किताब पढ़ने को दी थी। मैंने दूसरी बार बसद अहम और ख़ुफ़िया किताब पढ़ने को दी थी। मैंने दूसरी बार बसद एहतेराम इज़हारे तशक्कुर किया और मजीद एक महीने लंदन में रहा। उसके बाद वज़ीर की तरफ़ से मुझे इराक़ जाने का हुक्म मिला। मेरा यह सफ़र सिर्फ़ इस मक़सद के लिये था, कि मैं मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को नये दीन के इज़हार

की दावत पर आमादा करूँ। सेक्रेट्री ने बार बार मुझे यह ताकीद की, कि मैं उसके साथ बड़ी दरायत और होशियारी से पेश आऊँ और मुकद्दमाते उमूर की आमादगी में हरगिज़ हद्दे एतदाल से आगे बुनियाद पर सेक्रेट्री को इस बात की यक्रीन हो चुका था कि मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब काबिले भरोसा और नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत के प्रोग्रामों को रद्दे अमल लाने के लिये मुनासिब तरीन आदमी है।

इसके बाद सेक्रेट्री ने अपनी गुफ्तगू जारी रखते हुए कहा:

“तुम्हें मोहम्मद के साथ बिल्कुल वाज़ेह और दो टूक अल्फ़ाज़ में गुफ्तगू करनी है, क्योंकि हमारे उम्माले इस्फ़ेहान में इससे बड़ी सराहत के साथ पहले ही गुफ्तगू कर चुके हैं और वह उनकी बातों को मान चुका है मगर इस शर्त के साथ कि उसे उस्मानी हुकूमत के मक़ामी आमाल, ओलमा और मुतअसिब लोगों के हाथों आने वाले खतरात से बचा लिया जाये और उसकी हिमायत और तहफ़फ़ुज़ का भरपूर इन्तेज़ाम किया जाये क्योंकि उसकी दावत के ज़ाहिर होते ही हर तरफ़ से उसे ख़त्म करने की कोशिश की जायेगी और ख़तरनाक सूरतों में उस पर हमले किये जायेंगे।”

हुकूमते बर्तानिया ने शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को असलेह से अच्छी तरह लैस करने के बाद ज़रूरत के मौक़े पर उसकी मदद की ताईद की थी और शेख ही की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़जीरतुल अरब में वाक़े नजद के करीब इलाक़े को उसकी हाकिमयत का पहला मक़ाम करार दिया था।

बहरहाल शेख की मवाफ़िकत की खबर सुन कर मेरी खुशी की कोई इन्तेहा न रही और मैंने सेक्रेट्री से सिर्फ़ यह सवाल किया कि मेरी आईन्दा की ज़िम्मेदारियाँ क्या होंगी? मुझे इसके बाद क्या करना होगा और शेख से किस किस्म का काम लेना होगा। नीज़ यह कि मैं अपने फ़राएज़ का कहां से आगाज़ करूँ?

सेक्रेट्री ने जवाब दिया: नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत ने तुम्हारे वज़ाएफ़ को बड़ी वज़ाहात से मुतअय्यन किया है और वह उन उमूर का अलका है जिसे शेख को तदरीजन अंजाम देना है और वह यह है।

1. उसके मज़हब में शमूलियत इख्तियार न करने वाले मुसलमानों की तक़ीर और उनके माल, इज़्जत और आबरू की बर्बादी को रवा समझना, इस ज़िम्न में गिरफ़्तार किये जाने वाले मुखालेफीन को बरदा फ़रोशी की मार्केट में कनीजी व गुलाम की हैसियत से बेचना।

2. बुत परस्ती के बहाने बसूरत इम्कान खाना-ए-काबा का इन्हेदाम और मुसलमानों को फ़रीज़-ए-हज से रोकना और हाजियों के जान व माल की गारतगरी पर क़बाएले अरब को उकसाना।

3. अरब क़बाएल को उस्मानी खलीफ़ा के एहकामात से सरताबी की तरगीब देना और नाखुश लोगों को उनके खिलाफ़ जंग पर आमदा करना। इस काम के लिये एक हथियार बन्द फौज़ की तश्कील। इशराफ़े हिजाज़ के एहतेराम और असर

व नुफूज़ को तोड़ने के लिये उन्हें हर मुम्किन तरीके से परेशानियों में मुब्तिला करना।

4. पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) उनके जानशीनों और कुल्ली तौर पर इस्लाम की बरगुजीदा शख्सियतों की एहानत का सहारा लेकर और इसी तरह शिर्क व मुत परस्ती के आदाल व रुसूम को मिटाने के बहाने मक्का, मदीना और दीगर शहरों में जहां तक हो सके मुसलमानों की ज़ियारतगाहों और मक़बरों की ताराजी।

5. जहां तक मुम्किन हो सके इस्लामी मुमालिक में फ़ितना व फ़साद, शोरिश और बदअनी का फैलाव।

6. कुरान में कमी बेशी पर शाहिद अहादिस व रिवायत की रो से एक जदीद कुरआन की नश्रो आशाअत।

सेक्रेट्री ने अपने इस छः नुकाती प्रोग्राम की तशरीह के बाद जिसे शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अंजाम देना था अपनी गुफ्तगू जारी रखते हुए कहा:

“कहीं इस प्रोग्राम की दुश्चारियां तुम्हें घबराहट में मुब्तिला न कर दें। हम सब का यह फर्ज है कि इस्लाम की तबाही का बीज इस सरज़मीन में बिखेर दें ताकि हमारी आईन्दा आने वाली नस्ल हमारी इस राह पर आगे पढ़े और किसी फ़ैसलाकुन नतीजे पर पहुँच सके। बर्तानिया की हुकूमत हमारी इस सब आजमा दराज़ मुद्दत कोशिशों से वाकिफ़ है। क्या मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि



वसल्लम) ने यको तन्हा अपने इस तबाहकुन इंकेलाब को बरपा नहीं किया। मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब भी (नऊजोबिल्लाह) की तरह हमारे पेशे नज़र इंकेलाब को शोलावर कर सकेगा।”

इस मुलाकात के कुछ दिन बाद मैं वज़ीर और सेक्रेट्री से सफ़र की इजाज़त मांगी और फिर घर वालों और दोस्तों को विदाअ किया। घर से बाहर निकलते हुए मेरे छोटे लड़के ने मुल्लिसमाना लहजे में कहा: “बाबा जल्दी घर आईयेगा।” उसके इस जुमले ने मेरी आंखे छलका दीं और मैं उन अशकों को अपनी बीवी से न छिपा सका। रुखसत के आखरी मरासिम तय करके मैं आमदा-ए-सफ़र हुआ।

हमारा जहाज़ बसरा की सिम्त रवना हुआ। बड़े दुश्वार और सख्त सफ़र के बाद रात के वक़्त मैं बसरा पहुँचा और सीधा अब्दुल रज़ा तुरखान के घर पहुँचा। वह बेचारा सो रहा था। मुझे देखते ही बहुत खुश हुआ और बड़ी गर्मजोशी से मेरा इस्तक्रबाल किया। मैंने रात वहां काटी। दूसरे दिन सुबह मुझे अब्दुल रज़ा से मालूम हुआ कि शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब कुछ अर्से पहले ईरान से बसरा पहुंचा और अभी चन्द दिन पहले किसी नामालूम मक़ाम की तरफ़ खुदा हाफ़ज़ कह कर गया है। अब्दुल रज़ा ने यह भी बताया कि शेख मेरे नाम उसे एक खत भी दे गया है। उस खत में उसने अपना पता नजद लिखा था।

दूसरे दिन मैं अकेला आज़िमे नजद हुआ और बड़ी ज़हमतों के बाद मंज़िले मक़सूद पर पहुँचा और शेख से उसके घर पर मिला। उसके चेहरे पर उससे गुफ़्तगू

मुनासिब नहीं समझी लेकिन जल्द ही मुझे पता चल गया कि उसने दूसरी शादी रचा ली है और जिन्सी रवाबित में अफ़रात से काम ले कर अपनी ताकत खो बैठा है। मैंने इस बारे में उसे नसीहतें कीं और बताया कि अभी हम दोनों को मिल कर बहुत से उमूर अंजाम देने हैं। इस मंज़िल पर हमने यह तय किया कि मैंने अपने आपको इस मंज़िल पर हमने यह तय किया कि मैंने अपने आपको “अब्दुल्लाह” के फर्जी नाम से बतौर गुलाम पेश करूंगा और बताऊंगा कि शेख ने मुझे बरदा फ़रोशों के गिरोहों से खरीदा है चुनाचे शेख ने लोगों से मेरा इसी उन्वान से तआरुफ़ कराया और बताया कि मैं बसरा में उसके काम से ठहरा हुआ था और अब यहां जद्दे पहुँचा हूँ।

नजद के रहने वाले मुझे शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब का गुलाम समझते थे। यहां यह भी बताना जरूरी होगा इस मक़ाम पर शेख की दावत का सामान फ़राहम करने में हमें दो साल का अरसा लगा। 1143 हिजरी के अवासित में मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने जज़ीरतुल अरब में अपने नये दीन के एलान का हतीमी इरादा किया और अपने दोस्तों को इकट्ठा किया जो उसके हमख़्याल थे और उसका साथ देने का वादा कर चुके थे। इब्तिदा में सिर्फ़ अपने ख़ास असहाब और मुरीदों के दायरे में चन्द मुबहम और ग़ैर वाज़ेह अल्फ़ाज़ में बड़े इख़्तियार के साथ उस दावत का आगाज़ हुआ लेकिन कुछ अर्से बाद नजद के हर तबक-ए-ख़्याल के अफ़राद को बड़े पैमाने पर दावतनामे भेजे गये। आहिस्ता आहिस्ता हमने

पैसे के ज़ोर पर शेख के इतराफ़ उसके उफ़कार की हिमायत में एक बड़ा मजमा इकट्ठा किया और उन्हें दुश्मनों से नबरिद आजमा होने की तलक़ीन की। यह बात भी काबिले ज़क्र है कि जज़ीरतुल अरब में शेख की दावत के फैलने के साथ साथ उसके दुश्मनों और मुखालिफ़ों की तादाद भी बढ़ने लगी।

जल्द ही रुकावटों और दुश्मनियों का सिलसिला इस मंज़िल तक पहुँचा के पांच उखड़ने लगे। खास तौर पर नजद में इसके खिलाफ़ बड़ी ख़तरनाक बातें फैली हुई थीं। मैंने बड़ी कातेईयत के साथ उसे जमे रहने की तरगीब दी और उसके इरादे को सुस्त नहीं होने दिया। मैं हमेशा उससे कहता था: “बेअसत के इब्तिदाई दिनों में अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) के दुश्मन तुम्हारे दुश्मनों से बदरजहा ज़्यादा ताक़तवर थे मगर आप उनकी पैदाकर्दा दुश्चारियों और मुसीबतों को बड़े तहम्मूल के साथ झेलते रहे। इन अज़ीयतों, तोहमतों और दुश्नाम तराज़ियों को सहे बग़ैर किसी बड़ी राह पर गामज़न होना और बुलन्दियों को छूना नामुम्किन है। कोई पेशवा और कोई रहबर इन दुश्चारियों से दामन छुड़ा न सका।

इस तरह हमने अपनी जिद्दो जेहद का आगाज़ किया और ख़तरनाक दुश्मनों के मुकाबिल आये। जंगो गुरेज़ इस मबारज़ा में हमारी हिक़मते अमली थी। हमारे कामयाब प्रोग्रामों में से एक प्रोग्राम शेख दुश्मनों को पैसे के ज़रिये तोड़ना था। हमारे यह तंख्वाहदार मुखालेफ़ीन की सफ़ में रह कर हमारे लिये जासूसी करते थे

और उनके इरादों से हमें आगाह रखते थे। हम अपने इन बज़ाहि दुश्मन साथियों की इत्तेलाआत के ज़रिये मुखालिफ़ों की तमाम स्कीमों को नक्श बर आब किया करते थे। मसलन एक बार मैंने सुना कि चन्द आदमियों के एक गिरोह ने शेख को क़त्ल करने का इरादा किया है। मैंने फ़ौरी अक़दामात के ज़रिये इस कत्ल की साज़िश को नाकाम बना दिया और उस गिरोह को इतना रुस्वा किया कि बात शेख के हक़ में तमाम हुई और लोगों ने दहशतगर्द का साथ छोड़ दिया।

आख़िरकार शेख मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मुझे यह इत्मिनान दिलाया कि वह नोआबादयाती इलाक़ों की विज़ारत के छः नुकाती प्रोग्राम को रु बा अमल लाने में अपनी पूरी कोशिश करेगा। ताहम उसने दो नुकात के बारे में खातिर ख्वाह जवाब नहीं दिया। इनमें से एक मक्के पर तसर्रुफ़ हासिल करने के बाद खाना-ए-काबा का इन्हेदाम था। शेख के नज़दीक यह एक बेहूदा और ख़तरनाक काम था, क्योंकि अहले इस्लाम इतनी जल्दी इसके दावे को तस्लीम करने वाले नहीं थे और यही सूरत हज को बुतपरस्ती करार देने की थी और दूसरा अम्र जो उसके बस से बाहर था वह एक जदीद कुरआन की निगारिश थी। वह कुरआन के मुक़ाबिल नहीं आना चाहता था। इसके साथ साथ वह मक्के और इस्तन्बोल के हुक्काम से बहुत ख़ाएफ़ था और कहता था अगर मैंने काबा को बढ़ा दिया और नये कुरआन की निगारिश की तो इस बात का ख़तरा है कि उस्मानी हुक्मत एक बड़ी फौज मेरी सरकूबी के लिये अरबिस्तान भेजे और हम इस पर पूरे न उतर सकें। मैंने इसके

उज़्र को मअकूल समझा और अन्दाज़ा लगाया कि इस दौर की सियासी और मज़हबी फ़िज़ा इस बात की मुत्तकाज़ी नहीं है।

मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब की दावत के बरसों बाद जब छः नुकाती प्रोग्राम कामयाबी पूरी मंज़िलें यह कर चुका तो नोआबादयाती इलाको की विज़ारत ने इरादा किया अब सियासी एतबार से भी जज़ीरतुल अरब में कोई काम होना चाहिये। यही वजह थी कि उसने अपने उम्माल में से मोहम्मद बिन सऊद (सऊदी खानदान का मोरिसे आला जिसने 1147 हिजरी में वहाबी मज़हब इख़्तियार किया और हुकूमते बर्तानिया की तरफ़ से नजद का हुकमरान बना और 1179 हिजरी में मौत से हमकिनार हुआ।) को मोहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब के साथ इश्तेराके अमल पर मामूर किया और इस काम के लिये मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब के पास खुफ़िया तौर पर एक नुमाइन्दा भी भेजा ताकि वह इसके सामने हुकूमत बर्तानिया के मक्रासिद की तौज़ीह करे और “मोहम्मद” (यानि मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब और मोहम्मद बिन सऊद) के इश्तेराके अमल की ज़रूरत पर जोर दे और ताक़ीद करे कि दीनी उमूर के फ़ैसले कुल्ली तौर पर मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब के हाथ में होंगे और सियासी उमूर की निगरानी मोहम्मद बिन सऊद की जिम्मेदारी होगी। नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत का हदफ़ मुसलमानों के जिस्म व जान दोनों पर अपना असर कायम करना था और तारीख़ इस बात की गवाह है कि सियासी हुकूमतों से दीनी हुकूमतें ज़्यादा देरपा ताक़तवर रही हैं।

इस तरह दीनी और सियासी शख्सियतों के इतिहाद व अमल के नतीजे में अंग्रेजों का भला हो रहा था और हर आने वाला दिन इस भलाई में इजाफ़ा कर रहा था। इन दोनों रहबरों ने नजद के करीब “दरईना शहर” को अपना पायाए तख्त बनाया। नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत खुफिया तौर पर जी खोलकर उनकी माली एआनत कर रही थी। मजकूरा विज़ारत की प्लानिंग के तहत हुकूमत को बज़ाहिर कुछ गुलाम खरीदने थे जो दरअस्तल नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत ही के कुछ आदमी थे जिन्हें अरबी ज़बान पर उबूर हासिल था और जो सहराई जंगों के फुनून से भी वाकिफ़ थे। इन तमाम बातों का इन्तेज़ाम भी हमारी हुकूमत ने किया था। मैंने इन अफ़राद के इश्तेराके अमल से जो मैं ग्यारह थे इस इस्लामी हुकूमत की दीनी और सियासी राहें मोअय्यन की। दोनों “मोहम्मद” अपने फ़राएज़ से बखूबी वाकिफ़ थे और उन मोअय्यन की जाने वाली राहों पर नपे तुले क़दमों से आगे बढ़ रहे थे। यहां यह बात भी काबिले ज़िक्र है कि कभी कभार उन दोनों के दरमियान जुज़वी तौर पर कशमकश हो जाया करती थी और वहीं उसी वक़्त फ़ैसला भी हो जाया करता था और नोआबादयाती इलाकों की विज़ारत को इसमें दख़ालत की ज़रूरत पेश नहीं आती थी।

हमने नजद के इतराफ़ की लड़कियों से शादियां की। हमें इस बात का एतराफ़ है कि मुसलमान औरतों में मोहब्बत, खुलूस और शौहरदारी की सिफ़त

वाकई हैरतअंगेज़ और काबिले तारीफ़ है। हम इन रिश्तों के ज़रिये अहले नजद के साथ दोस्ती, हम दिली और ताल्लुकात को और ज़्यादा मज़बूत बना सके।

इस वक़्त हम उनके साथ अपनी दोस्ती की मेराज पर हैं। मरकज़ी हुकूमत तमाम जज़ीरतुल अरब में अपना असर व नुफूज़ कायम करने में कामयाब हो चुकी है। अगर कोई नागवार हादसा रुनुमा न हुआ तो बहुत जल्द इस्लामी सरज़मीनों पर बिखरे हुए यह बीज तनावरदा दरख्तों में तब्दील हो जायेंगे और हमें उनसे अपने मतलूबा फल हासिल होंगे।

---

[[अलहम्दो लिल्लाह किताब (हेमफरे के ऐतेराफात) पूरी टाईप हो गई खुदा वंदे आलम से दुआगौं हूं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन (अ.स.) फाउनडेशन को तरक्की इनायत फरमाए कि जिन्होंने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क) के लिए टाईप कराया। 17.4.2018